

# The Horoscope of Sample

Date	20/05/1980 ( Tuesday )
Time	12:28:51
Place	DELHI
Latitude	028.39.N
Longitude	077.13.E

Zodiac Sign	Taurus
Lunar Sign	Cancer
Nakshatra Sign	Ashlesha
Pada	1

Printed On : September 29,2011

Generated Through Horosoft Professional Edition v4.0

**TRIPLE-S SOFTWARE**

Phone no.-91-11-27940403

E-mail:horosoft@yahoo.com,Website-www.horosoft.net

नाम	Sample	दादा का नाम	
लिंग	पुरुष	पिता का नाम	
जन्म तिथि	20/05/1980	माता का नाम	
दिन वार	मंगलवार	जाति	
जन्म समय	12:28:51 घन्टे	गोत्र	
(समय घटी में)	17:31:47 घटी		
जन्म स्थान	DELHI , INDIA		
अक्षांश	028.39 उत्तर	विक्रमी संवत्	2037
रेखांश	077.13 पूर्व	शक संवत्	1902
समयक्षेत्र	.05.30 घन्टे	मास	ज्येष्ठ
समय संशोधन	00.00 घन्टे	पक्ष	शुक्ल
स्थानीय समय	12:07:43 घन्टे	चन्द्र तिथि	7
स्थानीय तिथि	20/05/1980	सूर्योदय कालीन तिथि	6
सूर्योदय	5: 28: 7 घन्टे	तिथि समाप्ति काल	10:20:9 घन्टे
सूर्यास्त	19: 8: 19 घन्टे	सूर्योदय कालीन नक्षत्र	पुष्य
दिनमान	13: 40: 11 घन्टे	नक्षत्र समाप्ति काल	8:15:28 घन्टे
विषुव काल	4: 0: 4 घन्टे	सूर्योदय कालीन योग	वृद्धि
भयात	10:31:40 घटी	योग समाप्ति काल	16:3:17 घन्टे
भभोग	65:4:42 घटी	सूर्योदय कालीन करण	तैत्तिल
ऋतु	ग्रीष्म	करण समाप्ति काल	10:20:9 घन्टे
भोग्य दशा	बुध 14व 2मा 15दि		

## अवकहड़ा चक्र

## घात चक्र

लग्न	सिंह
लग्नेश	सूर्य
राशि	कर्क
राशीश	चन्द्र
नक्षत्र	अश्लेषा
नक्षत्र स्वामी	बुध
चरण	1
पाया (चंद्र-नक्षत्र)	लोहा-चांदी
योग	वृद्धि
करण	गर
गण	राक्षस
योनि	बिलाव
नाडी	अन्त्य
वर्ण	ब्राह्मण
वश्य	जलचर
वर्ग	श्वान
नामाक्षर	डी
युंजा	मध्य
हंसक तत्व	जल

मास	पौष
तिथि	2- 7- 12
दिन	बुधवार
नक्षत्र	अनुराधा
योग	व्याघात
करण	नाग
प्रहर	1
वर्ग	मेड़ा
चंद्रमा	सिंह

## शुभ दिन, वार, रत्न

शुभ दिन	रविवार
शुभांक	1
शुभ रंग	गहरा लाल
शुभ रत्न	मूंगा
रत्न धातु	तांबा
रत्न धारक अंगुली	अनामिका (अंगूठे से तीसरी)

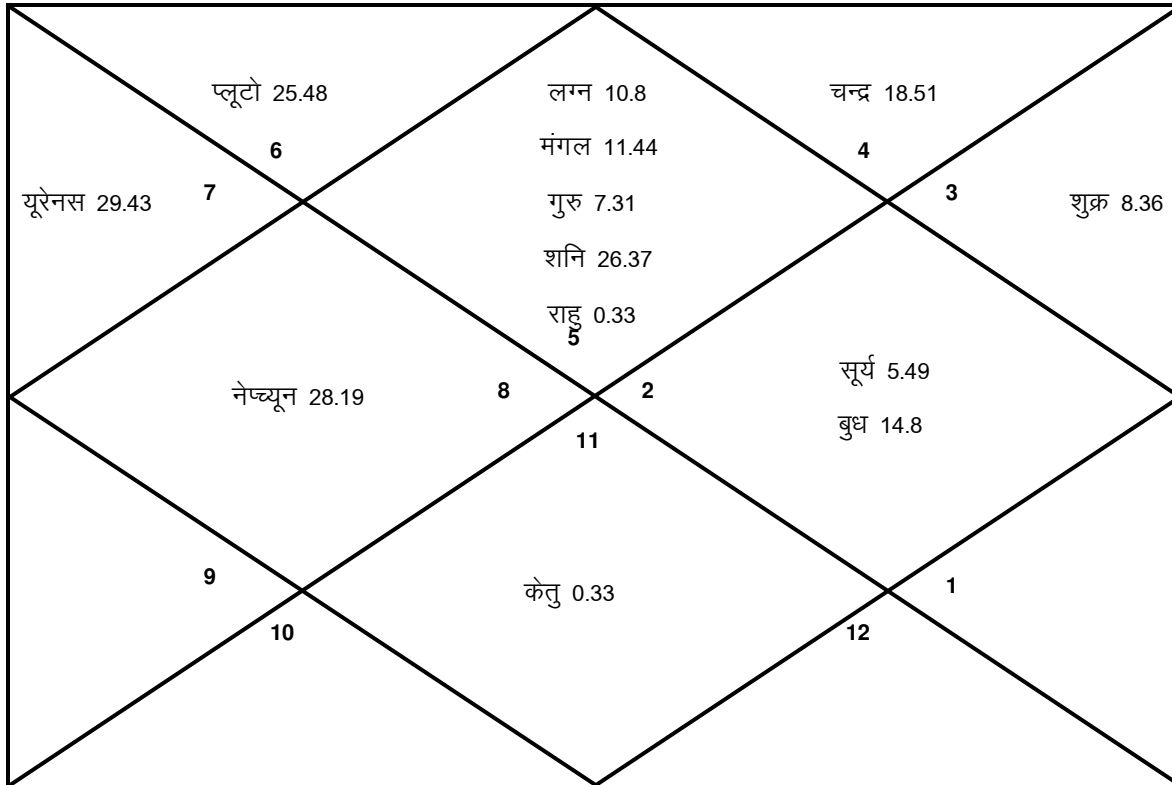
## जन्म के समय ग्रहों की स्थिति

ग्रह	राशि	अंश	स्थिति	राशीश	नक्षत्र	चरण	स्वामी	उपस्वामी
लग्न	सिंह	10 08 23		सूर्य	मघा	4	केतु	शनि
सूर्य	वृष	05 49 47	शत्रु	शुक्र	कृतिका	3	सूर्य	बुध
चन्द्र	कर्क	18 51 25	स्वग्रही	चन्द्र	अश्लेषा	1	बुध	केतु
मंगल	सिंह	11 44 21	मित्र	सूर्य	मघा	4	केतु	बुध
बुध	वृष	14 08 07	मित्र	शुक्र	रोहिणी	2	चन्द्र	गुरु
गुरु	सिंह	07 31 01	मित्र	सूर्य	मघा	3	केतु	राहु
शुक्र	मिथुन	08 36 31	मित्र	बुध	आरद्रा	1	राहु	राहु
शनि (व)	सिंह	26 37 03	शत्रु	सूर्य	पू फाल्गुनी	4	शुक्र	केतु
राहु (व)	सिंह	00 33 03	शत्रु	सूर्य	मघा	1	केतु	केतु
केतु (व)	कुम्भ	00 33 03	शत्रु	शनि	धनिष्ठा	3	मंगल	बुध
यूरेनस (व)	तुला	29 43 31		शुक्र	विशाखा	3	गुरु	चन्द्र
नेपच्यून (व)	वृश्चिक	28 19 04		मंगल	ज्येष्ठा	4	बुध	शनि
प्लूटो (व)	कन्या	25 48 05		बुध	चित्रा	1	मंगल	राहु

चित्रपक्षीय अयनांश 23: 34: 59अंश

राहु व केतु के स्पष्ट अंश हैं

## जन्म लग्न



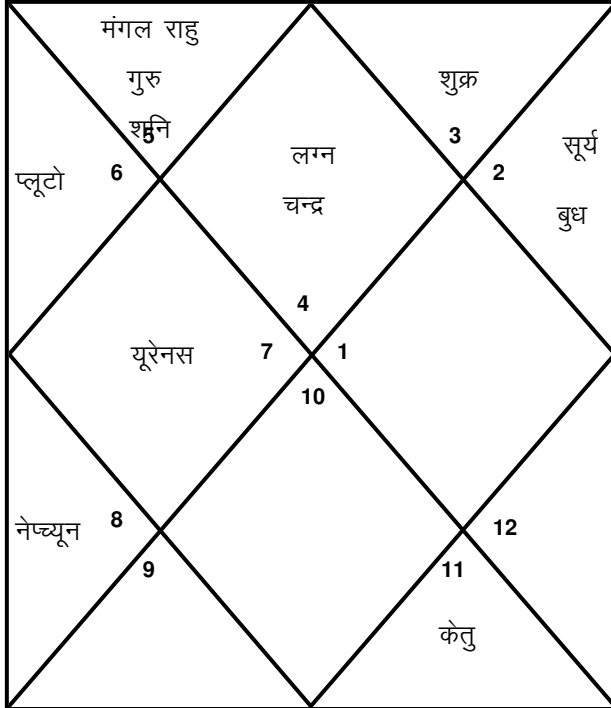
## कारकत्व एवं अवस्थाएं

ग्रह	कारक		अवस्थाएं	
	चर कारक	स्थिर कारक	बालादि	शयानादि
सूर्य	दारा	पिता	मृत	आगमन
चन्द्र	अमात्य	माता	कुमार	आगमन
मंगल	मातृ	पराक्रम	कुमार	उपवेशन
बुध	भ्रातृ	बुद्धि	युवा	प्रकाश
गुरु	ज्ञाति	धन	कुमार	आगमन
शुक्र	पुत्र	कलत्र	कुमार	आगमन
शनि	आत्म	आयुष्य	मृत	भोजन
राहु		भ्रम	बाल	प्रकाश
केतु		मोक्ष	बाल	आगमन

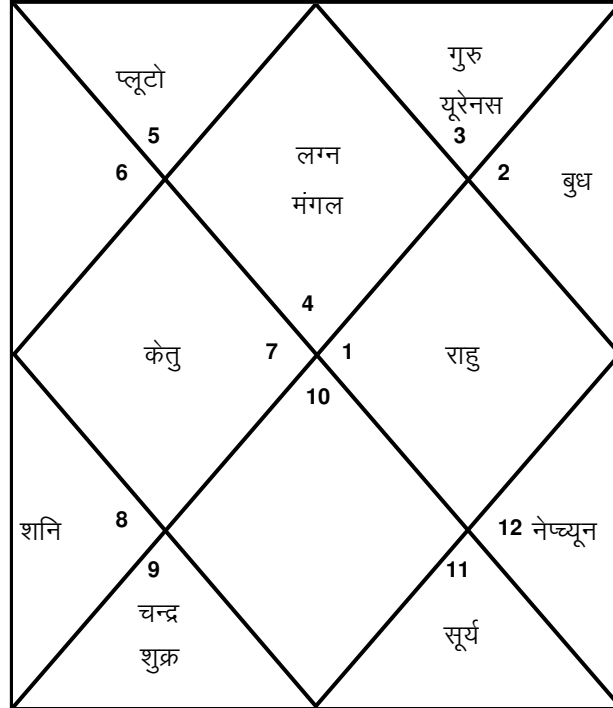
## तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यरि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
अश्लेषा	मघा	पू फाल्गुनी	उ फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाती	विशाखा	अनुराधा
ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू भाद्रपद	उ भाद्रपद
रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आरद्रा	पुनर्वसु	पुष्य

## चन्द्र लग्न



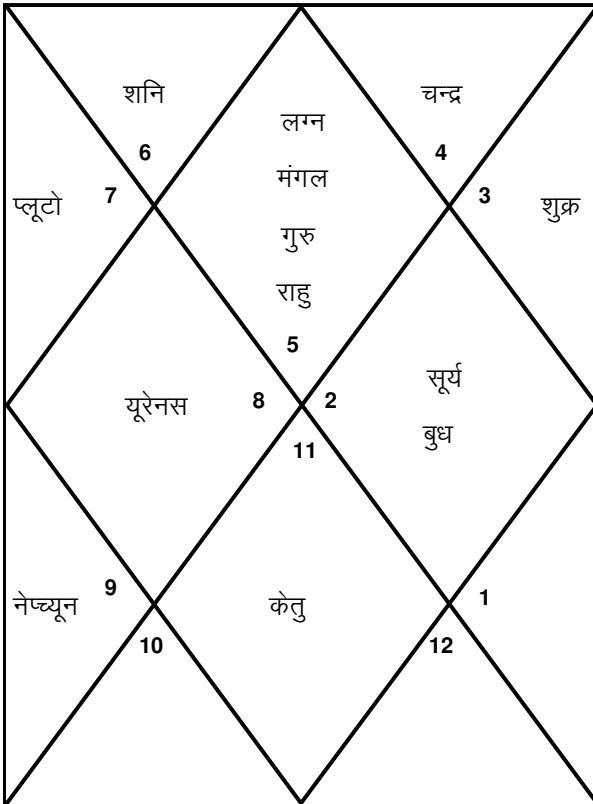
## नवमांश



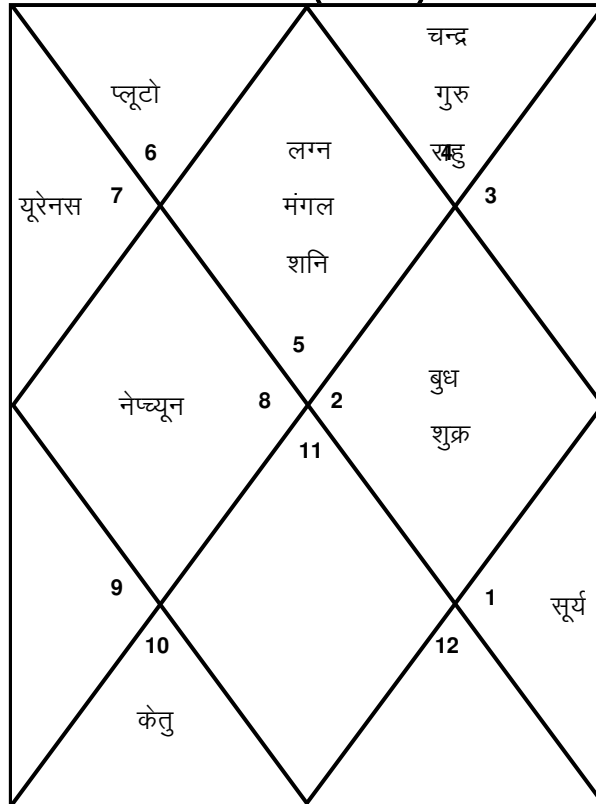
## भाव एवं निरयण भाव (कस्प)

भाव	आरम्भ		मध्य		भाव	राशि	अंश
1	कर्क	24:52'	सिंह	10:08'	1	सिंह	10: 08'24"
2	सिंह	24:52'	कन्या	09:36'	2	कन्या	06: 26'11"
3	कन्या	24:19'	तुला	09:03'	3	तुला	06: 24'19"
4	तुला	23:47'	वृश्चिक	08:31'	4	वृश्चिक	08: 31'34"
5	वृश्चिक	23:47'	धनु	09:03'	5	धनु	10: 36'51"
6	धनु	24:19'	मकर	09:36'	6	मकर	11: 20'01"
7	मकर	24:52'	कुम्भ	10:08'	7	कुम्भ	10: 08'24"
8	कुम्भ	24:52'	मीन	09:36'	8	मीन	06: 26'11"
9	मीन	24:19'	मेष	09:03'	9	मेष	06: 24'19"
10	मेष	23:47'	वृष	08:31'	10	वृष	08: 31'34"
11	वृष	23:47'	मिथुन	09:03'	11	मिथुन	10: 36'51"
12	मिथुन	24:19'	कर्क	09:36'	12	कर्क	11: 20'01"

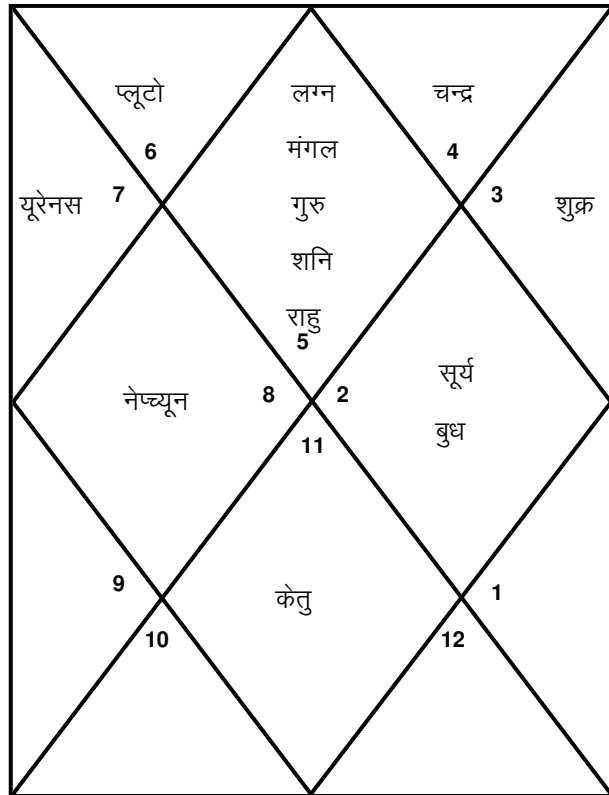
### भाव "चलित"



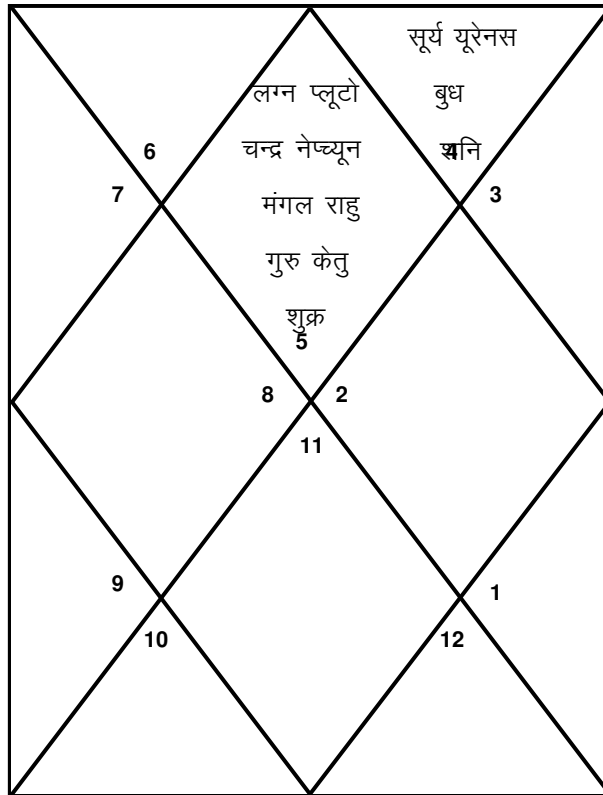
### निरयण भाव (कस्प)



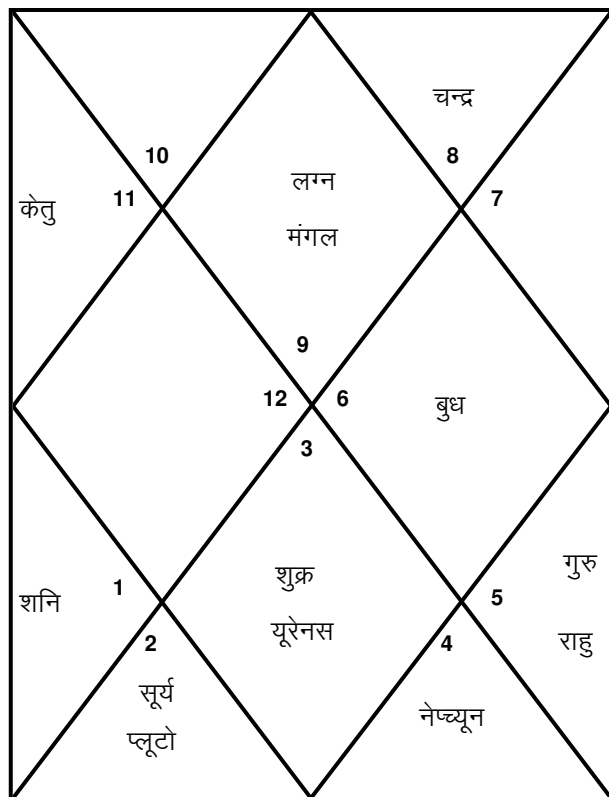
जन्म लग्न



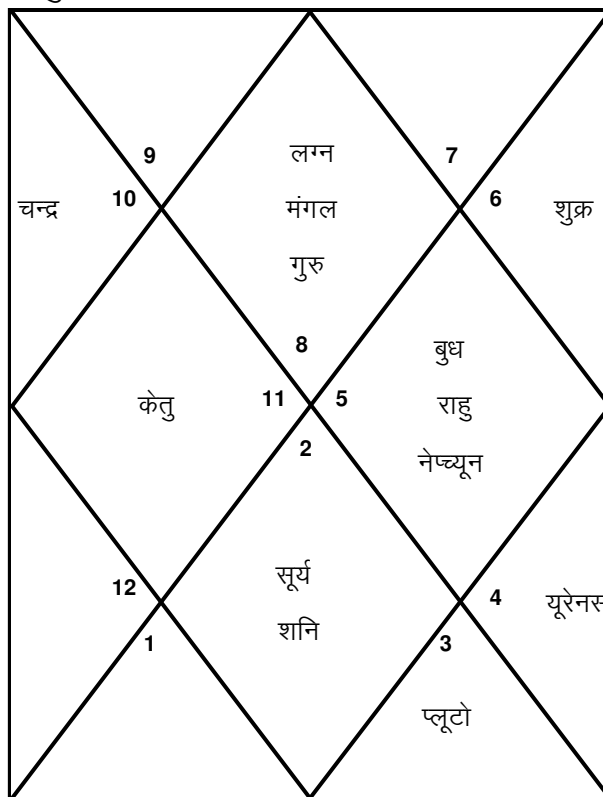
होरा "सम्पत्ति के लिए"



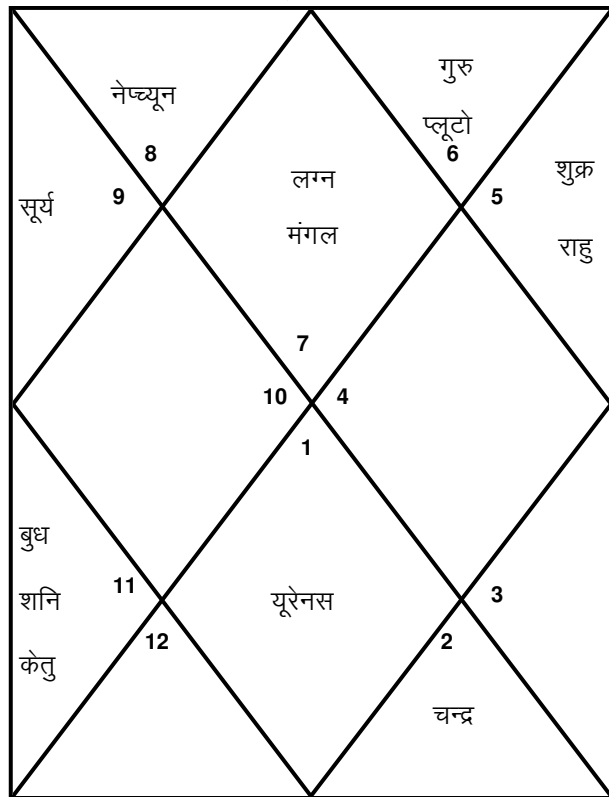
द्रेष्काण "भाई व बहनों के लिए"



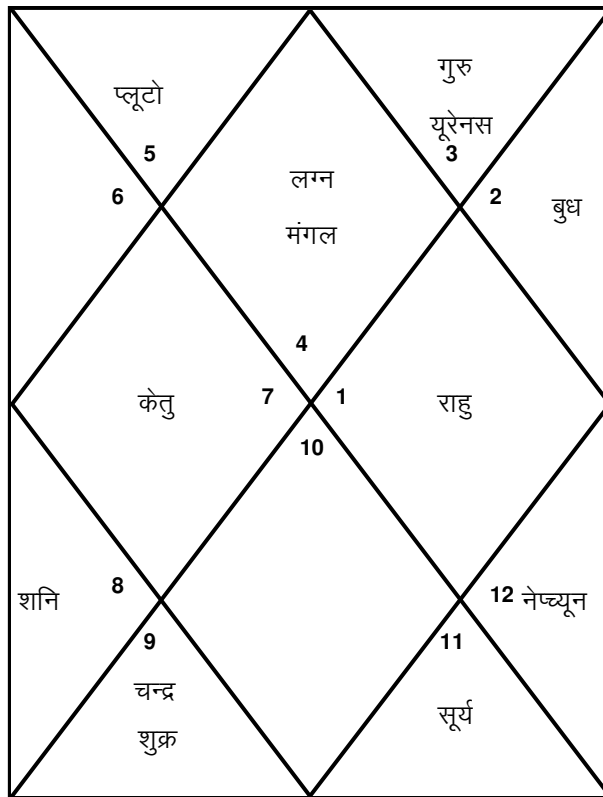
चतुर्थांश "भाग्य के लिए"



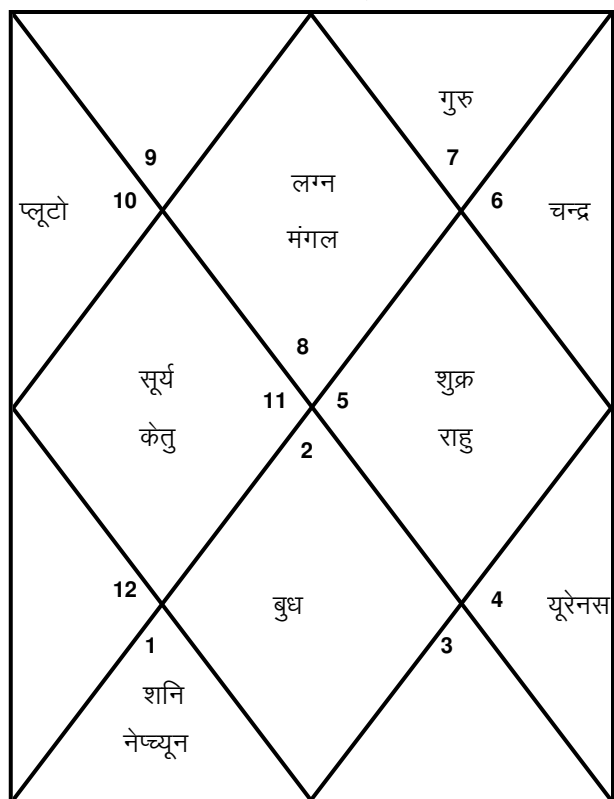
सप्तमांश "बच्चों के लिए"



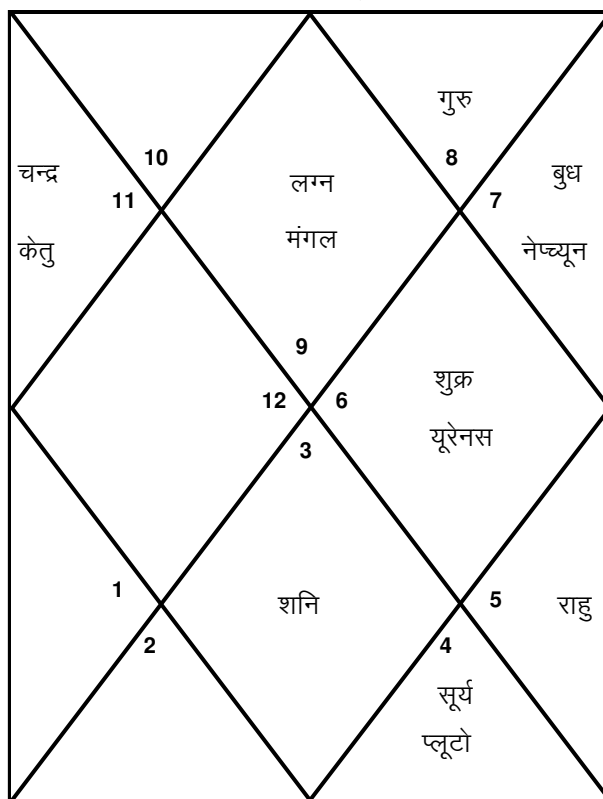
नवमांश



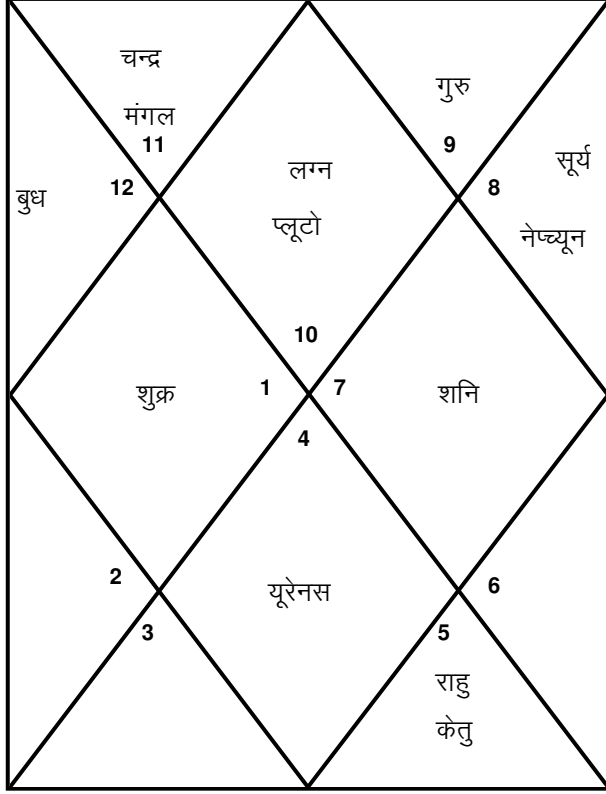
दशमांश "जीवन यापन के लिए"



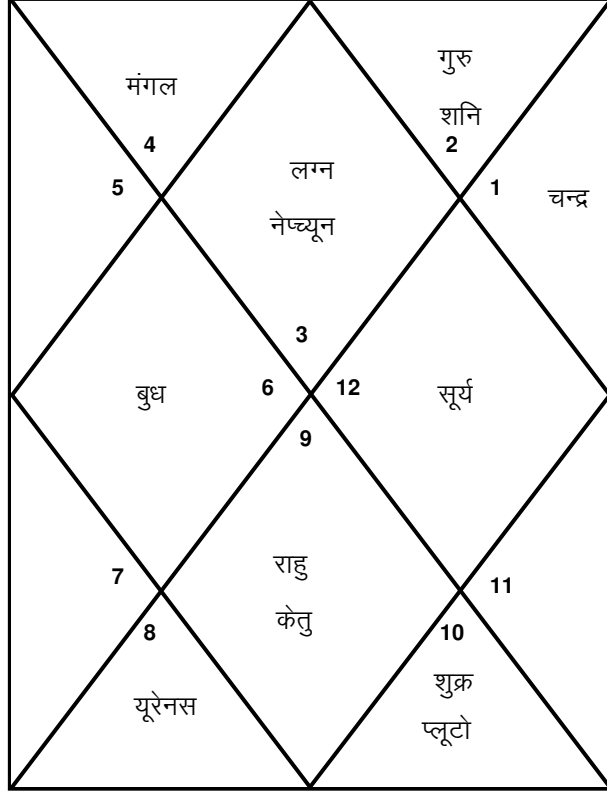
द्वादशांश "माता पिता के लिए"



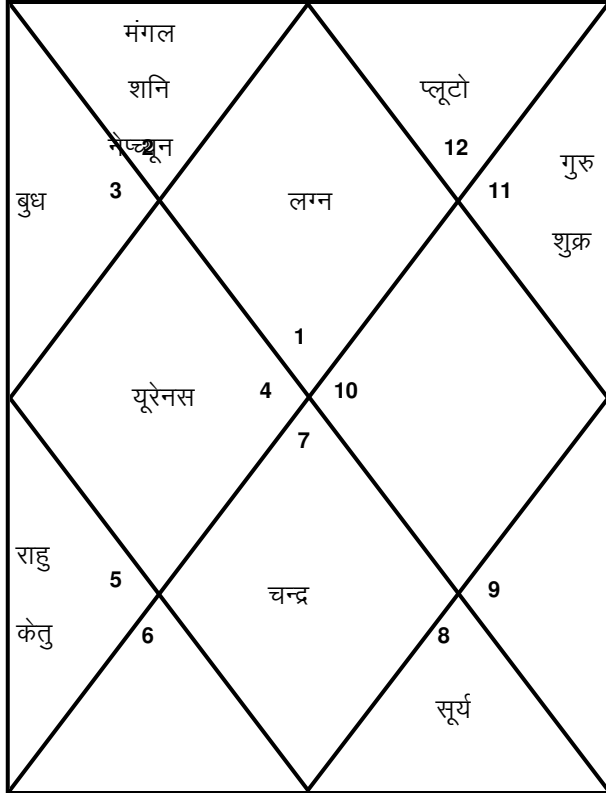
षोडशांश "वाहन के लिए"



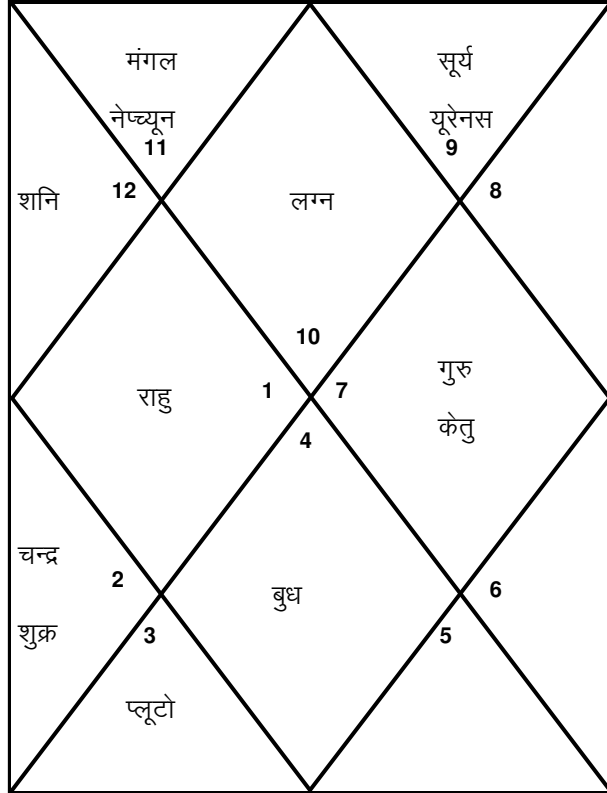
विशांश "धार्मिक प्रवृत्ति के लिए"



चतुर्विंशांश "विद्या के लिए"

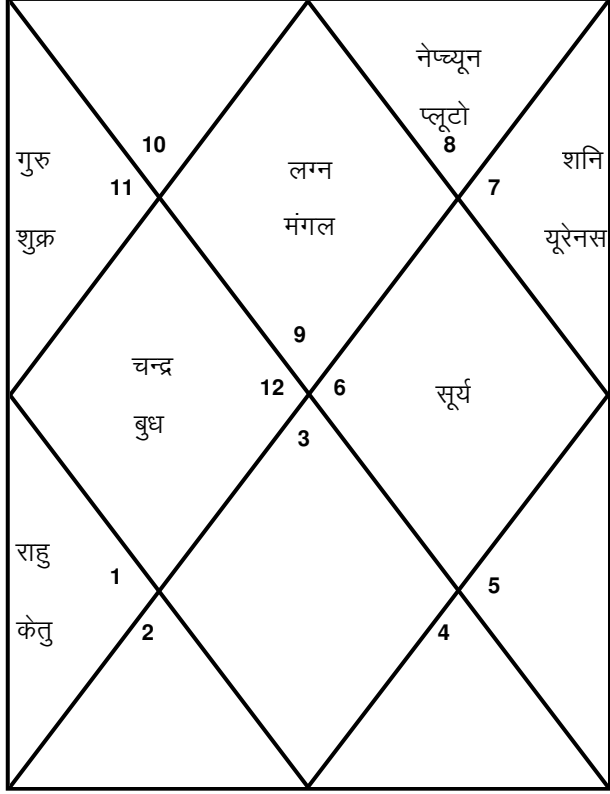


सप्तविंशांश "बलाबल के लिए"

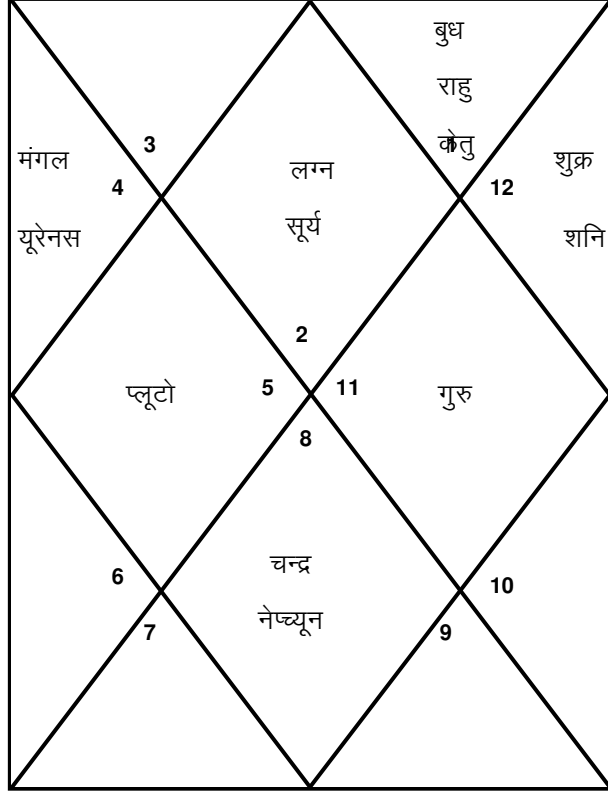




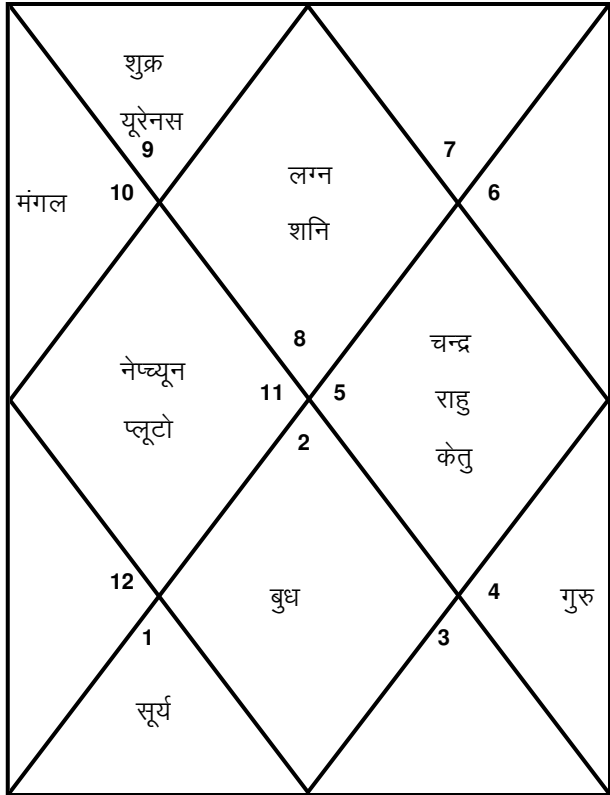
त्रिंशांशा "अरिष्ट के लिए"



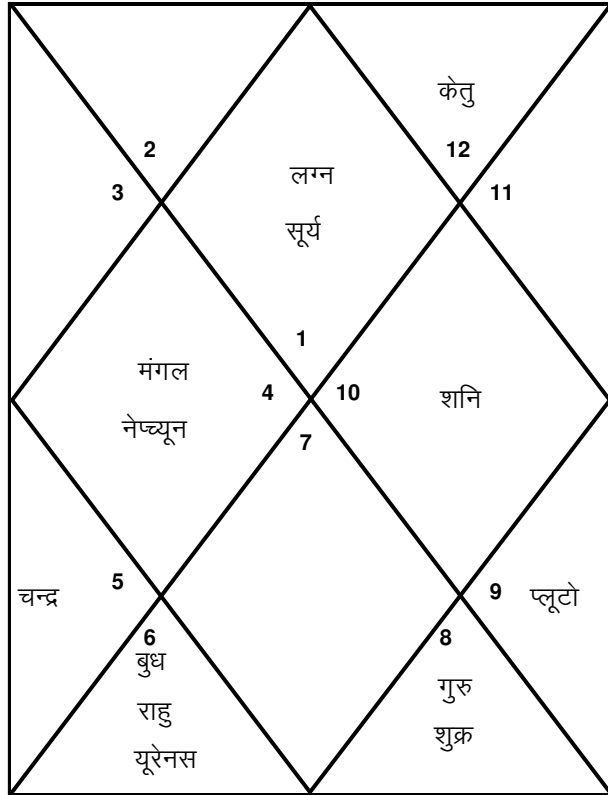
खवेदांश "शुभ के लिए"



अक्षवेदांश "सर्वास्थिति के लिए"



षष्ट्यंश "सर्वास्थिति के लिए"



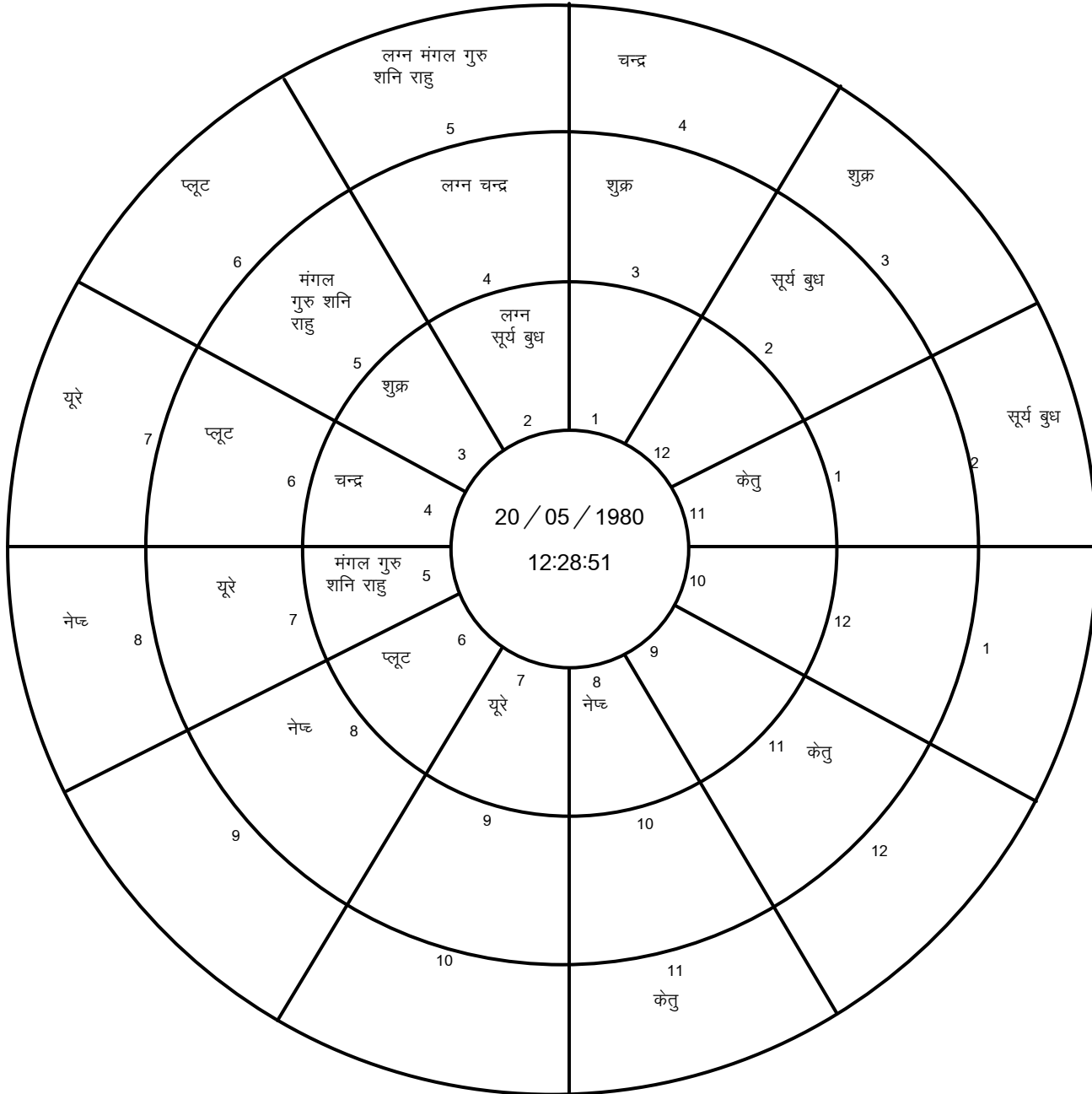
## षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
जन्म लग्न	सिंह	वृष	कर्क	सिंह	वृष	सिंह	मिथुन	सिंह	सिंह	कुम्भ
होरा	सिंह	कर्क	सिंह	सिंह	कर्क	सिंह	सिंह	कर्क	सिंह	सिंह
द्रेष्काण	धनु	वृष	वृश्चिक	धनु	कन्या	सिंह	मिथुन	मेष	सिंह	कुम्भ
चतुर्थांश	वृश्चिक	वृष	मकर	वृश्चिक	सिंह	वृश्चिक	कन्या	वृष	सिंह	कुम्भ
सप्तमांश	तुला	धनु	वृष	तुला	कुम्भ	कन्या	सिंह	कुम्भ	सिंह	कुम्भ
नवमांश	कर्क	कुम्भ	धनु	कर्क	वृष	मिथुन	धनु	वृश्चिक	मेष	तुला
दशमांश	वृश्चिक	कुम्भ	कन्या	वृश्चिक	वृष	तुला	सिंह	मेष	सिंह	कुम्भ
द्वादशांश	धनु	कर्क	कुम्भ	धनु	तुला	वृश्चिक	कन्या	मिथुन	सिंह	कुम्भ
षोडशांश	मकर	वृश्चिक	कुम्भ	कुम्भ	मीन	धनु	मेष	तुला	सिंह	सिंह
विशांश	मिथुन	मीन	मेष	कर्क	कन्या	वृष	मकर	वृष	धनु	धनु
चतुर्विंशांश	मेष	वृश्चिक	तुला	वृष	मिथुन	कुम्भ	कुम्भ	वृष	सिंह	सिंह
सप्तविंशांश	मकर	धनु	वृष	कुम्भ	कर्क	तुला	वृष	मीन	मेष	तुला
त्रिंशांश	धनु	कन्या	मीन	धनु	मीन	कुम्भ	कुम्भ	तुला	मेष	मेष
खवेदांश	वृष	वृष	वृश्चिक	कर्क	मेष	कुम्भ	मीन	मीन	मेष	मेष
अक्षवेदांश	वृश्चिक	मेष	सिंह	मकर	वृष	कर्क	धनु	वृश्चिक	सिंह	सिंह
षष्ट्यंश	मेष	मेष	सिंह	कर्क	कन्या	वृश्चिक	वृश्चिक	मकर	कन्या	मीन

## विंशोपक बल

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	11.45	16.80	15.20	17.45	14.65	16.45	8.95	8.50	7.00
सप्तवर्ग	12.70	16.55	14.05	17.05	13.70	16.43	11.73	8.88	6.63
दशवर्ग	14.18	16.95	15.30	17.38	12.93	15.00	13.93	10.50	7.00
षोडशवर्ग	13.85	16.78	15.30	17.20	13.10	15.75	12.85	9.68	7.70

# सुदर्शन चक्र



## नैसर्गिक

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	..	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चन्द्र	मित्र	..	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	..	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	..	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	..	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	..	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	..	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	..	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	..

## तात्कालिक

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	..	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र
चन्द्र	मित्र	..	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	..	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु
बुध	शत्रु	मित्र	मित्र	..	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र
गुरु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	..	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु
शुक्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	..	मित्र	मित्र	शत्रु
शनि	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	..	शत्रु	शत्रु
राहु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	..	शत्रु
केतु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	..

## पंचधा

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	..	अतिमित्र	अतिमित्र	शत्रु	अतिमित्र	सम	सम	सम	सम
चन्द्र	अतिमित्र	..	मित्र	अतिमित्र	मित्र	मित्र	मित्र	सम	अतिशत्रु
मंगल	अतिमित्र	अतिमित्र	..	सम	सम	मित्र	शत्रु	अतिशत्रु	सम
बुध	सम	सम	मित्र	..	मित्र	अतिमित्र	मित्र	मित्र	मित्र
गुरु	अतिमित्र	अतिमित्र	सम	सम	..	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु
शुक्र	सम	सम	मित्र	अतिमित्र	मित्र	..	अतिमित्र	अतिमित्र	सम
शनि	सम	सम	अतिशत्रु	अतिमित्र	शत्रु	अतिमित्र	..	सम	अतिशत्रु
राहु	सम	सम	अतिशत्रु	मित्र	शत्रु	अतिमित्र	सम	..	अतिशत्रु
केतु	सम	अतिशत्रु	सम	मित्र	शत्रु	सम	अतिशत्रु	अतिशत्रु	..

# प्रस्ताराष्टक वर्ग

लग्न											
	सि	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी	मे	वृ	मि
शनि	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	0
गुरु	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	0
मंगल	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1	0
सूर्य	1	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0
शुक्र	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1
बुध	1	0	1	0	1	0	1	1	0	1	0
चन्द्र	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	0
कुल	6	3	6	2	3	5	4	2	4	6	2

03.45  
07.30  
11.15  
15.00  
18.45  
22.30  
26.15  
30.00

सूर्य											
	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी
शनि	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1
गुरु	0	1	0	0	0	0	0	1	1	0	0
मंगल	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	0
शुक्र	1	0	0	0	0	0	1	1	0	0	0
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1
चन्द्र	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0
लग्न	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0
कुल	6	5	2	3	4	2	5	4	4	4	5

48

चन्द्र											
	क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी	मे	वृ
शनि	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0
गुरु	1	1	0	0	1	0	0	1	1	0	1
मंगल	0	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1
सूर्य	1	0	0	1	1	1	0	1	0	0	0
शुक्र	0	1	1	1	0	1	0	1	1	0	0
बुध	1	1	1	0	1	1	0	1	1	0	0
चन्द्र	1	0	1	0	0	1	1	0	0	1	0
लग्न	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1
कुल	4	3	4	5	3	6	4	4	4	3	5

03.45  
07.30  
11.15  
15.00  
18.45  
22.30  
26.15  
30.00

मंगल											
	सि	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी	मे	वृ	मि
शनि	1	0	0	1	0	0	1	1	1	1	0
गुरु	0	0	0	0	0	0	1	0	0	0	1
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	0
सूर्य	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0	0
शुक्र	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0
बुध	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0
चन्द्र	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	0
लग्न	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1	0
कुल	3	4	3	3	1	3	3	4	2	6	4

39

बुध											
	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी
शनि	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1
गुरु	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0
मंगल	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1
सूर्य	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1
शुक्र	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1
चन्द्र	1	0	0	1	0	1	0	1	0	1	0
लग्न	1	1	0	1	1	0	1	0	1	0	0
कुल	5	5	3	5	6	4	3	1	5	5	6

03.45  
07.30  
11.15  
15.00  
18.45  
22.30  
26.15  
30.00

गुरु											
	सि	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी	मे	वृ	मि
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	0
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	0
सूर्य	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1
शुक्र	0	0	1	1	0	0	1	1	1	0	0
बुध	1	1	1	0	0	1	1	1	0	1	0
चन्द्र	1	0	0	1	0	1	0	1	0	0	0
लग्न	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	0
कुल	6	4	4	6	3	5	6	6	2	6	5

56

शुक्र											
	मि	क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी	मे
शनि	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1
गुरु	1	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1
मंगल	1	1	0	0	1	0	1	1	0	0	1
सूर्य	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	0
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	0
बुध	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0
चन्द्र	1	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0
लग्न	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1	0
कुल	6	4	3	4	6	3	5	3	2	7	6

03.45  
07.30  
11.15  
15.00  
18.45  
22.30  
26.15  
30.00

शनि											
	सि	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी	मे	वृ	मि
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	0
गुरु	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1
मंगल	0	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1
सूर्य	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	0
शुक्र	0	0	0	1	0	0	0	0	1	1	0
बुध	0	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0
चन्द्र	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	0
लग्न	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	0
कुल	2	1	4	3	6	5	2	2	2	5	5

39

## अष्टकवर्ग

	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	कुल
सूर्य	5	6	5	2	3	4	2	5	4	4	4	4	48
चन्द्र	3	5	4	4	3	4	5	3	6	4	4	4	49
मंगल	2	6	4	3	3	4	3	3	1	3	3	4	39
बुध	6	5	5	3	5	6	4	3	1	5	5	6	54
गुरु	2	6	5	3	6	4	4	6	3	5	6	6	56
शुक्र	6	3	6	4	3	4	6	3	5	3	2	7	52
शनि	2	5	5	2	2	1	4	3	6	5	2	2	39
लग्न	4	6	6	2	6	3	6	2	3	5	4	2	49
कुल	30	42	40	23	31	30	34	28	29	34	30	35	386
कुल लग्न के बिना	26	36	34	21	25	27	28	26	26	29	26	33	337

## शोधित अष्टकवर्ग

	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	कुल
सूर्य	2	2	3	0	0	0	0	3	1	0	2	2	15
चन्द्र	0	1	0	1	0	0	1	0	3	0	0	1	7
मंगल	1	3	1	0	2	1	0	0	0	0	0	1	9
बुध	5	0	1	0	4	1	0	0	0	0	1	3	15
गुरु	0	2	1	0	4	0	0	3	1	1	2	3	17
शुक्र	3	0	4	1	0	1	4	0	2	0	0	4	19
शनि	0	4	3	0	0	0	2	1	4	4	0	0	18
लग्न	1	3	2	0	3	0	2	0	0	2	0	0	13

## एकादिपत्य शोधन

	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	कुल
सूर्य	0	2	3	0	0	0	0	1	0	0	2	1	9
चन्द्र	0	1	0	1	0	0	0	0	2	0	0	0	4
मंगल	1	3	1	0	2	0	0	0	0	0	0	1	8
बुध	5	0	1	0	4	0	0	0	0	0	1	3	14
गुरु	0	2	1	0	4	0	0	3	0	0	1	2	13
शुक्र	3	0	4	1	0	0	4	0	0	0	0	2	14
शनि	0	4	3	0	0	0	0	1	4	4	0	0	16
लग्न	1	3	2	0	3	0	0	0	0	2	0	0	11

## पिंड

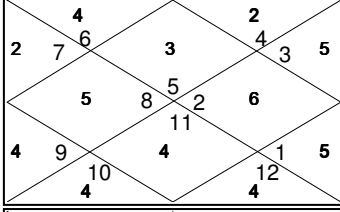
	लग्न	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	107	137	60	82	135	164	156	142
ग्रह पिंड	113	41	15	83	99	119	33	61
शोध्य पिंड	220	178	75	165	234	283	189	203

## अष्टकवर्ग चक्र

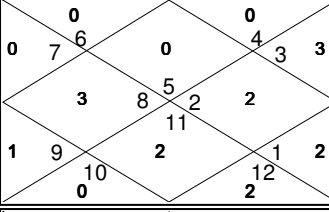
## सूर्य

राशि पिंड 137  
ग्रह पिंड 41  
शोध्य पिंड 178

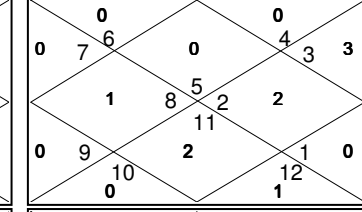
## शोधन से पूर्व



## त्रिकोण शोधन

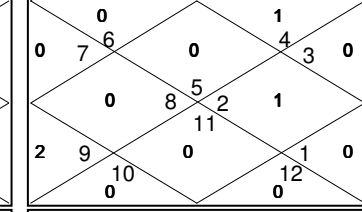
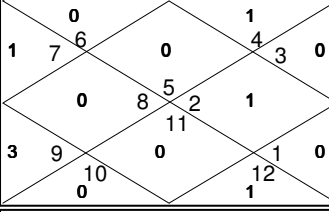
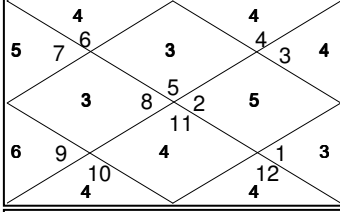


## एकादिपत्य शोधन



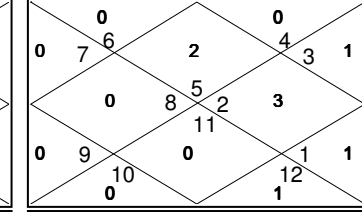
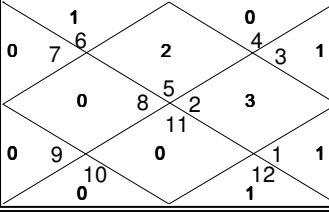
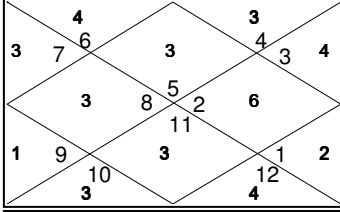
## चन्द्र

राशि पिंड 60  
ग्रह पिंड 15  
शोध्य पिंड 75



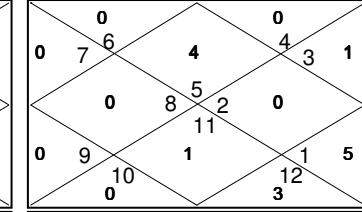
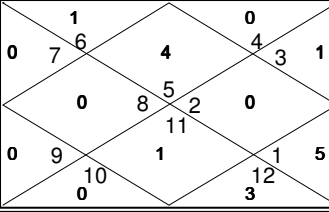
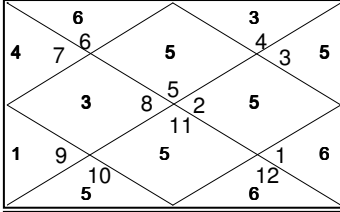
## मंगल

राशि पिंड 82  
ग्रह पिंड 83  
शोध्य पिंड 165



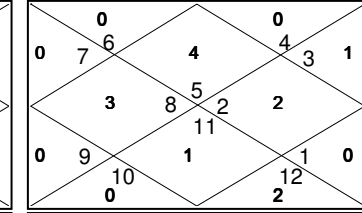
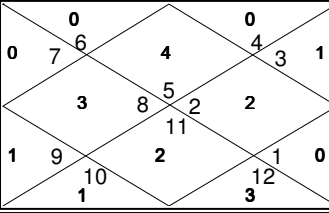
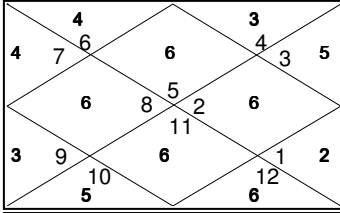
## बुध

राशि पिंड 135  
ग्रह पिंड 99  
शोध्य पिंड 234



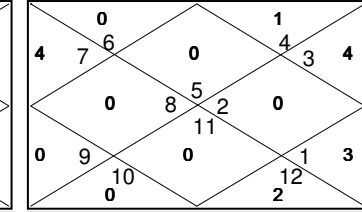
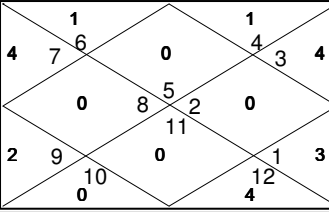
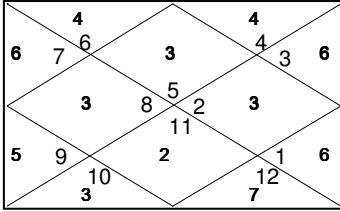
## गुरु

राशि पिंड 164  
ग्रह पिंड 119  
शोध्य पिंड 283



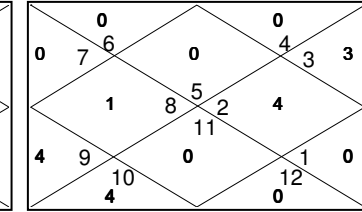
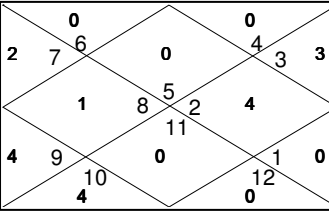
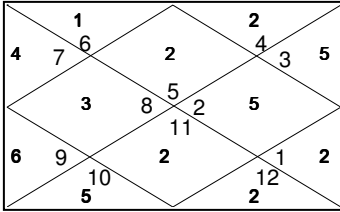
## शुक्र

राशि पिंड 156  
ग्रह पिंड 33  
शोध्य पिंड 189



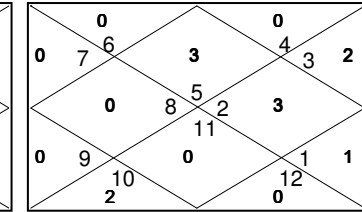
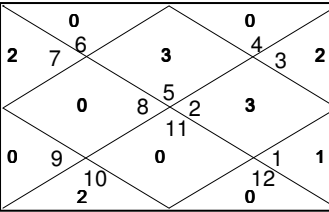
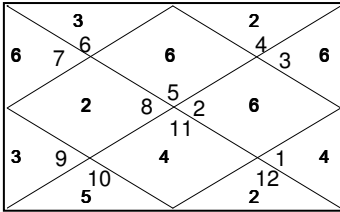
## शनि

राशि पिंड 142  
ग्रह पिंड 61  
शोध्य पिंड 203



## लग्न

राशि पिंड 107  
ग्रह पिंड 113  
शोध्य पिंड 220



## षडबल

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	51.39	34.71	4.58	19.71	49.16	36.13	42.21
सप्तवर्ग बल	93.75	127.50	105.00	135.00	93.75	120.00	93.75
ओजयुग्मक बल	15.00	15.00	15.00	0.00	30.00	0.00	15.00
केन्द्र बल	60.00	15.00	60.00	60.00	60.00	30.00	60.00
द्रेष्काण बल	15.00	0.00	0.00	15.00	15.00	0.00	0.00
1कुल स्थान बल	235.14	192.21	184.58	229.71	247.91	186.13	210.96
2कुल दिग्बल बल	59.10	23.44	28.93	31.33	59.13	10.03	5.49
नतोनत बल	59.36	0.64	0.64	60.00	59.36	59.36	0.64
पक्ष बल	35.66	71.32	35.66	35.66	24.34	24.34	35.66
त्रिभाग बल	60.00	0.00	0.00	0.00	60.00	0.00	0.00
अब्द बल	0.00	0.00	15.00	0.00	0.00	0.00	0.00
मास बल	0.00	0.00	0.00	0.00	30.00	0.00	0.00
वार बल	0.00	0.00	45.00	0.00	0.00	0.00	0.00
होरा बल	0.00	0.00	60.00	0.00	0.00	0.00	0.00
अयन बल	111.20	8.29	42.13	57.40	44.12	59.84	25.07
युद्ध बल	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
3कुल काल बल	266.21	80.24	198.43	153.06	217.82	143.54	61.37
4कुल चेष्टा बल	0.00	0.00	39.97	12.09	32.98	49.73	37.26
5कुल नैसर्गिक बल	60.00	51.43	17.14	25.70	34.28	42.85	8.57
6कुल द्रग्बल	-1.00	-10.66	-16.63	-6.43	-17.02	-14.24	-11.06
कुल षडबल	619.45	336.68	452.41	445.47	575.10	418.04	312.60
षडबल रुपा में	10.32	5.61	7.54	7.42	9.59	6.97	5.21
न्यूनतम आवश्यकता	5.00	6.00	5.00	7.00	6.50	5.50	5.00
अनुपात	2.06	0.94	1.51	1.06	1.47	1.27	1.04
संबंधित पद	1	6	3	4	2	5	7
इष्ट फल	50.59	29.07	13.53	15.44	40.27	42.39	39.66
कष्ट फल	9.37	30.03	33.32	43.93	17.11	15.66	20.11

## भावबल

	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII
भावाधिपति	619.45	445.47	418.04	452.41	575.10	312.60	312.60	575.10	452.41	418.04	445.47	336.68
भावदिग्बल	30.00	50.00	40.00	30.00	20.00	20.00	0.00	20.00	50.00	60.00	40.00	20.00
भावदृष्टि बल	34.43	40.47	31.22	59.00	91.26	46.12	71.16	33.61	42.92	5.62	-14.18	8.16
कुल भावबल	683.88	535.94	489.25	541.42	686.36	378.72	383.76	628.71	545.34	483.66	471.28	364.84
भाव बल रुपा में	11.40	8.93	8.15	9.02	11.44	6.31	6.40	10.48	9.09	8.06	7.85	6.08
संबंधित पद	2	6	7	5	1	11	10	3	4	8	9	12



## मिलान तालिका

यदि आप अविवाहित हैं तो निम्न सूचना आपके लिये उपयोगी होगी। अपने भावी जीवन साथी से गुण दोष मिलान के लिए उसका नक्षत्र व चरण निम्न तालिका से मिलाइए।

नक्षत्र	चरण	गुण	दोष	मिलान
अश्विनी	1 - 4	28		मध्यम है।
भरणी	1 - 4	25.5	1	मध्यम है।
कृतिका	1 - 1	23.5	3	मध्यम है।
कृतिका	2 - 4	20	3	मध्यम है।
रोहिणी	1 - 4	12	3,1	अच्छा नहीं है।
मृगशिरा	1 - 2	21		मध्यम है।
मृगशिरा	3 - 4	14	4	अच्छा नहीं है।
आरद्रा	1 - 4	13	1,4	अच्छा नहीं है।
पुनर्वसु	1 - 3	17	-4	अच्छा नहीं है।
पुनर्वसु	4 - 4	29.5		उत्तम है।
पुष्य	1 - 4	30	0	उत्तम है।
अश्लेषा	1 - 4	28	3	मध्यम है।
मघा	1 - 4	16	3,4,2	अच्छा नहीं है।
पू फाल्गुनी	1 - 4	16.5	-1,2,4	अच्छा नहीं है।
उ फाल्गुनी	1 - 1	19.5	-1,4	मध्यम है।
उ फाल्गुनी	2 - 4	22	1	मध्यम है।
हस्त	1 - 4	23		मध्यम है।
चित्रा	1 - 2	27		मध्यम है।
चित्रा	3 - 4	26.5		मध्यम है।
स्वाती	1 - 4	14.5	3	मध्यम है।
विशाखा	1 - 3	18.5	3	अच्छा नहीं है।
विशाखा	4 - 4	15.5	-3,5	अच्छा नहीं है।
अनुराधा	1 - 4	21	-5	मध्यम है।
ज्येष्ठा	1 - 4	26	-5	मध्यम है।
मूल	1 - 4	23.5	6	मध्यम है।
पूर्वाषाढ़ा	1 - 4	17	1,6	अच्छा नहीं है।
उत्तराषाढ़ा	1 - 1	9.5	1,3,6	अच्छा नहीं है।
उत्तराषाढ़ा	2 - 4	13	1,3	अच्छा नहीं है।
श्रवण	1 - 4	14	3	अच्छा नहीं है।
धनिष्ठा	1 - 2	28		मध्यम है।
धनिष्ठा	3 - 4	19.5	6	अच्छा नहीं है।
शतभिषा	1 - 4	20.5	6	मध्यम है।
पू भाद्रपद	1 - 3	13.5	1,6	अच्छा नहीं है।
पू भाद्रपद	4 - 4	18.5	1,5	अच्छा नहीं है।
उ भाद्रपद	1 - 4	21	1,5	मध्यम है।
रेवती	1 - 4	14	3,5	अच्छा नहीं है।

### दोष प्रकार

0 रन्ध्र दोष : 1 गण महा दोष: 2 योनिवर दोष: 3 नाड़ी दोष  
4 द्विदाश दोष : 5 नवपंच दोष: 6 भकूट दोष:

भोग्य दशा – बुध 14वर्ष 2मास 15दिन

बुध 17 वर्ष

केतु 7 वर्ष

शुक्र 20 वर्ष

बुध	00/00/0000 - 00/00/0000	केतु	04/08/1994 - 31/12/1994	शुक्र	04/08/2001 - 04/12/2004
केतु	20/05/1980 - 28/12/1980	शुक्र	31/12/1994 - 01/03/1996	सूर्य	04/12/2004 - 04/12/2005
शुक्र	28/12/1980 - 29/10/1983	सूर्य	01/03/1996 - 07/07/1996	चन्द्र	04/12/2005 - 05/08/2007
सूर्य	29/10/1983 - 03/09/1984	चन्द्र	07/07/1996 - 05/02/1997	मंगल	05/08/2007 - 04/10/2008
चन्द्र	03/09/1984 - 03/02/1986	मंगल	05/02/1997 - 04/07/1997	राहु	04/10/2008 - 04/10/2011
मंगल	03/02/1986 - 31/01/1987	राहु	04/07/1997 - 23/07/1998	गुरु	04/10/2011 - 04/06/2014
राहु	31/01/1987 - 19/08/1989	गुरु	23/07/1998 - 29/06/1999	शनि	04/06/2014 - 04/08/2017
गुरु	19/08/1989 - 25/11/1991	शनि	29/06/1999 - 07/08/2000	बुध	04/08/2017 - 04/06/2020
शनि	25/11/1991 - 04/08/1994	बुध	07/08/2000 - 04/08/2001	केतु	04/06/2020 - 04/08/2021

सूर्य 6 वर्ष

चन्द्र 10 वर्ष

मंगल 7 वर्ष

सूर्य	04/08/2021 - 22/11/2021	चन्द्र	04/08/2027 - 03/06/2028	मंगल	04/08/2037 - 31/12/2037
चन्द्र	22/11/2021 - 23/05/2022	मंगल	03/06/2028 - 03/01/2029	राहु	31/12/2037 - 19/01/2039
मंगल	23/05/2022 - 28/09/2022	राहु	03/01/2029 - 04/07/2030	गुरु	19/01/2039 - 26/12/2039
राहु	28/09/2022 - 23/08/2023	गुरु	04/07/2030 - 04/11/2031	शनि	26/12/2039 - 03/02/2041
गुरु	23/08/2023 - 10/06/2024	शनि	04/11/2031 - 04/06/2033	बुध	03/02/2041 - 31/01/2042
शनि	10/06/2024 - 23/05/2025	बुध	04/06/2033 - 03/11/2034	केतु	31/01/2042 - 29/06/2042
बुध	23/05/2025 - 29/03/2026	केतु	03/11/2034 - 05/06/2035	शुक्र	29/06/2042 - 29/08/2043
केतु	29/03/2026 - 04/08/2026	शुक्र	05/06/2035 - 02/02/2037	सूर्य	29/08/2043 - 04/01/2044
शुक्र	04/08/2026 - 04/08/2027	सूर्य	02/02/2037 - 04/08/2037	चन्द्र	04/01/2044 - 04/08/2044

राहु 18 वर्ष

गुरु 16 वर्ष

शनि 19 वर्ष

राहु	04/08/2044 - 17/04/2047	गुरु	04/08/2062 - 21/09/2064	शनि	04/08/2078 - 07/08/2081
गुरु	17/04/2047 - 10/09/2049	शनि	21/09/2064 - 05/04/2067	बुध	07/08/2081 - 16/04/2084
शनि	10/09/2049 - 17/07/2052	बुध	05/04/2067 - 10/07/2069	केतु	16/04/2084 - 26/05/2085
बुध	17/07/2052 - 03/02/2055	केतु	10/07/2069 - 16/06/2070	शुक्र	26/05/2085 - 26/07/2088
केतु	03/02/2055 - 21/02/2056	शुक्र	16/06/2070 - 14/02/2073	सूर्य	26/07/2088 - 08/07/2089
शुक्र	21/02/2056 - 21/02/2059	सूर्य	14/02/2073 - 04/12/2073	चन्द्र	08/07/2089 - 06/02/2091
सूर्य	21/02/2059 - 16/01/2060	चन्द्र	04/12/2073 - 05/04/2075	मंगल	06/02/2091 - 17/03/2092
चन्द्र	16/01/2060 - 17/07/2061	मंगल	05/04/2075 - 10/03/2076	राहु	17/03/2092 - 22/01/2095
मंगल	17/07/2061 - 04/08/2062	राहु	10/03/2076 - 04/08/2078	गुरु	22/01/2095 - 04/08/2097

भोग्य दशा – बुध 14वर्ष 2मास 15दिन

शुक्र – राहु

शुक्र – गुरु

शुक्र – शनि

राहु	04/10/2008 - 17/03/2009	गुरु	04/10/2011 - 11/02/2012	शनि	04/06/2014 - 05/12/2014
गुरु	17/03/2009 - 10/08/2009	शनि	11/02/2012 - 14/07/2012	बुध	05/12/2014 - 17/05/2015
शनि	10/08/2009 - 31/01/2010	बुध	14/07/2012 - 29/11/2012	केतु	17/05/2015 - 24/07/2015
बुध	31/01/2010 - 05/07/2010	केतु	29/11/2012 - 25/01/2013	शुक्र	24/07/2015 - 02/02/2016
केतु	05/07/2010 - 07/09/2010	शुक्र	25/01/2013 - 07/07/2013	सूर्य	02/02/2016 - 30/03/2016
शुक्र	07/09/2010 - 08/03/2011	सूर्य	07/07/2013 - 24/08/2013	चन्द्र	30/03/2016 - 05/07/2016
सूर्य	08/03/2011 - 02/05/2011	चन्द्र	24/08/2013 - 13/11/2013	मंगल	05/07/2016 - 10/09/2016
चन्द्र	02/05/2011 - 01/08/2011	मंगल	13/11/2013 - 09/01/2014	राहु	10/09/2016 - 03/03/2017
मंगल	01/08/2011 - 04/10/2011	राहु	09/01/2014 - 04/06/2014	गुरु	03/03/2017 - 04/08/2017

शुक्र – बुध

शुक्र – केतु

सूर्य – सूर्य

बुध	04/08/2017 - 29/12/2017	केतु	04/06/2020 - 29/06/2020	सूर्य	04/08/2021 - 09/08/2021
केतु	29/12/2017 - 27/02/2018	शुक्र	29/06/2020 - 08/09/2020	चन्द्र	09/08/2021 - 19/08/2021
शुक्र	27/02/2018 - 18/08/2018	सूर्य	08/09/2020 - 29/09/2020	मंगल	19/08/2021 - 25/08/2021
सूर्य	18/08/2018 - 09/10/2018	चन्द्र	29/09/2020 - 04/11/2020	राहु	25/08/2021 - 10/09/2021
चन्द्र	09/10/2018 - 03/01/2019	मंगल	04/11/2020 - 28/11/2020	गुरु	10/09/2021 - 25/09/2021
मंगल	03/01/2019 - 05/03/2019	राहु	28/11/2020 - 31/01/2021	शनि	25/09/2021 - 12/10/2021
राहु	05/03/2019 - 07/08/2019	गुरु	31/01/2021 - 29/03/2021	बुध	12/10/2021 - 28/10/2021
गुरु	07/08/2019 - 23/12/2019	शनि	29/03/2021 - 05/06/2021	केतु	28/10/2021 - 03/11/2021
शनि	23/12/2019 - 04/06/2020	बुध	05/06/2021 - 04/08/2021	शुक्र	03/11/2021 - 22/11/2021

सूर्य – चन्द्र

सूर्य – मंगल

सूर्य – राहु

चन्द्र	22/11/2021 - 07/12/2021	मंगल	23/05/2022 - 31/05/2022	राहु	28/09/2022 - 16/11/2022
मंगल	07/12/2021 - 17/12/2021	राहु	31/05/2022 - 19/06/2022	गुरु	16/11/2022 - 30/12/2022
राहु	17/12/2021 - 14/01/2022	गुरु	19/06/2022 - 06/07/2022	शनि	30/12/2022 - 20/02/2023
गुरु	14/01/2022 - 07/02/2022	शनि	06/07/2022 - 26/07/2022	बुध	20/02/2023 - 08/04/2023
शनि	07/02/2022 - 08/03/2022	बुध	26/07/2022 - 13/08/2022	केतु	08/04/2023 - 27/04/2023
बुध	08/03/2022 - 03/04/2022	केतु	13/08/2022 - 21/08/2022	शुक्र	27/04/2023 - 21/06/2023
केतु	03/04/2022 - 14/04/2022	शुक्र	21/08/2022 - 11/09/2022	सूर्य	21/06/2023 - 07/07/2023
शुक्र	14/04/2022 - 14/05/2022	सूर्य	11/09/2022 - 17/09/2022	चन्द्र	07/07/2023 - 03/08/2023
सूर्य	14/05/2022 - 23/05/2022	चन्द्र	17/09/2022 - 28/09/2022	मंगल	03/08/2023 - 23/08/2023

भोग्य दशा — बुध 14वर्ष 2मास 15दिन

शुक्र — राहु — मंगल

मंगल	05/08/2011 16:55:01
राहु	15/08/2011 07:01:28
गुरु	23/08/2011 19:33:52
शनि	02/09/2011 22:27:20
बुध	11/09/2011 23:46:45
केतु	15/09/2011 17:15:55
शुक्र	26/09/2011 08:56:25
सूर्य	29/09/2011 13:38:34
चन्द्र	04/10/2011 21:28:49

शुक्र — गुरु — गुरु

गुरु	22/10/2011 05:03:15
शनि	11/11/2011 18:32:51
बुध	30/11/2011 04:05:39
केतु	07/12/2011 17:54:27
शुक्र	29/12/2011 09:22:27
सूर्य	04/01/2012 21:12:51
चन्द्र	15/01/2012 16:56:51
मंगल	23/01/2012 06:45:39
राहु	11/02/2012 18:16:51

शुक्र — गुरु — शनि

शनि	07/03/2012 04:18:15
बुध	29/03/2012 00:38:27
केतु	07/04/2012 00:32:39
शुक्र	02/05/2012 17:24:39
सूर्य	10/05/2012 10:28:15
चन्द्र	23/05/2012 06:54:15
मंगल	01/06/2012 06:48:27
राहु	24/06/2012 09:59:15
गुरु	14/07/2012 23:28:51

शुक्र — गुरु — बुध

बुध	03/08/2012 12:37:27
केतु	11/08/2012 13:48:03
शुक्र	03/09/2012 13:44:03
सूर्य	10/09/2012 11:18:51
चन्द्र	21/09/2012 23:16:51
मंगल	30/09/2012 00:27:27
राहु	20/10/2012 17:11:51
गुरु	08/11/2012 02:44:39
शनि	29/11/2012 23:04:51

शुक्र — गुरु — केतु

केतु	03/12/2012 06:37:27
शुक्र	12/12/2012 17:53:27
सूर्य	15/12/2012 14:04:15
चन्द्र	20/12/2012 07:42:15
मंगल	23/12/2012 15:14:51
राहु	01/01/2013 03:47:15
गुरु	08/01/2013 17:36:03
शनि	17/01/2013 17:30:15
बुध	25/01/2013 18:40:51

शुक्र — गुरु — शुक्र

शुक्र	21/02/2013 20:00:51
सूर्य	01/03/2013 22:48:51
चन्द्र	15/03/2013 11:28:51
मंगल	24/03/2013 22:44:51
राहु	18/04/2013 07:08:51
गुरु	09/05/2013 22:36:51
शनि	04/06/2013 15:28:51
बुध	27/06/2013 15:24:51
केतु	07/07/2013 02:40:51

शुक्र — गुरु — सूर्य

सूर्य	09/07/2013 13:07:15
चन्द्र	13/07/2013 14:31:15
मंगल	16/07/2013 10:42:03
राहु	23/07/2013 18:01:15
गुरु	30/07/2013 05:51:39
शनि	06/08/2013 22:55:15
बुध	13/08/2013 20:30:03
केतु	16/08/2013 16:40:51
शुक्र	24/08/2013 19:28:51

शुक्र — गुरु — चन्द्र

चन्द्र	31/08/2013 13:48:51
मंगल	05/09/2013 07:26:51
राहु	17/09/2013 11:38:51
गुरु	28/09/2013 07:22:51
शनि	11/10/2013 03:48:51
बुध	22/10/2013 15:46:51
केतु	27/10/2013 09:24:51
शुक्र	09/11/2013 22:04:51
सूर्य	13/11/2013 23:28:51

शुक्र — गुरु — मंगल

मंगल	17/11/2013 07:01:27
राहु	25/11/2013 19:33:51
गुरु	03/12/2013 09:22:39
शनि	12/12/2013 09:16:51
बुध	20/12/2013 10:27:27
केतु	23/12/2013 18:00:03
शुक्र	02/01/2014 05:16:03
सूर्य	05/01/2014 01:26:51
चन्द्र	09/01/2014 19:04:51

भ्रामरी	भद्रिका	उल्का
भ्रामरी 00/00/0000 - 00/00/0000	भद्रिका 23/09/1983 - 03/06/1984	उल्का 23/09/1988 - 23/09/1989
भद्रिका 20/05/1980 - 22/09/1980	उल्का 03/06/1984 - 03/04/1985	सिद्धा 23/09/1989 - 23/11/1990
उल्का 22/09/1980 - 24/05/1981	सिद्धा 03/04/1985 - 25/03/1986	संकटा 23/11/1990 - 24/03/1992
सिद्धा 24/05/1981 - 04/03/1982	संकटा 25/03/1986 - 05/05/1987	मंगला 24/03/1992 - 24/05/1992
संकटा 04/03/1982 - 23/01/1983	मंगला 05/05/1987 - 24/06/1987	पिंगला 24/05/1992 - 23/09/1992
मंगला 23/01/1983 - 04/03/1983	पिंगला 24/06/1987 - 04/10/1987	धान्या 23/09/1992 - 24/03/1993
पिंगला 04/03/1983 - 24/05/1983	धान्या 04/10/1987 - 04/03/1988	भ्रामरी 24/03/1993 - 23/11/1993
धान्या 24/05/1983 - 23/09/1983	भ्रामरी 04/03/1988 - 23/09/1988	भद्रिका 23/11/1993 - 23/09/1994

सिद्धा	संकटा	मंगला
सिद्धा 23/09/1994 - 02/02/1996	संकटा 23/09/2001 - 04/07/2003	मंगला 23/09/2009 - 03/10/2009
संकटा 02/02/1996 - 23/08/1997	मंगला 04/07/2003 - 24/09/2003	पिंगला 03/10/2009 - 23/10/2009
मंगला 23/08/1997 - 02/11/1997	पिंगला 24/09/2003 - 04/03/2004	धान्या 23/10/2009 - 23/11/2009
पिंगला 02/11/1997 - 25/03/1998	धान्या 04/03/2004 - 02/11/2004	भ्रामरी 23/11/2009 - 02/01/2010
धान्या 25/03/1998 - 24/10/1998	भ्रामरी 02/11/2004 - 23/09/2005	भद्रिका 02/01/2010 - 22/02/2010
भ्रामरी 24/10/1998 - 04/08/1999	भद्रिका 23/09/2005 - 03/11/2006	उल्का 22/02/2010 - 24/04/2010
भद्रिका 04/08/1999 - 24/07/2000	उल्का 03/11/2006 - 04/03/2008	सिद्धा 24/04/2010 - 04/07/2010
उल्का 24/07/2000 - 23/09/2001	सिद्धा 04/03/2008 - 23/09/2009	संकटा 04/07/2010 - 23/09/2010

पिंगला	धान्या	भ्रामरी
पिंगला 23/09/2010 - 03/11/2010	धान्या 23/09/2012 - 23/12/2012	भ्रामरी 23/09/2015 - 03/03/2016
धान्या 03/11/2010 - 03/01/2011	भ्रामरी 23/12/2012 - 24/04/2013	भद्रिका 03/03/2016 - 22/09/2016
भ्रामरी 03/01/2011 - 25/03/2011	भद्रिका 24/04/2013 - 23/09/2013	उल्का 22/09/2016 - 24/05/2017
भद्रिका 25/03/2011 - 04/07/2011	उल्का 23/09/2013 - 25/03/2014	सिद्धा 24/05/2017 - 04/03/2018
उल्का 04/07/2011 - 03/11/2011	सिद्धा 25/03/2014 - 23/10/2014	संकटा 04/03/2018 - 23/01/2019
सिद्धा 03/11/2011 - 24/03/2012	संकटा 23/10/2014 - 24/06/2015	मंगला 23/01/2019 - 04/03/2019
संकटा 24/03/2012 - 03/09/2012	मंगला 24/06/2015 - 24/07/2015	पिंगला 04/03/2019 - 24/05/2019
मंगला 03/09/2012 - 23/09/2012	पिंगला 24/07/2015 - 23/09/2015	धान्या 24/05/2019 - 23/09/2019

## योगिनी अधिपति

मंगला : चन्द्र	धान्या : गुरु	भद्रिका : बुध	सिद्धा : शुक्र
पिंगला : सूर्य	भ्रामरी : मंगल	उल्का : शनि	संकटा : राहु – केतु

भद्रिका	उल्का	सिद्धा
भद्रिका 23/09/2019 - 03/06/2020	उल्का 23/09/2024 - 23/09/2025	सिद्धा 23/09/2030 - 02/02/2032
उल्का 03/06/2020 - 03/04/2021	सिद्धा 23/09/2025 - 23/11/2026	संकटा 02/02/2032 - 23/08/2033
सिद्धा 03/04/2021 - 25/03/2022	संकटा 23/11/2026 - 24/03/2028	मंगला 23/08/2033 - 02/11/2033
संकटा 25/03/2022 - 05/05/2023	मंगला 24/03/2028 - 24/05/2028	पिंगला 02/11/2033 - 25/03/2034
मंगला 05/05/2023 - 24/06/2023	पिंगला 24/05/2028 - 23/09/2028	धान्या 25/03/2034 - 24/10/2034
पिंगला 24/06/2023 - 04/10/2023	धान्या 23/09/2028 - 24/03/2029	भ्रामरी 24/10/2034 - 04/08/2035
धान्या 04/10/2023 - 04/03/2024	भ्रामरी 24/03/2029 - 23/11/2029	भद्रिका 04/08/2035 - 24/07/2036
भ्रामरी 04/03/2024 - 23/09/2024	भद्रिका 23/11/2029 - 23/09/2030	उल्का 24/07/2036 - 23/09/2037

संकटा	मंगला	पिंगला
संकटा 23/09/2037 - 04/07/2039	मंगला 23/09/2045 - 03/10/2045	पिंगला 23/09/2046 - 03/11/2046
मंगला 04/07/2039 - 24/09/2039	पिंगला 03/10/2045 - 23/10/2045	धान्या 03/11/2046 - 03/01/2047
पिंगला 24/09/2039 - 04/03/2040	धान्या 23/10/2045 - 23/11/2045	भ्रामरी 03/01/2047 - 25/03/2047
धान्या 04/03/2040 - 02/11/2040	भ्रामरी 23/11/2045 - 02/01/2046	भद्रिका 25/03/2047 - 04/07/2047
भ्रामरी 02/11/2040 - 23/09/2041	भद्रिका 02/01/2046 - 22/02/2046	उल्का 04/07/2047 - 03/11/2047
भद्रिका 23/09/2041 - 03/11/2042	उल्का 22/02/2046 - 24/04/2046	सिद्धा 03/11/2047 - 24/03/2048
उल्का 03/11/2042 - 04/03/2044	सिद्धा 24/04/2046 - 04/07/2046	संकटा 24/03/2048 - 03/09/2048
सिद्धा 04/03/2044 - 23/09/2045	संकटा 04/07/2046 - 23/09/2046	मंगला 03/09/2048 - 23/09/2048

धान्या	भ्रामरी	भद्रिका
धान्या 23/09/2048 - 23/12/2048	भ्रामरी 23/09/2051 - 03/03/2052	भद्रिका 23/09/2055 - 03/06/2056
भ्रामरी 23/12/2048 - 24/04/2049	भद्रिका 03/03/2052 - 22/09/2052	उल्का 03/06/2056 - 03/04/2057
भद्रिका 24/04/2049 - 23/09/2049	उल्का 22/09/2052 - 24/05/2053	सिद्धा 03/04/2057 - 25/03/2058
उल्का 23/09/2049 - 25/03/2050	सिद्धा 24/05/2053 - 04/03/2054	संकटा 25/03/2058 - 05/05/2059
सिद्धा 25/03/2050 - 23/10/2050	संकटा 04/03/2054 - 23/01/2055	मंगला 05/05/2059 - 24/06/2059
संकटा 23/10/2050 - 24/06/2051	मंगला 23/01/2055 - 04/03/2055	पिंगला 24/06/2059 - 04/10/2059
मंगला 24/06/2051 - 24/07/2051	पिंगला 04/03/2055 - 24/05/2055	धान्या 04/10/2059 - 04/03/2060
पिंगला 24/07/2051 - 23/09/2051	धान्या 24/05/2055 - 23/09/2055	भ्रामरी 04/03/2060 - 23/09/2060

## योगिनी अधिपति

मंगला	: चन्द्र	धान्या	: गुरु	भद्रिका	: बुध	सिद्धा	: शुक्र
पिंगला	: सूर्य	भ्रामरी	: मंगल	उल्का	: शनि	संकटा	: राहु – केतु

भोग्य दशा – कन्या 1वर्ष 3मास 17दिन

कालचक्र दशा

कुल दशाकाल : 100 वर्ष	वर्ग : सव्य
नक्षत्र : अश्लेषा	देह : मेष
चरण : 1	जीव : धनु

कन्या	तुला	वृश्चिक
कन्या 00/00/0000 - 00/00/0000	तुला 04/09/1981 - 27/03/1984	वृश्चिक 04/09/1997 - 02/03/1998
तुला 00/00/0000 - 00/00/0000	वृश्चिक 27/03/1984 - 10/05/1985	धनु 02/03/1998 - 12/11/1998
वृश्चिक 00/00/0000 - 00/00/0000	धनु 10/05/1985 - 15/12/1986	मेष 12/11/1998 - 10/05/1999
धनु 00/00/0000 - 00/00/0000	मेष 15/12/1986 - 28/01/1988	वृष 10/05/1999 - 23/06/2000
मेष 00/00/0000 - 00/00/0000	वृष 28/01/1988 - 20/08/1990	मिथुन 23/06/2000 - 08/02/2001
वृष 00/00/0000 - 00/00/0000	मिथुन 20/08/1990 - 28/01/1992	कर्क 08/02/2001 - 30/07/2002
मिथुन 00/00/0000 - 00/00/0000	कर्क 28/01/1992 - 09/06/1995	सिंह 30/07/2002 - 05/12/2002
कर्क 20/05/1980 - 23/03/1981	सिंह 09/06/1995 - 27/03/1996	कन्या 05/12/2002 - 23/07/2003
सिंह 23/03/1981 - 04/09/1981	कन्या 27/03/1996 - 04/09/1997	तुला 23/07/2003 - 04/09/2004
धनु	मेष	वृष
धनु 04/09/2004 - 04/09/2005	मेष 04/09/2014 - 02/03/2015	वृष 04/09/2021 - 27/03/2024
मेष 04/09/2005 - 18/05/2006	वृष 02/03/2015 - 14/04/2016	मिथुन 27/03/2024 - 04/09/2025
वृष 18/05/2006 - 23/12/2007	मिथुन 14/04/2016 - 30/11/2016	कर्क 04/09/2025 - 13/01/2029
मिथुन 23/12/2007 - 16/11/2008	कर्क 30/11/2016 - 21/05/2018	सिंह 13/01/2029 - 01/11/2029
कर्क 16/11/2008 - 23/12/2010	सिंह 21/05/2018 - 26/09/2018	कन्या 01/11/2029 - 11/04/2031
सिंह 23/12/2010 - 23/06/2011	कन्या 26/09/2018 - 14/05/2019	तुला 11/04/2031 - 01/11/2033
कन्या 23/06/2011 - 17/05/2012	तुला 14/05/2019 - 26/06/2020	वृश्चिक 01/11/2033 - 15/12/2034
तुला 17/05/2012 - 22/12/2013	वृश्चिक 26/06/2020 - 22/12/2020	धनु 15/12/2034 - 22/07/2036
वृश्चिक 22/12/2013 - 04/09/2014	धनु 22/12/2020 - 04/09/2021	मेष 22/07/2036 - 04/09/2037
मिथुन	कर्क	सिंह
मिथुन 04/09/2037 - 27/06/2038	कर्क 04/09/2046 - 31/01/2051	सिंह 04/09/2067 - 04/12/2067
कर्क 27/06/2038 - 17/05/2040	सिंह 31/01/2051 - 19/02/2052	कन्या 04/12/2067 - 17/05/2068
सिंह 17/05/2040 - 28/10/2040	कन्या 19/02/2052 - 09/01/2054	तुला 17/05/2068 - 05/03/2069
कन्या 28/10/2040 - 20/08/2041	तुला 09/01/2054 - 20/05/2057	वृश्चिक 05/03/2069 - 11/07/2069
तुला 20/08/2041 - 28/01/2043	वृश्चिक 20/05/2057 - 08/11/2058	धनु 11/07/2069 - 09/01/2070
वृश्चिक 28/01/2043 - 15/09/2043	धनु 08/11/2058 - 14/12/2060	मेष 09/01/2070 - 17/05/2070
धनु 15/09/2043 - 09/08/2044	मेष 14/12/2060 - 04/06/2062	वृष 17/05/2070 - 06/03/2071
मेष 09/08/2044 - 27/03/2045	वृष 04/06/2062 - 13/10/2065	मिथुन 06/03/2071 - 17/08/2071
वृष 27/03/2045 - 04/09/2046	मिथुन 13/10/2065 - 04/09/2067	कर्क 17/08/2071 - 04/09/2072

भोग्य दशा — कन्या 1वर्ष 3मास 17दिन

धनु — कन्या

कन्या	23/06/2011 - 23/07/2011
तुला	23/07/2011 - 13/09/2011
वृश्चिक	13/09/2011 - 06/10/2011
धनु	06/10/2011 - 08/11/2011
मेष	08/11/2011 - 01/12/2011
वृष	01/12/2011 - 23/01/2012
मिथुन	23/01/2012 - 21/02/2012
कर्क	21/02/2012 - 30/04/2012
सिंह	30/04/2012 - 17/05/2012

धनु — तुला

तुला	17/05/2012 - 18/08/2012
वृश्चिक	18/08/2012 - 28/09/2012
धनु	28/09/2012 - 26/11/2012
मेष	26/11/2012 - 06/01/2013
वृष	06/01/2013 - 09/04/2013
मिथुन	09/04/2013 - 01/06/2013
कर्क	01/06/2013 - 01/10/2013
सिंह	01/10/2013 - 31/10/2013
कन्या	31/10/2013 - 22/12/2013

धनु — वृश्चिक

वृश्चिक	22/12/2013 - 09/01/2014
धनु	09/01/2014 - 04/02/2014
मेष	04/02/2014 - 21/02/2014
वृष	21/02/2014 - 03/04/2014
मिथुन	03/04/2014 - 26/04/2014
कर्क	26/04/2014 - 19/06/2014
सिंह	19/06/2014 - 02/07/2014
कन्या	02/07/2014 - 25/07/2014
तुला	25/07/2014 - 04/09/2014

मेष — मेष

मेष	04/09/2014 - 16/09/2014
वृष	16/09/2014 - 15/10/2014
मिथुन	15/10/2014 - 31/10/2014
कर्क	31/10/2014 - 08/12/2014
सिंह	08/12/2014 - 17/12/2014
कन्या	17/12/2014 - 02/01/2015
तुला	02/01/2015 - 30/01/2015
वृश्चिक	30/01/2015 - 12/02/2015
धनु	12/02/2015 - 02/03/2015

मेष — वृष

वृष	02/03/2015 - 06/05/2015
मिथुन	06/05/2015 - 12/06/2015
कर्क	12/06/2015 - 06/09/2015
सिंह	06/09/2015 - 26/09/2015
कन्या	26/09/2015 - 02/11/2015
तुला	02/11/2015 - 07/01/2016
वृश्चिक	07/01/2016 - 04/02/2016
धनु	04/02/2016 - 16/03/2016
मेष	16/03/2016 - 14/04/2016

मेष — मिथुन

मिथुन	14/04/2016 - 05/05/2016
कर्क	05/05/2016 - 22/06/2016
सिंह	22/06/2016 - 03/07/2016
कन्या	03/07/2016 - 24/07/2016
तुला	24/07/2016 - 30/08/2016
वृश्चिक	30/08/2016 - 15/09/2016
धनु	15/09/2016 - 08/10/2016
मेष	08/10/2016 - 24/10/2016
वृष	24/10/2016 - 30/11/2016

मेष — कर्क

कर्क	30/11/2016 - 23/03/2017
सिंह	23/03/2017 - 19/04/2017
कन्या	19/04/2017 - 06/06/2017
तुला	06/06/2017 - 31/08/2017
वृश्चिक	31/08/2017 - 07/10/2017
धनु	07/10/2017 - 30/11/2017
मेष	30/11/2017 - 07/01/2018
वृष	07/01/2018 - 03/04/2018
मिथुन	03/04/2018 - 21/05/2018

मेष — सिंह

सिंह	21/05/2018 - 27/05/2018
कन्या	27/05/2018 - 08/06/2018
तुला	08/06/2018 - 28/06/2018
वृश्चिक	28/06/2018 - 07/07/2018
धनु	07/07/2018 - 20/07/2018
मेष	20/07/2018 - 29/07/2018
वृष	29/07/2018 - 18/08/2018
मिथुन	18/08/2018 - 30/08/2018
कर्क	30/08/2018 - 26/09/2018

मेष — कन्या

कन्या	26/09/2018 - 17/10/2018
तुला	17/10/2018 - 22/11/2018
वृश्चिक	22/11/2018 - 08/12/2018
धनु	08/12/2018 - 31/12/2018
मेष	31/12/2018 - 17/01/2019
वृष	17/01/2019 - 22/02/2019
मिथुन	22/02/2019 - 15/03/2019
कर्क	15/03/2019 - 02/05/2019
सिंह	02/05/2019 - 14/05/2019



भोग्य दशा — कन्या 1वर्ष 3मास 17दिन

मेष — तुला

तुला	14/05/2019 - 18/07/2019
वृश्चिक	18/07/2019 - 16/08/2019
धनु	16/08/2019 - 26/09/2019
मेष	26/09/2019 - 25/10/2019
वृष	25/10/2019 - 29/12/2019
मिथुन	29/12/2019 - 04/02/2020
कर्क	04/02/2020 - 30/04/2020
सिंह	30/04/2020 - 20/05/2020
कन्या	20/05/2020 - 26/06/2020

मेष — वृश्चिक

वृश्चिक	26/06/2020 - 09/07/2020
धनु	09/07/2020 - 27/07/2020
मेष	27/07/2020 - 08/08/2020
वृष	08/08/2020 - 06/09/2020
मिथुन	06/09/2020 - 22/09/2020
कर्क	22/09/2020 - 29/10/2020
सिंह	29/10/2020 - 07/11/2020
कन्या	07/11/2020 - 23/11/2020
तुला	23/11/2020 - 22/12/2020

मेष — धनु

धनु	22/12/2020 - 17/01/2021
मेष	17/01/2021 - 04/02/2021
वृष	04/02/2021 - 16/03/2021
मिथुन	16/03/2021 - 08/04/2021
कर्क	08/04/2021 - 01/06/2021
सिंह	01/06/2021 - 14/06/2021
कन्या	14/06/2021 - 07/07/2021
तुला	07/07/2021 - 17/08/2021
वृश्चिक	17/08/2021 - 04/09/2021

वृष — वृष

वृष	04/09/2021 - 31/01/2022
मिथुन	31/01/2022 - 26/04/2022
कर्क	26/04/2022 - 08/11/2022
सिंह	08/11/2022 - 25/12/2022
कन्या	25/12/2022 - 19/03/2023
तुला	19/03/2023 - 15/08/2023
वृश्चिक	15/08/2023 - 20/10/2023
धनु	20/10/2023 - 21/01/2024
मेष	21/01/2024 - 27/03/2024

वृष — मिथुन

मिथुन	27/03/2024 - 13/05/2024
कर्क	13/05/2024 - 01/09/2024
सिंह	01/09/2024 - 27/09/2024
कन्या	27/09/2024 - 13/11/2024
तुला	13/11/2024 - 05/02/2025
वृश्चिक	05/02/2025 - 14/03/2025
धनु	14/03/2025 - 06/05/2025
मेष	06/05/2025 - 12/06/2025
वृष	12/06/2025 - 04/09/2025

वृष — कर्क

कर्क	04/09/2025 - 19/05/2026
सिंह	19/05/2026 - 20/07/2026
कन्या	20/07/2026 - 07/11/2026
तुला	07/11/2026 - 23/05/2027
वृश्चिक	23/05/2027 - 17/08/2027
धनु	17/08/2027 - 17/12/2027
मेष	17/12/2027 - 12/03/2028
वृष	12/03/2028 - 25/09/2028
मिथुन	25/09/2028 - 13/01/2029

वृष — सिंह

सिंह	13/01/2029 - 28/01/2029
कन्या	28/01/2029 - 23/02/2029
तुला	23/02/2029 - 11/04/2029
वृश्चिक	11/04/2029 - 01/05/2029
धनु	01/05/2029 - 30/05/2029
मेष	30/05/2029 - 20/06/2029
वृष	20/06/2029 - 06/08/2029
मिथुन	06/08/2029 - 01/09/2029
कर्क	01/09/2029 - 01/11/2029

वृष — कन्या

कन्या	01/11/2029 - 19/12/2029
तुला	19/12/2029 - 13/03/2030
वृश्चिक	13/03/2030 - 19/04/2030
धनु	19/04/2030 - 10/06/2030
मेष	10/06/2030 - 17/07/2030
वृष	17/07/2030 - 09/10/2030
मिथुन	09/10/2030 - 25/11/2030
कर्क	25/11/2030 - 16/03/2031
सिंह	16/03/2031 - 11/04/2031

वृष — तुला

तुला	11/04/2031 - 08/09/2031
वृश्चिक	08/09/2031 - 12/11/2031
धनु	12/11/2031 - 14/02/2032
मेष	14/02/2032 - 19/04/2032
वृष	19/04/2032 - 16/09/2032
मिथुन	16/09/2032 - 09/12/2032
कर्क	09/12/2032 - 23/06/2033
सिंह	23/06/2033 - 09/08/2033
कन्या	09/08/2033 - 01/11/2033

## अष्टोत्तरी दशा

भोग्य दशा – सूर्य 1वर्ष 3मास 3दिन

सूर्य	चन्द्र	मंगल
सूर्य 00/00/0000 - 00/00/0000	चन्द्र 21/08/1981 - 21/09/1983	मंगल 21/08/1996 - 25/03/1997
चन्द्र 00/00/0000 - 00/00/0000	मंगल 21/09/1983 - 31/10/1984	बुध 25/03/1997 - 28/06/1998
मंगल 00/00/0000 - 00/00/0000	बुध 31/10/1984 - 12/03/1987	शनि 28/06/1998 - 26/03/1999
बुध 00/00/0000 - 00/00/0000	शनि 12/03/1987 - 31/07/1988	गुरु 26/03/1999 - 21/08/2000
शनि 00/00/0000 - 00/00/0000	गुरु 31/07/1988 - 22/03/1991	राहु 21/08/2000 - 12/07/2001
गुरु 00/00/0000 - 00/00/0000	राहु 22/03/1991 - 20/11/1992	शुक्र 12/07/2001 - 31/01/2003
राहु 20/05/1980 - 21/06/1980	शुक्र 20/11/1992 - 22/10/1995	सूर्य 31/01/2003 - 12/07/2003
शुक्र 21/06/1980 - 21/08/1981	सूर्य 22/10/1995 - 21/08/1996	चन्द्र 12/07/2003 - 21/08/2004

बुध	शनि	गुरु
बुध 21/08/2004 - 25/04/2007	शनि 21/08/2021 - 25/07/2022	गुरु 21/08/2031 - 24/12/2034
शनि 25/04/2007 - 20/11/2008	गुरु 25/07/2022 - 28/04/2024	राहु 24/12/2034 - 02/02/2037
गुरु 20/11/2008 - 17/11/2011	राहु 28/04/2024 - 07/06/2025	शुक्र 02/02/2037 - 13/10/2040
राहु 17/11/2011 - 07/10/2013	शुक्र 07/06/2025 - 18/05/2027	सूर्य 13/10/2040 - 03/11/2041
शुक्र 07/10/2013 - 27/01/2017	सूर्य 18/05/2027 - 07/12/2027	चन्द्र 03/11/2041 - 24/06/2044
सूर्य 27/01/2017 - 07/01/2018	चन्द्र 07/12/2027 - 28/04/2029	मंगल 24/06/2044 - 20/11/2045
चन्द्र 07/01/2018 - 18/05/2020	मंगल 28/04/2029 - 23/01/2030	बुध 20/11/2045 - 16/11/2048
मंगल 18/05/2020 - 21/08/2021	बुध 23/01/2030 - 21/08/2031	शनि 16/11/2048 - 21/08/2050

राहु	शुक्र	सूर्य
राहु 21/08/2050 - 21/12/2051	शुक्र 21/08/2062 - 20/09/2066	सूर्य 21/08/2083 - 21/12/2083
शुक्र 21/12/2051 - 21/04/2054	सूर्य 20/09/2066 - 20/11/2067	चन्द्र 21/12/2083 - 20/10/2084
सूर्य 21/04/2054 - 21/12/2054	चन्द्र 20/11/2067 - 21/10/2070	मंगल 20/10/2084 - 31/03/2085
चन्द्र 21/12/2054 - 20/08/2056	मंगल 21/10/2070 - 11/05/2072	बुध 31/03/2085 - 12/03/2086
मंगल 20/08/2056 - 11/07/2057	बुध 11/05/2072 - 31/08/2075	शनि 12/03/2086 - 30/09/2086
बुध 11/07/2057 - 01/06/2059	शनि 31/08/2075 - 10/08/2077	गुरु 30/09/2086 - 21/10/2087
शनि 01/06/2059 - 11/07/2060	गुरु 10/08/2077 - 21/04/2081	राहु 21/10/2087 - 21/06/2088
गुरु 11/07/2060 - 21/08/2062	राहु 21/04/2081 - 21/08/2083	शुक्र 21/06/2088 - 21/08/2089

भोग्य दशा – सूर्य 1वर्ष 3मास 3दिन

बुध – गुरु

गुरु	20/11/2008 - 31/05/2009
राहु	31/05/2009 - 30/09/2009
शुक्र	30/09/2009 - 30/04/2010
सूर्य	30/04/2010 - 30/06/2010
चन्द्र	30/06/2010 - 28/11/2010
मंगल	28/11/2010 - 17/02/2011
बुध	17/02/2011 - 08/08/2011
शनि	08/08/2011 - 17/11/2011

बुध – राहु

राहु	17/11/2011 - 02/02/2012
शुक्र	02/02/2012 - 15/06/2012
सूर्य	15/06/2012 - 24/07/2012
चन्द्र	24/07/2012 - 27/10/2012
मंगल	27/10/2012 - 18/12/2012
बुध	18/12/2012 - 05/04/2013
शनि	05/04/2013 - 08/06/2013
गुरु	08/06/2013 - 07/10/2013

बुध – शुक्र

शुक्र	07/10/2013 - 30/05/2014
सूर्य	30/05/2014 - 05/08/2014
चन्द्र	05/08/2014 - 20/01/2015
मंगल	20/01/2015 - 19/04/2015
बुध	19/04/2015 - 26/10/2015
शनि	26/10/2015 - 15/02/2016
गुरु	15/02/2016 - 15/09/2016
राहु	15/09/2016 - 27/01/2017

बुध – सूर्य

सूर्य	27/01/2017 - 15/02/2017
चन्द्र	15/02/2017 - 04/04/2017
मंगल	04/04/2017 - 29/04/2017
बुध	29/04/2017 - 23/06/2017
शनि	23/06/2017 - 25/07/2017
गुरु	25/07/2017 - 23/09/2017
राहु	23/09/2017 - 01/11/2017
शुक्र	01/11/2017 - 07/01/2018

बुध – चन्द्र

चन्द्र	07/01/2018 - 06/05/2018
मंगल	06/05/2018 - 09/07/2018
बुध	09/07/2018 - 22/11/2018
शनि	22/11/2018 - 10/02/2019
गुरु	10/02/2019 - 12/07/2019
राहु	12/07/2019 - 15/10/2019
शुक्र	15/10/2019 - 31/03/2020
सूर्य	31/03/2020 - 18/05/2020

बुध – मंगल

मंगल	18/05/2020 - 21/06/2020
बुध	21/06/2020 - 01/09/2020
शनि	01/09/2020 - 14/10/2020
गुरु	14/10/2020 - 03/01/2021
राहु	03/01/2021 - 23/02/2021
शुक्र	23/02/2021 - 23/05/2021
सूर्य	23/05/2021 - 18/06/2021
चन्द्र	18/06/2021 - 21/08/2021

शनि – शनि

शनि	21/08/2021 - 21/09/2021
गुरु	21/09/2021 - 20/11/2021
राहु	20/11/2021 - 27/12/2021
शुक्र	27/12/2021 - 03/03/2022
सूर्य	03/03/2022 - 22/03/2022
चन्द्र	22/03/2022 - 08/05/2022
मंगल	08/05/2022 - 02/06/2022
बुध	02/06/2022 - 25/07/2022

शनि – गुरु

गुरु	25/07/2022 - 15/11/2022
राहु	15/11/2022 - 25/01/2023
शुक्र	25/01/2023 - 30/05/2023
सूर्य	30/05/2023 - 05/07/2023
चन्द्र	05/07/2023 - 02/10/2023
मंगल	02/10/2023 - 19/11/2023
बुध	19/11/2023 - 28/02/2024
शनि	28/02/2024 - 28/04/2024

शनि – राहु

राहु	28/04/2024 - 12/06/2024
शुक्र	12/06/2024 - 30/08/2024
सूर्य	30/08/2024 - 21/09/2024
चन्द्र	21/09/2024 - 16/11/2024
मंगल	16/11/2024 - 16/12/2024
बुध	16/12/2024 - 18/02/2025
शनि	18/02/2025 - 28/03/2025
गुरु	28/03/2025 - 07/06/2025

## सिंह 3 वर्ष

कन्या	20/05/1980 - 20/08/1980
तुला	20/08/1980 - 20/11/1980
वृश्चिक	20/11/1980 - 20/02/1981
धनु	20/02/1981 - 20/05/1981
मकर	20/05/1981 - 20/08/1981
कुम्भ	20/08/1981 - 20/11/1981
मीन	20/11/1981 - 20/02/1982
मेष	20/02/1982 - 20/05/1982
वृष	20/05/1982 - 20/08/1982
मिथुन	20/08/1982 - 20/11/1982
कर्क	20/11/1982 - 20/02/1983
सिंह	20/02/1983 - 20/05/1983

## कन्या 4 वर्ष

तुला	20/05/1983 - 20/09/1983
वृश्चिक	20/09/1983 - 20/01/1984
धनु	20/01/1984 - 20/05/1984
मकर	20/05/1984 - 20/09/1984
कुम्भ	20/09/1984 - 20/01/1985
मीन	20/01/1985 - 20/05/1985
मेष	20/05/1985 - 20/09/1985
वृष	20/09/1985 - 20/01/1986
मिथुन	20/01/1986 - 20/05/1986
कर्क	20/05/1986 - 20/09/1986
सिंह	20/09/1986 - 20/01/1987
कन्या	20/01/1987 - 20/05/1987

## तुला 8 वर्ष

वृश्चिक	20/05/1987 - 20/01/1988
धनु	20/01/1988 - 20/09/1988
मकर	20/09/1988 - 20/05/1989
कुम्भ	20/05/1989 - 20/01/1990
मीन	20/01/1990 - 20/09/1990
मेष	20/09/1990 - 20/05/1991
वृष	20/05/1991 - 20/01/1992
मिथुन	20/01/1992 - 20/09/1992
कर्क	20/09/1992 - 20/05/1993
सिंह	20/05/1993 - 20/01/1994
कन्या	20/01/1994 - 20/09/1994
तुला	20/09/1994 - 20/05/1995

## वृश्चिक 9 वर्ष

तुला	20/05/1995 - 20/02/1996
कन्या	20/02/1996 - 20/11/1996
सिंह	20/11/1996 - 20/08/1997
कर्क	20/08/1997 - 20/05/1998
मिथुन	20/05/1998 - 20/02/1999
वृष	20/02/1999 - 20/11/1999
मेष	20/11/1999 - 20/08/2000
मीन	20/08/2000 - 20/05/2001
कुम्भ	20/05/2001 - 20/02/2002
मकर	20/02/2002 - 20/11/2002
धनु	20/11/2002 - 20/08/2003
वृश्चिक	20/08/2003 - 20/05/2004

## धनु 8 वर्ष

वृश्चिक	20/05/2004 - 20/01/2005
तुला	20/01/2005 - 20/09/2005
कन्या	20/09/2005 - 20/05/2006
सिंह	20/05/2006 - 20/01/2007
कर्क	20/01/2007 - 20/09/2007
मिथुन	20/09/2007 - 20/05/2008
वृष	20/05/2008 - 20/01/2009
मेष	20/01/2009 - 20/09/2009
मीन	20/09/2009 - 20/05/2010
कुम्भ	20/05/2010 - 20/01/2011
मकर	20/01/2011 - 20/09/2011
धनु	20/09/2011 - 20/05/2012

## मकर 5 वर्ष

धनु	20/05/2012 - 20/10/2012
वृश्चिक	20/10/2012 - 20/03/2013
तुला	20/03/2013 - 20/08/2013
कन्या	20/08/2013 - 20/01/2014
सिंह	20/01/2014 - 20/06/2014
कर्क	20/06/2014 - 20/11/2014
मिथुन	20/11/2014 - 20/04/2015
वृष	20/04/2015 - 20/09/2015
मेष	20/09/2015 - 20/02/2016
मीन	20/02/2016 - 20/07/2016
कुम्भ	20/07/2016 - 20/12/2016
मकर	20/12/2016 - 20/05/2017

## चर दशा

### कुम्भ 6 वर्ष

मीन	20/05/2017 - 20/11/2017
मेष	20/11/2017 - 20/05/2018
वृष	20/05/2018 - 20/11/2018
मिथुन	20/11/2018 - 20/05/2019
कर्क	20/05/2019 - 20/11/2019
सिंह	20/11/2019 - 20/05/2020
कन्या	20/05/2020 - 20/11/2020
तुला	20/11/2020 - 20/05/2021
वृश्चिक	20/05/2021 - 20/11/2021
धनु	20/11/2021 - 20/05/2022
मकर	20/05/2022 - 20/11/2022
कुम्भ	20/11/2022 - 20/05/2023

### मीन 7 वर्ष

मेष	20/05/2023 - 20/12/2023
वृष	20/12/2023 - 20/07/2024
मिथुन	20/07/2024 - 20/02/2025
कर्क	20/02/2025 - 20/09/2025
सिंह	20/09/2025 - 20/04/2026
कन्या	20/04/2026 - 20/11/2026
तुला	20/11/2026 - 20/06/2027
वृश्चिक	20/06/2027 - 20/01/2028
धनु	20/01/2028 - 20/08/2028
मकर	20/08/2028 - 20/03/2029
कुम्भ	20/03/2029 - 20/10/2029
मीन	20/10/2029 - 20/05/2030

### मेष 4 वर्ष

वृष	20/05/2030 - 20/09/2030
मिथुन	20/09/2030 - 20/01/2031
कर्क	20/01/2031 - 20/05/2031
सिंह	20/05/2031 - 20/09/2031
कन्या	20/09/2031 - 20/01/2032
तुला	20/01/2032 - 20/05/2032
वृश्चिक	20/05/2032 - 20/09/2032
धनु	20/09/2032 - 20/01/2033
मकर	20/01/2033 - 20/05/2033
कुम्भ	20/05/2033 - 20/09/2033
मीन	20/09/2033 - 20/01/2034
मेष	20/01/2034 - 20/05/2034

### वृष 1 वर्ष

मेष	20/05/2034 - 20/06/2034
मीन	20/06/2034 - 20/07/2034
कुम्भ	20/07/2034 - 20/08/2034
मकर	20/08/2034 - 20/09/2034
धनु	20/09/2034 - 20/10/2034
वृश्चिक	20/10/2034 - 20/11/2034
तुला	20/11/2034 - 20/12/2034
कन्या	20/12/2034 - 20/01/2035
सिंह	20/01/2035 - 20/02/2035
कर्क	20/02/2035 - 20/03/2035
मिथुन	20/03/2035 - 20/04/2035
वृष	20/04/2035 - 20/05/2035

### मिथुन 11 वर्ष

वृष	20/05/2035 - 20/04/2036
मेष	20/04/2036 - 20/03/2037
मीन	20/03/2037 - 20/02/2038
कुम्भ	20/02/2038 - 20/01/2039
मकर	20/01/2039 - 20/12/2039
धनु	20/12/2039 - 20/11/2040
वृश्चिक	20/11/2040 - 20/10/2041
तुला	20/10/2041 - 20/09/2042
कन्या	20/09/2042 - 20/08/2043
सिंह	20/08/2043 - 20/07/2044
कर्क	20/07/2044 - 20/06/2045
मिथुन	20/06/2045 - 20/05/2046

### कर्क 12 वर्ष

मिथुन	20/05/2046 - 20/05/2047
वृष	20/05/2047 - 20/05/2048
मेष	20/05/2048 - 20/05/2049
मीन	20/05/2049 - 20/05/2050
कुम्भ	20/05/2050 - 20/05/2051
मकर	20/05/2051 - 20/05/2052
धनु	20/05/2052 - 20/05/2053
वृश्चिक	20/05/2053 - 20/05/2054
तुला	20/05/2054 - 20/05/2055
कन्या	20/05/2055 - 20/05/2056
सिंह	20/05/2056 - 20/05/2057
कर्क	20/05/2057 - 20/05/2058

## सिंह 3 वर्ष

कन्या	20/05/2058 - 20/08/2058
तुला	20/08/2058 - 20/11/2058
वृश्चिक	20/11/2058 - 20/02/2059
धनु	20/02/2059 - 20/05/2059
मकर	20/05/2059 - 20/08/2059
कुम्भ	20/08/2059 - 20/11/2059
मीन	20/11/2059 - 20/02/2060
मेष	20/02/2060 - 20/05/2060
वृष	20/05/2060 - 20/08/2060
मिथुन	20/08/2060 - 20/11/2060
कर्क	20/11/2060 - 20/02/2061
सिंह	20/02/2061 - 20/05/2061

## कन्या 4 वर्ष

तुला	20/05/2061 - 20/09/2061
वृश्चिक	20/09/2061 - 20/01/2062
धनु	20/01/2062 - 20/05/2062
मकर	20/05/2062 - 20/09/2062
कुम्भ	20/09/2062 - 20/01/2063
मीन	20/01/2063 - 20/05/2063
मेष	20/05/2063 - 20/09/2063
वृष	20/09/2063 - 20/01/2064
मिथुन	20/01/2064 - 20/05/2064
कर्क	20/05/2064 - 20/09/2064
सिंह	20/09/2064 - 20/01/2065
कन्या	20/01/2065 - 20/05/2065

## तुला 8 वर्ष

वृश्चिक	20/05/2065 - 20/01/2066
धनु	20/01/2066 - 20/09/2066
मकर	20/09/2066 - 20/05/2067
कुम्भ	20/05/2067 - 20/01/2068
मीन	20/01/2068 - 20/09/2068
मेष	20/09/2068 - 20/05/2069
वृष	20/05/2069 - 20/01/2070
मिथुन	20/01/2070 - 20/09/2070
कर्क	20/09/2070 - 20/05/2071
सिंह	20/05/2071 - 20/01/2072
कन्या	20/01/2072 - 20/09/2072
तुला	20/09/2072 - 20/05/2073

## वृश्चिक 9 वर्ष

तुला	20/05/2073 - 20/02/2074
कन्या	20/02/2074 - 20/11/2074
सिंह	20/11/2074 - 20/08/2075
कर्क	20/08/2075 - 20/05/2076
मिथुन	20/05/2076 - 20/02/2077
वृष	20/02/2077 - 20/11/2077
मेष	20/11/2077 - 20/08/2078
मीन	20/08/2078 - 20/05/2079
कुम्भ	20/05/2079 - 20/02/2080
मकर	20/02/2080 - 20/11/2080
धनु	20/11/2080 - 20/08/2081
वृश्चिक	20/08/2081 - 20/05/2082

## धनु 8 वर्ष

वृश्चिक	20/05/2082 - 20/01/2083
तुला	20/01/2083 - 20/09/2083
कन्या	20/09/2083 - 20/05/2084
सिंह	20/05/2084 - 20/01/2085
कर्क	20/01/2085 - 20/09/2085
मिथुन	20/09/2085 - 20/05/2086
वृष	20/05/2086 - 20/01/2087
मेष	20/01/2087 - 20/09/2087
मीन	20/09/2087 - 20/05/2088
कुम्भ	20/05/2088 - 20/01/2089
मकर	20/01/2089 - 20/09/2089
धनु	20/09/2089 - 20/05/2090

## मकर 5 वर्ष

धनु	20/05/2090 - 20/10/2090
वृश्चिक	20/10/2090 - 20/03/2091
तुला	20/03/2091 - 20/08/2091
कन्या	20/08/2091 - 20/01/2092
सिंह	20/01/2092 - 20/06/2092
कर्क	20/06/2092 - 20/11/2092
मिथुन	20/11/2092 - 20/04/2093
वृष	20/04/2093 - 20/09/2093
मेष	20/09/2093 - 20/02/2094
मीन	20/02/2094 - 20/07/2094
कुम्भ	20/07/2094 - 20/12/2094
मकर	20/12/2094 - 20/05/2095

## कुम्भ 6 वर्ष

मीन	20/05/2095 - 20/11/2095
मेष	20/11/2095 - 20/05/2096
वृष	20/05/2096 - 20/11/2096
मिथुन	20/11/2096 - 20/05/2097
कर्क	20/05/2097 - 20/11/2097
सिंह	20/11/2097 - 20/05/2098
कन्या	20/05/2098 - 20/11/2098
तुला	20/11/2098 - 20/05/2099
वृश्चिक	20/05/2099 - 20/11/2099
धनु	20/11/2099 - 20/05/2100
मकर	20/05/2100 - 20/11/2100
कुम्भ	20/11/2100 - 20/05/2101

## मीन 7 वर्ष

मेष	20/05/2101 - 20/12/2101
वृष	20/12/2101 - 20/07/2102
मिथुन	20/07/2102 - 20/02/2103
कर्क	20/02/2103 - 20/09/2103
सिंह	20/09/2103 - 20/04/2104
कन्या	20/04/2104 - 20/11/2104
तुला	20/11/2104 - 20/06/2105
वृश्चिक	20/06/2105 - 20/01/2106
धनु	20/01/2106 - 20/08/2106
मकर	20/08/2106 - 20/03/2107
कुम्भ	20/03/2107 - 20/10/2107
मीन	20/10/2107 - 20/05/2108

## मेष 4 वर्ष

वृष	20/05/2108 - 20/09/2108
मिथुन	20/09/2108 - 20/01/2109
कर्क	20/01/2109 - 20/05/2109
सिंह	20/05/2109 - 20/09/2109
कन्या	20/09/2109 - 20/01/2110
तुला	20/01/2110 - 20/05/2110
वृश्चिक	20/05/2110 - 20/09/2110
धनु	20/09/2110 - 20/01/2111
मकर	20/01/2111 - 20/05/2111
कुम्भ	20/05/2111 - 20/09/2111
मीन	20/09/2111 - 20/01/2112
मेष	20/01/2112 - 20/05/2112

## वृष 1 वर्ष

मेष	20/05/2112 - 20/06/2112
मीन	20/06/2112 - 20/07/2112
कुम्भ	20/07/2112 - 20/08/2112
मकर	20/08/2112 - 20/09/2112
धनु	20/09/2112 - 20/10/2112
वृश्चिक	20/10/2112 - 20/11/2112
तुला	20/11/2112 - 20/12/2112
कन्या	20/12/2112 - 20/01/2113
सिंह	20/01/2113 - 20/02/2113
कर्क	20/02/2113 - 20/03/2113
मिथुन	20/03/2113 - 20/04/2113
वृष	20/04/2113 - 20/05/2113

## मिथुन 11 वर्ष

वृष	20/05/2113 - 20/04/2114
मेष	20/04/2114 - 20/03/2115
मीन	20/03/2115 - 20/02/2116
कुम्भ	20/02/2116 - 20/01/2117
मकर	20/01/2117 - 20/12/2117
धनु	20/12/2117 - 20/11/2118
वृश्चिक	20/11/2118 - 20/10/2119
तुला	20/10/2119 - 20/09/2120
कन्या	20/09/2120 - 20/08/2121
सिंह	20/08/2121 - 20/07/2122
कर्क	20/07/2122 - 20/06/2123
मिथुन	20/06/2123 - 20/05/2124

## कर्क 12 वर्ष

मिथुन	20/05/2124 - 20/05/2125
वृष	20/05/2125 - 20/05/2126
मेष	20/05/2126 - 20/05/2127
मीन	20/05/2127 - 20/05/2128
कुम्भ	20/05/2128 - 20/05/2129
मकर	20/05/2129 - 20/05/2130
धनु	20/05/2130 - 20/05/2131
वृश्चिक	20/05/2131 - 20/05/2132
तुला	20/05/2132 - 20/05/2133
कन्या	20/05/2133 - 20/05/2134
सिंह	20/05/2134 - 20/05/2135
कर्क	20/05/2135 - 20/05/2136

नाम	Sample	दादा का नाम	
लिंग	पुरुष	पिता का नाम	
जन्म तिथि	20/05/1980	माता का नाम	
दिन वार	मंगलवार	जाति	
जन्म समय	12:28:51 घन्टे	गोत्र	
जन्म समय (समय घटी में)	17: 31: 47 घटी		
जन्म स्थान	DELHI	विक्रमी संवत्	2037
अक्षांश	028.39 उत्तर	शक संवत्	1902
रेखांश	077.13 पूर्व	मास	ज्येष्ठ
स्थानीय समय	12:07:43 घन्टे	पक्ष	शुक्ल
स्थानीय तिथि	20/05/1980	चन्द्र तिथि	7
सूर्योदय	5: 28: 7 घन्टे	सूर्योदय कालीन तिथि	6
सूर्यास्त	19: 8: 19 घन्टे	तिथि समाप्ति काल	10: 20: 9 घन्टे
दिनमान	13: 40: 11 घन्टे	सूर्योदय कालीन नक्षत्र	पुष्य
विषुव काल	4: 0: 4 घन्टे	नक्षत्र समाप्ति काल	8: 15: 28 घन्टे
भयात	10:31:40 घटी	सूर्योदय कालीन योग	वृद्धि
भभोग	65:4:42 घटी	योग समाप्ति काल	16: 3: 17 घन्टे
ऋतु	ग्रीष्म	सूर्योदय कालीन करण	तैत्तिल
भोग्य दशा	बुध 14व 2मा 15दि	करण समाप्ति काल	10: 20: 9 घन्टे



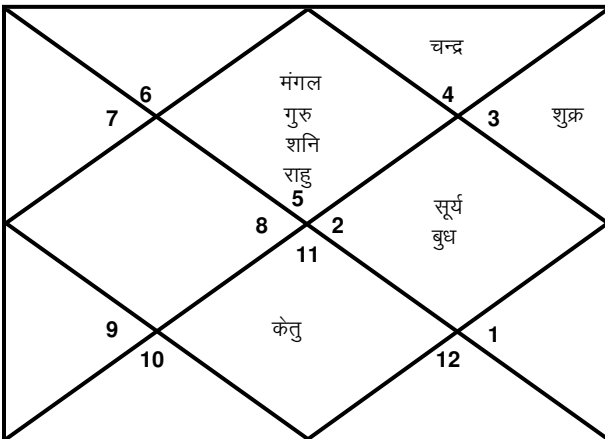
## शत्रु-मित्र सारिणी

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	—	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम
चन्द्र	मित्र	—	सम	मित्र	सम	सम	सम	सम	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	—	शत्रु	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु
बुध	मित्र	शत्रु	सम	—	सम	मित्र	सम	मित्र	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	—	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	—	मित्र	शत्रु	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	—	मित्र	सम
राहु	शत्रु	सम	शत्रु	मित्र	सम	शत्रु	मित्र	—	मित्र
केतु	सम	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	सम	मित्र	—

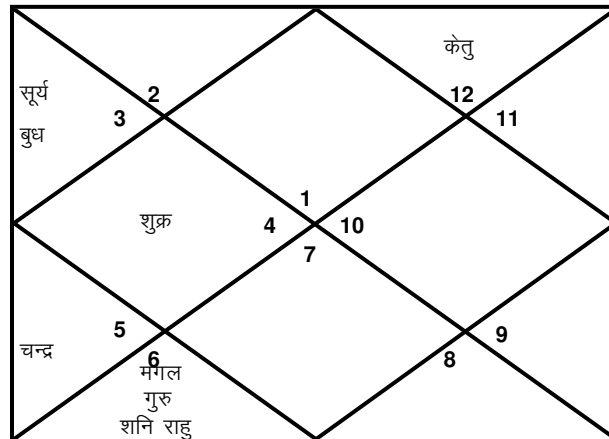
## ग्रह फल / राशि फल

ग्रह	वर्णन	ग्रह फल / राशि फल
सूर्य	धन का मालिक मगर वहमी	..
चन्द्र	तुफान से बस्तियाँ उजाड़ने वाला दरिया	..
मंगल	इंसाफ की तलवार	..
बुध	प्रसन्नता से निर्वाह करने वाला	राशि
गुरु	फकीरी पूर्ण	..
शुक्र	सुन्दर स्त्री – पुरुष माया के सम्बंध में घूमता लड्डू	..
शनि	बचपन, जवानी, बुढ़ापा उत्तम	..
राहु	सीढ़ी पर चढ़ने वाला हाथी	ग्रह
केतु	शेर का मुकाबला करने वाला कुत्ता	..

### चन्द्र लग्न



### चन्द्र लग्न लाल किताब



## लाल किताब दशा

## शनि 6 वर्ष

मंगल	20/05/1980 - 20/05/1982
गुरु	20/05/1982 - 20/05/1984
शुक्र	20/05/1984 - 20/05/1986

## राहु 6 वर्ष

केतु	20/05/1986 - 20/05/1988
बुध	20/05/1988 - 20/05/1990
मंगल	20/05/1990 - 20/05/1992

## केतु 3 वर्ष

शुक्र	20/05/1992 - 20/05/1993
मंगल	20/05/1993 - 20/05/1994
बुध	20/05/1994 - 20/05/1995

## गुरु 6 वर्ष

बुध	20/05/1995 - 20/05/1997
सूर्य	20/05/1997 - 20/05/1999
शनि	20/05/1999 - 20/05/2001

## सूर्य 2 वर्ष

शनि	20/05/2001 - 20/01/2002
राहु	20/01/2002 - 20/09/2002
केतु	20/09/2002 - 20/05/2003

## चन्द्र 1 वर्ष

सूर्य	20/05/2003 - 20/09/2003
शनि	20/09/2003 - 20/01/2004
राहु	20/01/2004 - 20/05/2004

## शुक्र 3 वर्ष

केतु	20/05/2004 - 20/05/2005
चन्द्र	20/05/2005 - 20/05/2006
गुरु	20/05/2006 - 20/05/2007

## मंगल 6 वर्ष

केतु	20/05/2007 - 20/05/2009
शुक्र	20/05/2009 - 20/05/2011
चन्द्र	20/05/2011 - 20/05/2013

## बुध 2 वर्ष

राहु	20/05/2013 - 20/01/2014
केतु	20/01/2014 - 20/09/2014
सूर्य	20/09/2014 - 20/05/2015

## शनि 6 वर्ष

मंगल	20/05/2015 - 20/05/2017
गुरु	20/05/2017 - 20/05/2019
शुक्र	20/05/2019 - 20/05/2021

## राहु 6 वर्ष

केतु	20/05/2021 - 20/05/2023
बुध	20/05/2023 - 20/05/2025
मंगल	20/05/2025 - 20/05/2027

## केतु 3 वर्ष

शुक्र	20/05/2027 - 20/05/2028
मंगल	20/05/2028 - 20/05/2029
बुध	20/05/2029 - 20/05/2030

## गुरु 6 वर्ष

बुध	20/05/2030 - 20/05/2032
सूर्य	20/05/2032 - 20/05/2034
शनि	20/05/2034 - 20/05/2036

## सूर्य 2 वर्ष

शनि	20/05/2036 - 20/01/2037
राहु	20/01/2037 - 20/09/2037
केतु	20/09/2037 - 20/05/2038

## चन्द्र 1 वर्ष

सूर्य	20/05/2038 - 20/09/2038
शनि	20/09/2038 - 20/01/2039
राहु	20/01/2039 - 20/05/2039

## शुक्र 3 वर्ष

केतु	20/05/2039 - 20/05/2040
चन्द्र	20/05/2040 - 20/05/2041
गुरु	20/05/2041 - 20/05/2042

## मंगल 6 वर्ष

केतु	20/05/2042 - 20/05/2044
शुक्र	20/05/2044 - 20/05/2046
चन्द्र	20/05/2046 - 20/05/2048

## बुध 2 वर्ष

राहु	20/05/2048 - 20/01/2049
केतु	20/01/2049 - 20/09/2049
सूर्य	20/09/2049 - 20/05/2050

## लाल किताब दशा

## शनि 6 वर्ष

मंगल	20/05/2050 - 20/05/2052
गुरु	20/05/2052 - 20/05/2054
शुक्र	20/05/2054 - 20/05/2056

## राहु 6 वर्ष

केतु	20/05/2056 - 20/05/2058
बुध	20/05/2058 - 20/05/2060
मंगल	20/05/2060 - 20/05/2062

## केतु 3 वर्ष

शुक्र	20/05/2062 - 20/05/2063
मंगल	20/05/2063 - 20/05/2064
बुध	20/05/2064 - 20/05/2065

## गुरु 6 वर्ष

बुध	20/05/2065 - 20/05/2067
सूर्य	20/05/2067 - 20/05/2069
शनि	20/05/2069 - 20/05/2071

## सूर्य 2 वर्ष

शनि	20/05/2071 - 20/01/2072
राहु	20/01/2072 - 20/09/2072
केतु	20/09/2072 - 20/05/2073

## चन्द्र 1 वर्ष

सूर्य	20/05/2073 - 20/09/2073
शनि	20/09/2073 - 20/01/2074
राहु	20/01/2074 - 20/05/2074

## शुक्र 3 वर्ष

केतु	20/05/2074 - 20/05/2075
चन्द्र	20/05/2075 - 20/05/2076
गुरु	20/05/2076 - 20/05/2077

## मंगल 6 वर्ष

केतु	20/05/2077 - 20/05/2079
शुक्र	20/05/2079 - 20/05/2081
चन्द्र	20/05/2081 - 20/05/2083

## बुध 2 वर्ष

राहु	20/05/2083 - 20/01/2084
केतु	20/01/2084 - 20/09/2084
सूर्य	20/09/2084 - 20/05/2085

## शनि 6 वर्ष

मंगल	20/05/2085 - 20/05/2087
गुरु	20/05/2087 - 20/05/2089
शुक्र	20/05/2089 - 20/05/2091

## राहु 6 वर्ष

केतु	20/05/2091 - 20/05/2093
बुध	20/05/2093 - 20/05/2095
मंगल	20/05/2095 - 20/05/2097

## केतु 3 वर्ष

शुक्र	20/05/2097 - 20/05/2098
मंगल	20/05/2098 - 20/05/2099
बुध	20/05/2099 - 20/05/2100

## गुरु 6 वर्ष

बुध	20/05/2100 - 20/05/2102
सूर्य	20/05/2102 - 20/05/2104
शनि	20/05/2104 - 20/05/2106

## सूर्य 2 वर्ष

शनि	20/05/2106 - 20/01/2107
राहु	20/01/2107 - 20/09/2107
केतु	20/09/2107 - 20/05/2108

## चन्द्र 1 वर्ष

सूर्य	20/05/2108 - 20/09/2108
शनि	20/09/2108 - 20/01/2109
राहु	20/01/2109 - 20/05/2109

## शुक्र 3 वर्ष

केतु	20/05/2109 - 20/05/2110
चन्द्र	20/05/2110 - 20/05/2111
गुरु	20/05/2111 - 20/05/2112

## मंगल 6 वर्ष

केतु	20/05/2112 - 20/05/2114
शुक्र	20/05/2114 - 20/05/2116
चन्द्र	20/05/2116 - 20/05/2118

## बुध 2 वर्ष

राहु	20/05/2118 - 20/01/2119
केतु	20/01/2119 - 20/09/2119
सूर्य	20/09/2119 - 20/05/2120

## धर्मी टेवा

लाल किताब में कुछ कुन्डली धर्मी टेवा से प्रभावित होती है । लाल किताब के अनुसार राहु, केतु एवं शनि अशुभ ग्रह माने जाते हैं । मंगल का प्रभाव यदि अशुभ हो तो यह ग्रह भी अशुभ माना जाता है । धर्मी टेवा में अशुभ ग्रहों का प्रभाव बहुत हद तक कम हो जाता है ।

यदि टेवा में बृहस्पति, शनि के साथ किसी भी घर में स्थित हो या फिर शनि 11वें घर में हो, तो वह धर्मी टेवा कहलाता है । यदि बृहस्पति के साथ शनि हो तो वह कई कष्टों का निवारक होता है एवं जीवन को नियंत्रित कर देता है । खास तौर पर 6ठे, 9वें, 11वें या फिर 12वें घरों में बृहस्पति-शनि का संयोग बहुत फलदायक होता है । यदि किसी टेवा में राहु या केतु में से कोई ग्रह 4थे घर में स्थित हो तो भी वह धर्मी टेवा कहलाता है । टेवा में चंद्र का संयोग राहु या फिर केतु के साथ किसी भी घर में हाने पर भी वह धर्मी टेवा हो जाता है ।

धर्मी टेवा वाले जातक को परेशानियों के समय ईश्वर की सहायता एवं कृपा प्राप्त हाती है । शनि जो कि भाग्य एवं मुश्किलों का कारक होता है, बृहस्पति के संयोग से जातक के जीवन में शुभ फल प्रदान करता है । वैसे ही राहु अथवा केतु जो कि अशुभ ग्रह माने जाते हैं, यदि 4थे घर में स्थित हो या फिर चंद्र के साथ किसी भी घर में हो, तो वह जातक को कोई हानि नहीं पहुंचाते । धर्मी टेवा में अशुभ ग्रहों कि अशुभता तथा सारी समस्याओं का अंत हो जाता है ।

## निष्कर्ष

आपकी पत्री में धर्मी टेवा हैं ।

## रतांध ग्रह / अर्द्ध-अंधे ग्रह

लाल किताब के अनुसार कुछ कुन्डली में ग्रहों की स्थिती अनुकूल होने पर भी वह शुभ फल प्रदान नहीं करते । इस प्रकार का टेवा व्यावसायिक जीवन, मन की शांति एवं ग्रहस्थ जीवन के लिए अशुभ सिद्ध होते हैं । इस प्रकार के टेवे (रतांध ग्रह) उस इन्सान कि तरह होते हैं जो दिन में देख सकते हैं परंतु रात्रि में अंधे हो जाते हैं ।

यदि टेवा में 4थे घर में सूर्य और 7वें घर में शनि स्थित हो तो वह अर्द्ध-अंधा टेवा कहलाता है । ऐसी स्थिती में शनि अपनी दसवीं पूर्ण दृष्टि से सूर्य को प्रभावित करता है । शनि की दृष्टि सूर्य पर पड़ने से सूर्य के शुभता, अशुभता में बदल जाती है क्योंकि शनि, 7वें घर में होने से बहुत शक्तिशाली हो जाता है । शनि कि स्थिती से नवम, प्रथम तथा चतुर्थ भाव (जो कि भाग्य, स्वास्थ्य तथा सुख के स्थान हैं) भी प्रभावित होते हैं और उनके शुभ फल अशुभता में

परिणत हो जाते हैं ।

अतः ऐसी स्थिति में सूर्य के उपायों कि कोई मान्यता नहीं है । शनि के अशुभ फलों को नष्ट करने के लिए, जातक को मात्र शनि के उपायों का ही पालन करना चाहिए ।

### निष्कर्ष

आपकी पत्री में रतांध ग्रह / अर्द्ध-अंधे ग्रह से प्रभावित नहीं हैं ।

## अंधा ग्रह

कुण्डली में दशम भाव का बहुत महत्व होता है क्यों कि यह भाव कर्म से सम्बन्धित होता है । शारीरिक तौर पर यह भाव हड्डियाँ, पीठ तथा घुटनो के जोड़ से सम्बन्धित है । इस भाव से ओहदा, कीर्ति, उद्योग, व्यापार, बड़ी पदवी की प्राप्ति, अधिकार, नौकरी, राज्य, सत्ता, ऐश्वर्य-भोग एवं प्रतिष्ठा का विचार किया जाता है ।

इस से सम्बन्धित रोग एवं विकार चर्म रोग तथा घुटनो का दर्द है । यदि टेवा में, 10वें घर में कोई भी ग्रह न हो अर्थात् खाली हो या फिर 10वें घर में शत्रु ग्रह स्थित हो तो वह अंधा टेवा कहलाता है ।

उदाहरण के तौर पर चंद्र-केतु, शनि-सूर्य, सूर्य-राहु आदि शत्रु ग्रह हैं । इस तरह के ग्रह 10वें भाव में होने से, अपना प्रभाव दूसरे ग्रहों कि शुभता पर डालते हैं और वह अशुभ फल में परिणत हो जाते हैं ।

### निष्कर्ष

आपकी पत्री में अंधा ग्रह से प्रभावित नहीं हैं ।

## नाबालिग टेवा

लाल किताब के अनुसार चंद्र कुण्डली कुछ हालतो में बारह साल की उम्र तक नाबालिक टेवे होते हैं । इस तरह कि कुण्डली वाले जातक की किस्मत 12 साल तक शक्की होती है । ऐसे बालक के जीवन पर 12 साल तक, कुण्डली का नहीं बलकि उसके पिछले जन्म के भाग्य के असर का प्रभाव रहता है । इस तरह कि कुण्डली के ग्रहों का प्रभाव उस नाबालिक के समान होता है, जो अपने परिवार के बड़ों पर निर्भर हैं और अपने बल पर ज्यादा कुछ हासिल नहीं कर सकता । वैसे ही नाबालिग टेवा में ग्रहों की स्थिती अनुकूल होने पर भी वह अपना पूर्ण शुभ फल प्रदान नहीं कर पाते ।

यदि टेवा में प्रथम, चतुर्थ, सप्तम और दशम भाव (केंद्र स्थान) में कोई भी ग्रह न हो अर्थात् खाली हो अथवा उनमें सिर्फ पापी ग्रह (शनि, राहु या केतु) हो, या फिर इनमें से किसी स्थानों में अकेला बुध स्थित हो, तो वह नाबालिग ग्रहों का टेवा कहलाता है । लाल किताब के अनुसार, नाबालिग टेवा वाले जातक के जीवन पर हरेक ग्रह का प्रभाव, प्रत्येक वर्ष, 12 साल की आयु तक निम्नलिखित अनुसार पड़ता है ।

जातक को अपने जीवन पर इन ग्रहों से पड़ने वाले अशुभ फलों को शुभ फल में परिणत करने के लिए प्रत्येक वर्ष, उन ग्रहों का उपाय करना चाहिए ।

### निष्कर्ष

आपकी पत्री में नाबालिग ग्रहों से प्रभावित नहीं हैं ।

जातक की आयु	प्रभाव डालने वाला घर
1	सांतवें घर के ग्रह
2	चौथे घर के ग्रह
3	नौवें घर के ग्रह
4	दसवें घर के ग्रह
5	ग्यारहवें घर के ग्रह
6	तीसरे घर के ग्रह
7	दूसरे घर के ग्रह
8	पांचवें घर के ग्रह
9	छठे घर के ग्रह
10	बारहवें घर के ग्रह
11	पहले घर के ग्रह
12	आठवें घर के ग्रह

## पैतृक ऋणभार एवं उपाय

कुण्डली में कुछ ग्रहों की स्थिति अनुकूल न होने के कारण जातक अपने जीवन में कई प्रकार से ऋणी हो जाता है । इस स्थिति में जातक के विकास पर भी असर होता है क्योंकि उन दुषित ग्रहों के प्रभाव से शुभ ग्रह भी अपना अनुकूल फल देना बंद कर देते हैं । इसलिए इस तरह कि कुण्डली वाले जातको को चाहिए कि वह इन ऋण भार से अपने आप को मुक्त करें ताकि ग्रहों के शुभ फल पा सकें एवं अपना शेष जीवन सुख पूर्वक व्यतीत कर सकें । नीचे ऋणों के कई प्रकार एवं उनके लक्षण दिए गए हैं जिससे जातक के जीवन पर असर पड़ सकता है । साथ में ऐसी स्थिति के हाने पर उनके उपाय भी दिए गए हैं ।

### पितृ ऋण

लक्षण :- लाल किताब के अनुसार यदि जातक की कुण्डली में शुक्र, बुध या फिर राहु, इनमें से कोई भी ग्रह दूसरे, पांचवे, नौवे या बारहवें खाने में स्थित हो तो जातक पर पितृ ऋण होता है ।

पाप का कारण:- घर के पास बने मंदिर को तोड़ देना । पीपल का पेड़ काटना या फिर खानदान के कुल पुरोहित को बदलना या कुल पुरोहित से नाता तोड़ लेना ।

#### उपाय

1. कुल खानदान के हरेक सदस्य जहाँ तक खून का सम्बंध है (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन-बेटी, बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) सबसे बराबर का हिस्सा लेकर के उसी दिन मंदिर में दान कर देना ।
2. पीपल के पेड़ पर 43 दिन लगातार जल चड़ाए ।

#### निष्कर्ष

आपकी पत्री में पितृ ऋण का दोष नहीं है ।

### स्वदोष ऋण

लक्षण :- लाल किताब के अनुसार यदि जातक की कुण्डली में शुक्र, शनि, राहु या फिर केतु पांचवे खाने में स्थित हो तो जातक पर स्वदोष ऋण होता है ।

पाप का कारण:- कुल के पुराने रस्मों-रिवाजों का पालन न करना या नास्तिक होना ।

## पैतृक ऋणभार एवं उपाय

### उपाय

1. कुल खानदान के हरेक सदस्य जहाँ तक खून का प्रभाव हो सबका बराबर का हिस्सा लेकर के सूर्य या विष्णू यज्ञ करना या हवन करना ।

### निष्कर्ष

आपकी पत्नी में स्वदोष ऋण का दोष नहीं है ।

### मातृ ऋण

लक्षण :- लाल किताब के अनुसार यदि जातक की कुण्डली में केतु चौथे खाने में स्थित हो तो जातक पर मातृ ऋण होता है ।

पाप का कारण:- अपनी संतान पैदा होने के बाद माता को दरबदर जुदा करना, दुर्व्यवहार करना या दुःखी करना या उनका खुद ही दुःखी हो जाने पर लापरवाही करना, उनके सुख-दुःख का ख्याल नहीं खरना ।

### उपाय

1. चाँदी का सिक्का लेकर उसे दरिया या बहते पानी में बहाया जाए ।

### निष्कर्ष

आपकी पत्नी में मातृ ऋण का दोष नहीं है ।

### भ्रातृ/पारिवारिक ऋण

लक्षण :- लाल किताब के अनुसार यदि जातक की कुण्डली में बुध अथवा शुक्र प्रथम अथवा अष्टम खाने में स्थित हो तो जातक पर भ्रातृ/पारिवारिक ऋण होता है ।

पाप का कारण:- किसी के पके हुए खेत को आग लगा देना या किसी का मकान बनने पर आग लगा देना । भाईयों या रिश्तेदारों से नफरत करना या बच्चों के जन्म दिन एवं पारिवारिक त्यौहार या खुशी के समय दूर रहना ।



## पैतृक ऋणभार एवं उपाय

---

उपाय

1. किसी खेराती संस्था को दवाईयाँ दान करें ।

निष्कर्ष

आपकी पत्नी में भ्रातृ/पारिवारिक ऋण का दोष नहीं है ।

### स्त्री ऋण

लक्षण :- लाल किताब के अनुसार यदि जातक की कुण्डली में सूर्य, चंद्र या फिर राहु इनमें से कोई भी ग्रह दूसरे अथवा सातवें खाने में स्थित हो तो जातक पर स्त्री ऋण होता है ।

पाप का कारण:- अपनी पत्नी या कुल की किसी स्त्री का किसी लालच या सम्बंध के कारण मार देना या किसी स्त्री को बच्चे जनने की हालत में किसी लालच के कारण जान से मार देना ।

उपाय

1. 100 गायों को एक ही दिन में चारा खिलाएँ ।

निष्कर्ष

आपकी पत्नी में स्त्री ऋण का दोष नहीं है ।

### कन्या/बहन ऋण

लक्षण :- लाल किताब के अनुसार यदि जातक की कुण्डली में चंद्र तीसरे अथवा छठे खाने में स्थित हो तो जातक पर कन्या/बहन का ऋण होता है ।

पाप का कारण:- किसी की लड़की या बहन की हत्या करना या हद से ज्यादा जुल्म करना । बहन का ख्याल न रखना या किसी लड़की को धोखा देना ।

उपाय

## पैतृक ऋणभार एवं उपाय

1. पीले रंग की कौड़ियां खरीद कर एक जगह इकट्ठी करके जलाकर राख कर उसी दिन दरिया या बहते पानी में बहा दे ।

### निष्कर्ष

आपकी पत्नी में कन्या/बहन ऋण का दोष नहीं है ।

### क्रूर/जालिमाना ऋण

लक्षण :- लाल किताब के अनुसार यदि जातक की कुण्डली में सूर्य, चंद्र या फिर मंगल, इनमें से कोई भी ग्रह दशम अथवा ग्यारहवें खाने में स्थित हो तो जातक पर क्रूर/जालिमाना ऋण होता है ।

पाप का कारण:- किसी का मकान अथवा जमीन धोखेसे ले लेना, उसकी कीमत किसी तरह भी अदा न करना ।

### उपाय

1. 100 मजदूरों को अथवा अलग-अलग जगह की 100 मछलियों को एक ही दिन में खाना खिलाएँ ।

### निष्कर्ष

आपकी पत्नी में क्रूर/जालिमाना ऋण का दोष है । ऋण मुक्ति के लिए कृपया ऊपर दिए उपाय का पालन करें ।

### अजन्म/पैदा न हुए का ऋण

लक्षण :- लाल किताब के अनुसार यदि जातक की कुण्डली में सूर्य, शुक्र अथवा मंगल, इनमें से कोई भी ग्रह बारहवें खाने में स्थित हो तो जातक पर आजन्मकृत ऋण होता है ।

पाप का कारण:- ससुराल से धोखा या आपसी रिश्तेदारी में धोखा फरेब की घटनाएँ, ऐसे ढंग से कि दूसरों का कुल ही तबाह हो गया हो ।

## पैतृक ऋणभार एवं उपाय

---

### उपाय

1. एक नारियल लेकर उसी दिन दरिया या बहते पानी में बहा दे ।

### निष्कर्ष

आपकी पत्री में अजन्म/पैदा न हुए का ऋण का दोष नहीं है ।

### प्रकृती ऋण

लक्षण :- लाल किताब के अनुसार यदि जातक की कुण्डली में चंद्र या फिर मंगल छटे खाने में स्थित हो तो जातक पर प्रकृती/कुदरती ऋण होता है ।

पाप का कारण:- कुत्तों को मारना या मरवाना, बदचलनी या अपने भतीजे से धोखा करना, ऐसे ढंग से कि हद से अधिक तबाही हो जाए ।

### उपाय

1. 100 कुत्तों को एक ही दिन में खाना खिलाएँ ।
2. किसी विदवाह की सेवा करके उसका आशीर्वाद प्राप्त करें ।

### निष्कर्ष

आपकी पत्री में प्रकृती ऋण का दोष नहीं है ।

## सूर्य ग्रह का प्रभाव

इस घर में अकेला बैठा सूर्य विरासत, पिता का सुख, आँखों की रोशनी तथा लोहे की चीजों पर बुरा असर दिया करता है । ससुराल में रहना या बिजली से सम्बन्धित कार्य करना आपके लिए अनुचित है क्योंकि यह शनि का घर है इसलिए नीले और काले कपड़े शरीर पर धारण करना मंदा असर देगा । यथा सम्भव भूरी भैंस को चारा इत्यादि खिलाकर सेवा करें, ।

## उपाय

1. सिर पर हमेशा सफेद टोपी पहनें ।
2. अपनी परेशानियों को दूसरों को न बताएं ।
3. बहते हुए पानी में ताँबे का पैसा बहाएं ।

## चन्द्र ग्रह का प्रभाव

आपकी जन्म कुण्डली में चंद्रमा बारहवें घर में स्थित होने से आपकी अधिक मनोकामनाएँ पूर्ण नहीं होने की सम्भावनाएँ हो सकती हैं । मानसिक उलझनों की वजह से आपको अच्छी नींद नहीं आ सकती है । साधारण रूप से शिक्षित होने पर भी आप समझदार होंगे । आप धनैश्वर्य से कम समृद्ध रहेंगे । जल तथा स्त्रियों से जीवन में भय रहेगा अतः सावधानी बर्ते । आप अधिक खर्च करेंगे एवं बढ़ा-चढ़ा कर बातें करेंगे तथा लोगों से अधिक वार्तालाप करने में रुचि लेंगे । आप संघर्षमय जीवन व्यतीत कर सकते हैं तथा जीवन-साथी की आँखों में परेशानी हो सकती है ।

## उपाय

1. प्रत्येक कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व थोड़ा जल अवश्य पीएं ।
2. घर की छत के नीचे हैण्डपम्प लगवाएं ।
3. चार चांदी के चौकोने टुकड़े वर्षा के पानी में डालकर घर में रखें ।

### मंगल ग्रह का प्रभाव

आपकी जन्म पत्रिका के पहले खाने में स्थित मंगल यह उजागर करता है कि बुराई से दूर रहने पर आपका सितारा बुलंद होगा । आपके माथे पर चोट का निशान हो सकता है । आप प्रत्येक व्यक्ति के साथ भलाई करते हैं । इस घर का मंगल मांगलिक योग बना रहा है । जिसकी वजह से आपमें क्रोध स्वाभाविक रूप से आ जाता है । आप साधु संतों की संगति के शौकीन हैं । आपको मुफ्त में चीजें मिलती रहती हैं । वाहन का सुख मनोनुकूल नहीं मिलेगा । सलाहकार का कार्य करने से आपको लाभ होगा ।

### उपाय

1. कभी भी झूठ न बोलें ।
2. किसी से कभी भी कोई चीज मुफ्त न लें ।
3. भोजन का लंगर कराते रहें ।
4. साधु-सन्यासियों की संगति न करें ।

### बुध ग्रह का प्रभाव

आपकी जन्म पत्रिका के इस घर में बुध की स्थिति यह दर्शाती है कि आप बात-चीत की कला में अत्यंत प्रवीण होंगे । आप अपना हर कार्य प्रेम पूर्वक सिद्ध कर लेते हैं । आपके लिए माँसाहार एवं शराब का प्रयोग जहर के बराबर है । आपकी समुद्र पार की यात्रा अवश्य होगी । आपकी नजर में दोष उत्पन्न हो सकता है ।

### उपाय

1. शराब एवं माँसाहार से दूर रहें ।
2. मजदूरों को भोजन करवाते रहें ।
3. घर में मनीप्लान्ट का पौधा न रखें ।

### गुरु ग्रह का प्रभाव

आपकी जन्म कुण्डली में बृहस्पति प्रथम भाव में होने से आप समाज में मान-सम्मान पाएँगे । धार्मिक विचारों के होने से आप खूब तरक्की करेंगे । आयु का हर आठवाँ साल यादगार रहेगा । राहु की स्थिति खराब होने पर पैरों में कष्ट हो सकता है तथा पिता को भी कष्ट हो सकता है । विवाह के बाद आपकी आर्थिक स्थिति बेहतर होती चली जाएगी ।

### उपाय

1. गाय को चारा खिलाते रहें ।
2. नाक हमेशा खुश्क रखें ।
3. पत्नी का उचित मान सम्मान करें ।
4. माथे पर हमेशा हल्दी का तिलक लगाएँ ।

### शुक्र ग्रह का प्रभाव

आपकी जन्म कुण्डली में शुक्र खाना नं. ग्यारह में होने से आपको गुप्त रोगों के प्रति सावधानी रखनी चाहिए तथा गलत संगति में नहीं पड़ना चाहिए । शादी के बाद काली गाय का दान करें, । आपको कन्या संतान की प्राप्ति अधिक हो सकती है । आपकी धर्मपत्नी सौभाग्यवती हैं एवं देवी की उपासना करने से आपको हर तरफ से लाभ होगा । जीवन में आप कई आय स्रोतों से धन प्राप्त करेंगे । आपकी स्त्री के सहयोग से आपके धन में वृद्धि होगी ।

### उपाय

1. प्रत्येक कार्य को करने से पूर्व अपने पैर अवश्य धोएं ।
2. शनि की शान्ति के लिए सरसों का तेल दान करें ।
3. रुई अथवा दही का दान करें ।
4. कपिला गाय का पालन करें ।

### शनि ग्रह का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका के पहले खाने में शनि की स्थिति यह दर्शाती है कि आपकी उत्पत्ति के पश्चात् आपकी पारिवारिक जायदाद में अल्पता होने की सम्भावना रहेगी । शिक्षा के क्षेत्र में कुछ अड़चने आएँगी तथा आपको प्रारंभिक अवस्था में स्वास्थ्य कष्ट होने की आशंका रहेगी । आपकी माताजी को भी कष्ट हो सकता है तथा राजपक्ष सरकार की ओर से मंदा फल रहेगा । आपको अपने पारम्परिक काम से कम लाभ रहेगा । आप लंबे समय तक जीवित रहेंगे । आपका भाग्य धीरे-धीरे उन्नत होगा ।

### उपाय

1. शराब मांसाहार से परहेज रखें ।
2. वट (बरगद) वृक्ष की जड़ में दूध डालें ।
3. तेल काली दाल, काला कपड़ा, लोहा दान करें ।

### राहु ग्रह का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका के पहले खाने में राहु होने से आप समृद्धशाली एवं राजपक्ष के किसी बड़े पद अधिकार को प्राप्त करेंगे । 43 वर्ष की अवस्था में आपके लाभ तथा अधिकार में वृद्धि होगी । आप अपने दुश्मनों के भय से ग्रस्त रह सकते हैं । आपके जीवन में ऊँची एवं नीची स्थिति बनी रहेगी । आप जीवन में कई काम बदलेंगे तथा भ्रमण करते रहेंगे । आपके जीवन-साथी का स्वास्थ्य कमजोर रहेगा तथा परस्पर विचारों में भी कुछ मतभेद रहेंगे । 22वें तथा 42 वें वर्ष में पितृकष्ट तथा धन हानि होने की सम्भावना रहेगी ।

### उपाय

1. नीले, काले रंग के वस्त्र धारण न करें ।
2. बहते जल में नारियल प्रवाह करें ।
3. नीले तथा काले कपड़ों का दान करें ।

### केतु ग्रह का प्रभाव

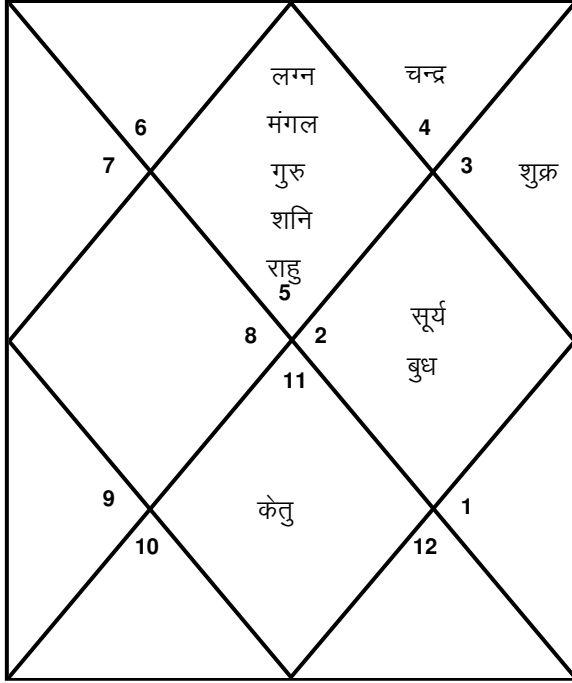
सातवें खाने में केतु की स्थिति होने से आप प्रारंभ से ही धन कमाने में लग जाएंगी । संतान के जन्म से लाभकारी असर रहेगा । आप अपनी जीविका के द्वारा अच्छा लाभ प्राप्त करेंगे । आपके पास सब कुछ होने पर भी आप संतुष्ट नहीं रहेंगे । आपके स्वभाव में चिड़चिड़ापन होगा । जीवन-साथी की ओर से चिन्तित रहेंगे एवं दोनों के मध्य मतभेद आदि होने की सम्भावना रहेगी । 35 वें वर्ष से आपका भाग्य अधिक साथ देने लगेगा ।

### उपाय

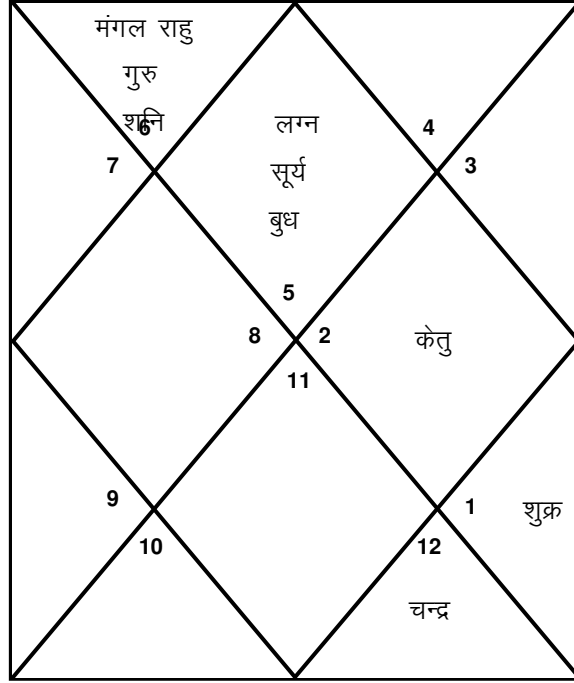
1. अभिमान न करें ।
2. चांदी का छल्ला धारण करें ।
3. माथे पर केशर का तिलक लगाएं ।
4. किसी को धोखा न दें एवं चरित्र अच्छा रखें ।



जन्म लग्न



लाल किताब कुण्डली



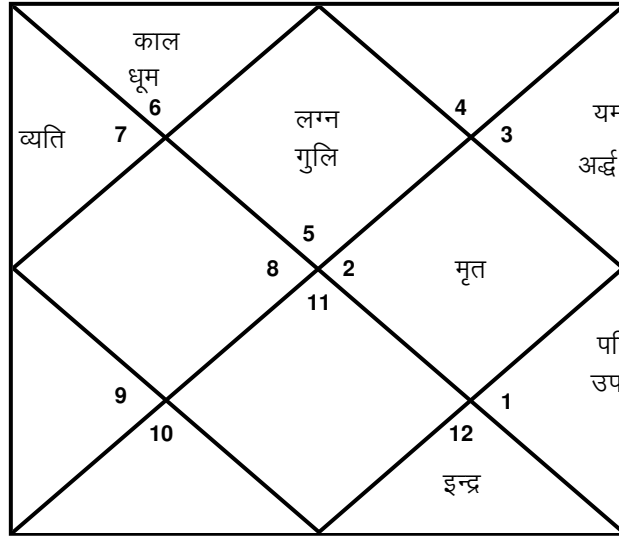
लाल किताब उपाय

ग्रह	उपाय
सूर्य	सूर्य देव को दक्षिणमुखी शंख द्वारा जल चढ़ाए ।
चन्द्र	बुजुर्गों के नाम पर दूध का दान करें । श्राद्ध करें ।
मंगल	भाग्यार्कषण हेतु लाल रंग का साफ रुमाल अपने पास रखें ।
बुध	अण्डों का सेवन न करें ।
गुरु	माथे पर हल्दी अथवा केसर का तिलक लगाएँ । यदि आपके घर / दफ्तर के पास गड्ढे हैं तो उन्हें फौरन भरवा दें ।
शुक्र	चाँदी के नौ चकौर टुकड़े नीम के तने में दबाएं ।
शनि	आर्थिक समस्याओं से मुक्ति पाने के लिए माथे पर दही का तिलक लगाएँ ।
राहु	गले में चाँदी की चेन में चाँदी की गोल गोली पहनें ।
केतु	घर / दफ्तर में चाँदी की गोल डिब्बी में शहद भरकर रखें ।

## उपग्रह एवं आरुढ़

उपग्रह	राशि	अंश	नक्षत्र	चरण
लग्न	सिंह	10 08 23	मघा	4
गुलिक	सिंह	07 49 18	मघा	3
काल	कन्या	00 17 28	उ फाल्गुनी	2
मृत्यू	वृष	04 31 30	कृतिका	3
यमघंटक	मिथुन	23 51 16	पुनर्वसु	2
अर्द्धग्रहर	मिथुन	00 47 25	मृगशिरा	3
धूम	कन्या	19 09 47	हस्त	3
व्यतिपात	तुला	10 50 13	स्वाती	2
परिवेश	मेष	10 50 13	अश्विनी	4
इन्द्रचाप	मीन	19 09 47	रेवती	1
उपकेतू	मेष	05 49 47	अश्विनी	2

### उपग्रह



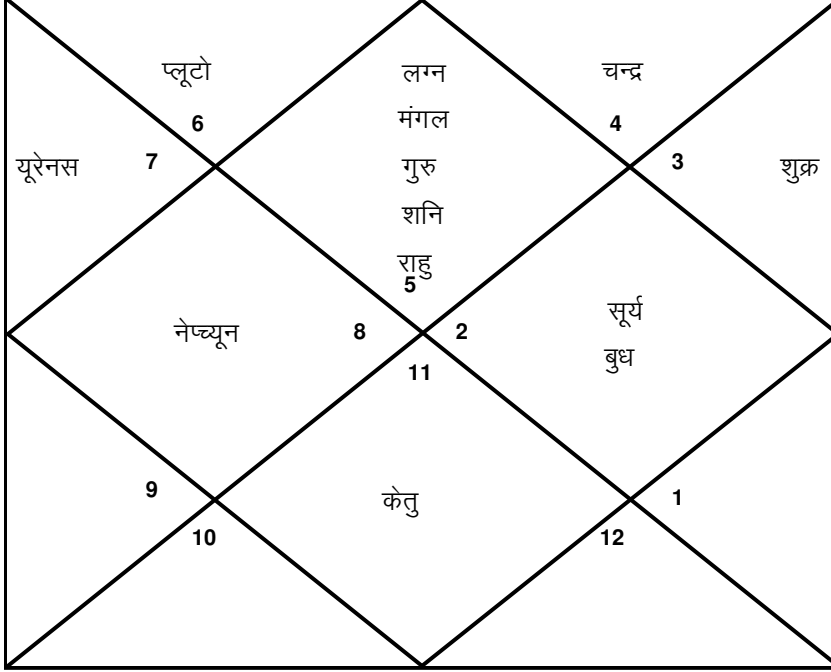
### विशेष लग्न

भाव लग्न	वृश्चिक	25:19:08	64वां नवमांश	मीन
होरा लग्न	वृष	13:11:17	22वां द्रेष्काण	कर्क
घटिका लग्न	तुला	21:26:55	इन्दु लग्न	तुला
बीज स्फुट	वृश्चिक	21:57:19		
प्राणपद	वृश्चिक	08:49:47		

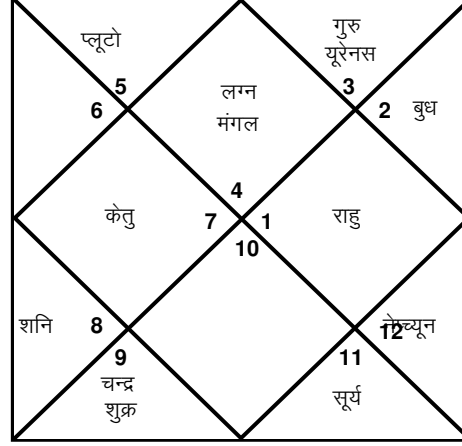
## चर कारक

आत्म	अमात्य	भ्रातृ	मातृ	पुत्र	ज्ञाति	दारा
शनि	चन्द्र	बुध	मंगल	शुक्र	गुरु	सूर्य
26 37	18 51	14 08	11 44	08 36	07 31	05 49

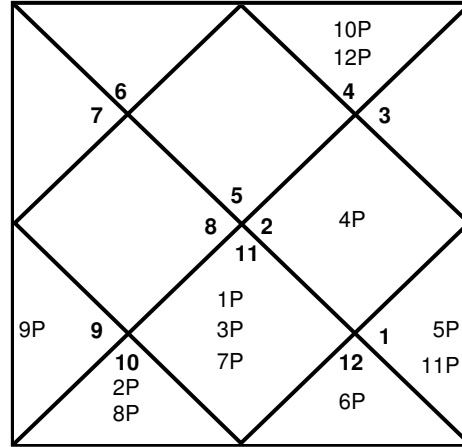
## जन्म लग्न



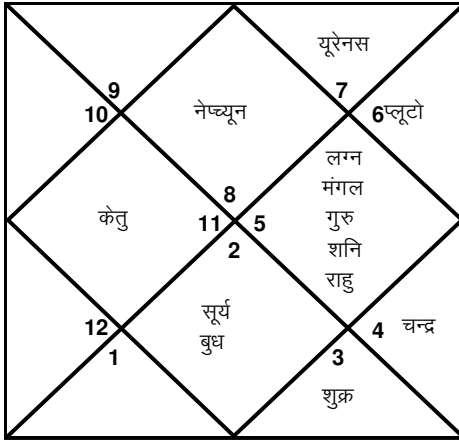
## नवमांश



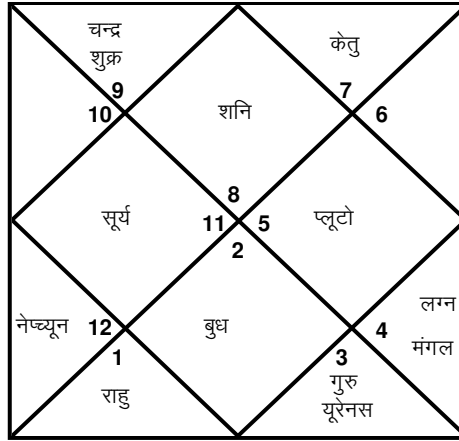
## पद कुण्डली



## कारकांश कुण्डली



## स्वांश कुण्डली



## जैमिनी दृष्टि

सूर्य	चन्द्र
चन्द्र	सूर्य, बुध, केतु
बुध	चन्द्र
केतु	चन्द्र

## चर दशा

सिंह	3 Yr 20/05/1980 - 20/05/1983	धनु	8 Yr 20/05/2004 - 20/05/2012	मेष	4 Yr 20/05/2030 - 20/05/2034
कन्या	4 Yr 20/05/1983 - 20/05/1987	मकर	5 Yr 20/05/2012 - 20/05/2017	वृष	1 Yr 20/05/2034 - 20/05/2035
तुला	8 Yr 20/05/1987 - 20/05/1995	कुम्भ	6 Yr 20/05/2017 - 20/05/2023	मिथुन	11 Yr 20/05/2035 - 20/05/2046
वृश्चिक	9 Yr 20/05/1995 - 20/05/2004	मीन	7 Yr 20/05/2023 - 20/05/2030	कर्क	12 Yr 20/05/2046 - 20/05/2058

## 1. मुसलयोग

यदि लग्न स्थिर राशि में हो तथा कई ग्रह स्थिर राशि में हो तो मुसल योग होता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक घमंडी, मानी एवं धनी होते हैं। यह जातक ज्ञानी, विद्वान एवं राजप्रिय होते हैं। इस योग के जातक विख्यात तथा स्थिर बुद्धि के होते हैं। उनके अनेक पुत्र होने की संभावना होती है। वह विश्वसनीय, ईमानदार, विचारों में दृढ़, निश्चित तथा स्थायित्व युक्त होते हैं। यह जातक जिद्दी एवं अडियल, शीघ्र निर्णय लेने में असमर्थ तथा परिवर्तन स्वीकार करने में कुछ कठिनाई महसूस करेंगे।

## 2. आकृति दण्ड योग

दशम से लग्न स्थान तक सभी ग्रह हो तो दण्ड योग होता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक निर्धन, दुखी, सुखों से वंचित, मित्र एवं रिश्तेदारों से विहीन, निर्दय होते हैं।

## 3. संख्या केदार योग

सभी ग्रह जब चार भावों में हो तो केदार योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक सत्यवादी, धनी, सुखी, दूसरों पर परोपकार करने वाले व किसान होते हैं।

## 4. सुनफा योग

सूर्य के अतिरिक्त दूसरा कोई भी ग्रह चन्द्रमा से द्वितीय स्थान में हो तो सुनफा योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक शाही जीवन यापन करने वाले, धनी, प्रतिष्ठित, सुखी,

स्वपरिश्रम के बल पर धन कमाने वाले तथा परोपकारिक गुण से युक्त होते हैं।

### 5. सुनफा (मंगल) योग

चन्द्रमा से द्वितीय स्थान में मंगल हो तो सुनफा (मंगल) योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक धैर्यवान, पराक्रमी, निडर, राजा के समान धनी, दुष्ट स्वभाव के तथा दिखावटिपन के विरोध करने वाले होते हैं।

### 6. सुनफा (गुरु) योग

चन्द्रमा से द्वितीय स्थान में गुरु हो तो सुनफा (गुरु) योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक शास्त्रों में निपुण, सर्वज्ञानी, सलाहकार, यश व कीर्ति प्राप्त करने वाले, धनी एवं ऊँचे कुल से सम्बन्धित होते हैं।

### 7. सुनफा (शनि) योग

चन्द्रमा से द्वितीय स्थान में शनि हो तो सुनफा (शनि) योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक विद्वान, चतुर, प्रतिष्ठित, धनी एवं सुखी होते हैं। यह योग जातक की माता के लिए अशुभ माना जाता है।

### 8. अनफा योग

सूर्य के अतिरिक्त दूसरा कोई भी ग्रह चन्द्रमा से द्वादश स्थान में हो तो अनफा योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक धनी, अच्छे स्वास्थ्य व भौतिक सुख ऐश्वर्य से युक्त, प्रतिष्ठित, भाषण में निपुण, कुशल, आकर्षक व्यक्तित्व के एवं सुखी होते हैं।

## 9. अनफा (शुक्र) योग

चन्द्रमा से द्वादश स्थान में शुक्र हो तो अनफा (शुक्र) योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक लोगों को अपनी ओर आकर्षित करने वाले, वासनाप्रिय, मधुरभाषी, धनवान एवं भौतिक सुख से युक्त होते हैं।

## 10. दुरुधरा योग

सूर्य के अतिरिक्त दूसरा कोई भी ग्रह चन्द्रमा से द्वितीय तथा द्वादश स्थान में हो तो दुरुधरा योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक तर्क सम्बन्धि वार्ता में चतुर, विख्यात, विद्वान, धैर्यवान, ईमानदार, धनी, भूमि तथा वाहन के स्वामी, दानी एवं वासनाप्रिय होते हैं।

## 11. दुरुधरा योग (गुरु/शुक्र)

चन्द्रमा से द्वितीय तथा द्वादश स्थान में गुरु/शुक्र हो तो यह योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक विद्वान, पराक्रमी, वफादार, ऐश्वर्य तथा वैभव से युक्त, प्रतिष्ठित तथा माननीय होते हैं।

## 12. उत्तमदि (वरिष्ठ) योग

सूर्य से अपोक्लिम (3, 6, 9, 12) में चन्द्रमा हो तो वरिष्ठ योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक धन, ज्ञान, कुशलता व यश उत्तम रूप से प्राप्त करते हैं तथा इनके फल प्रचुर मात्रा में भोगते हैं।

### 13. वेशि योग

चन्द्रमा के अतिरिक्त दूसरा कोई भी ग्रह सूर्य से द्वितीय स्थान में हो तो वेशि योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक लम्बे, ईमानदार, आलसी, दानी, सत्यवादी, अच्छी स्मरण शक्ति के तथा सामान्यतया धनी होते हैं।

### 14. वेशि योग (शुभ)

चन्द्रमा के अतिरिक्त दूसरा कोई भी शुभ ग्रह सूर्य से द्वितीय स्थान में हो तो वेशि शुभ योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक वार्ता में चतुर, धनवान तथा अपने विरोधियों पर विजय प्राप्त करने वाले हाते हैं।

### 15. वेशि योग (शुक्र)

सूर्य से द्वितीय स्थान में शुक्र हो तो वेशि (शुक्र) योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक माननीय, विख्यात, निडर तथा अच्छे चरित्र के होते हैं।

### 16. उभयचर योग

चन्द्रमा के अतिरिक्त दूसरा कोई भी ग्रह सूर्य से द्वितीय एवं द्वादश स्थान में हो तो उभयचर योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक बलवान, जिम्मेदार, विद्वान, आकर्षक व्यक्तित्व तथा भौतिक सुख ऐश्वर्यों का सुख प्राप्त करते हैं।

### 17. अमला कीर्तियोग

लग्न से दशम स्थान में शुभ ग्रह स्थित हो तो यह योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक माननीय, दानशील, दयावान, परोपकारी तथा शारीरिक सुख व भोग प्राप्त करते हैं।

## 18. पर्वत योग

केन्द्र में शुभ ग्रह स्थित हो तथा 6ठे एवं 8वें स्थान में कोई ग्रह न हो या मात्र शुभ ग्रह हो तो पर्वत योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक विख्यात, प्रतिष्ठित, भाग्यवान, धनी, दानशील, विद्वान, वासनाप्रिय तथा विवेचना शक्ति से युक्त होते हैं।

## 19. कर्मजीव योग

लग्न या फिर चन्द्रमा से 10वें स्थान में बुध हो तो कर्मजीव योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक व्यवसाय के रूप में अधिकतर लेखाकार, कविता, कलात्मक कार्य, चित्रकार, शिल्पकार तथा वास्तुकला का व्यापार करते हैं। यह जातक अपने किसी मित्र द्वारा भी आजीविका प्राप्त कर सकते हैं।

## 20. कर्मजीव योग

लग्न, चन्द्रमा या फिर सूर्य से 10वें स्थान में गुरु की युति या दृष्टि हो तो कर्मजीव योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक व्यवसाय के रूप में अधिकतर विद्वानों, ज्ञान, कानून विभाग, मन्दिरों, तीर्थ यात्रा तथा धर्म आदि से सम्बन्धित कार्यों का व्यापार करते हैं।



## 21. कर्मजीव योग

लग्न, चन्द्रमा या फिर सूर्य से 10वें स्थान में शुक्र की युति या दृष्टि हो तो कर्मजीव योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक व्यवसाय के रूप में अधिकतर रत्नों, गाय व आदि भेड़ों तथा सौंदर्य तथा अलंकरण आदि की वस्तुओं से सम्बन्धित कार्य का व्यापार करते हैं।

## 22. नेत्रदोश योग

6, 8 एवं 12वें भाव में शुभ ग्रह तथा 10वें भाव में सूर्य हो तो नेत्रदोश योग बनता है।

## 23. अमर योग

सभी अशुभ ग्रह केन्द्र में हो तो अमर योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक विस्तृत भूमि के स्वामी होते हैं।

## 24. राज योग

पंचमेश एवं नवमेश में परस्पर सम्बन्ध हो तो राज योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक जीवन में ऊँची तथा अधिकार युक्त प्रतिष्ठित स्थिति प्राप्त करते हैं।

## 25. राज योग

चतुर्थेश व दशमेश, पंचमेश या नवमेश के साथ संयुक्त हो।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक जीवन में ऊँची तथा अधिकार युक्त प्रतिष्ठित स्थिति प्राप्त करते हैं।

## 26. राज योग

शुक्र लग्न में स्थित हो तथा चन्द्रमा/गुरु की युति या दृष्टि हो।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक जीवन में ऊँची तथा अधिकार युक्त प्रतिष्ठित स्थिति प्राप्त करते हैं तथा विख्यात मित्रों से युक्त होते हैं।

## 27. विपरीत विमल योग

बारहवें स्थान के स्वामी की स्थित 6वें, 8वें या 12वें में हो तो यह योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक ईमानदार, सुखी, सदगुणी, आजीविका के लिए उत्तम कार्य करने वाले तथा अच्छे आचरण से युक्त होते हैं।

## 28. जैमिनी राज योग

चन्द्रमा व शुक्र की युति हो या शुक्र की दृष्टि चन्द्रमा पर हो तो जैमिनी राज योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक अत्यन्त वैभवशाली, प्रतिष्ठित तथा जीवन में सफलता व ताकत हासिल करते हैं।

## 29. धन योग (दशा)

नवमेश की युति पंचमेश से हो।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक धन तथा ऐश्वर्य से युक्त होते हैं।

### 30. धन योग

लग्नेश का सम्बन्ध द्वितीयेश, पंचमेश, नवमेश या फिर एक्यदेश से हो।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक धन तथा ऐश्वर्य से युक्त होते हैं।

### 31. धन योग

द्वितीयेश का सम्बन्ध पंचमेश, नवमेश या फिर एक्यदेश से हो।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक धन तथा ऐश्वर्य से युक्त होते हैं।

### 32. धन योग

पंचमेश का सम्बन्ध नवमेश या फिर एक्यदेश से हो।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक धन तथा ऐश्वर्य से युक्त होते हैं।

### 33. कर्मजीव योग

लग्न या फिर चन्द्रमा से सूर्य 10वें स्थान में हो तो कर्मजीव योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक व्यवसाय के रूप में अधिकतर सुगन्धित वस्तुओं, सोना तथा औषधि विक्रय का व्यापार करते हैं।

### 34. शरीर सौख्य योग

लग्नेश, गुरु या शुक्र केन्द्र में स्थित हो तो शरीर सौख्य योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक दीर्घायु, धनवान तथा राजनैतिक क्षेत्र में अच्छा प्रभाव रखने वाले होते हैं।

### 35. देह कष्ट योग

लग्नेश की युति किसी अशुभ ग्रह से हो या फिर उसकी स्थिति अष्टम भाव में हो तो देह कष्ट योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक अधिकतर सांसारिक सुख से वांछित रहते हैं।

### 36. कृशाब्द योग

इस योग में जन्म लेने वाले जातक शारीरिक गठन में कुछ पतले एवं कमजोर तथा शारीरिक कष्ट भोगते हैं।

### 37. सुमुख योग

द्वितीयेश, केन्द्र में हो एवं शुभ ग्रह की दृष्टि हो या फिर शुभ ग्रह की स्थिति द्वितीय भाव में हो तो सुमुख योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक आकर्षक व्यक्तित्व के, दिखने में सुन्दर तथा सुखी होते हैं।

### 38. उत्तम गृह योग

चतुर्थेश की स्थिति केन्द्र या त्रिकोण में व शुभ ग्रह से युक्त हो तो उत्तम गृह योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक विसर्तुत भूमि एवं अनेक मकानों के स्वामी होते हैं।

### 39. एकपुत्र योग

पंचमेश की स्थिति केन्द्र या त्रिकोण में हो तो एकपुत्र योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातकों के सम्भवतः एकमात्र पुत्र/पुत्री होगी।

### 40. सत्कलत्र योग

सप्तमेश या शुक्र से गुरु या बुध की युति या दृष्टि हो सत्कलत्र योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक स्वच्छ हृदय तथा मर्यादित जीवनसाथी से युक्त होते हैं।

### 41. अरिष्ट योग

षष्ठेश की युति या दृष्टि अष्टमेश या द्वादशेश से हो तो अरिष्ट योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक जीवन में शारीरिक अस्वस्थता से पीड़ित रहते हैं।

### 42. व्रण योग

षष्ठेश अशुभ होकर लग्न, अष्टम या दशम भाव में स्थित हो तो व्रण योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक जीवन में अलसर या कैंसर के रोगों से पीड़ित हो सकते हैं।

### 43. पूर्णायु योग

6, 12, 8वें या लग्न में षष्ठेश या द्वादशेश हो तो पूर्णायु योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक दीर्घायु होते हैं।

#### 44. मुकबधिरम्ह योग

द्वादश भाव में चन्द्रमा हो तो मुकबधिरम्ह योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातकों के बाँयीं आँख में रोग या विकृति की सम्भावना है।

#### 45. बंधन योग

कर्क, सिंह या मीन लग्न में पाप ग्रह हो तो बंधन योग बनता है।

#### 46. नेत्रदोश योग

लग्न में षष्ठेश हो तथा शनि की दृष्टि हो तो नेत्रदोश योग बनता है।

#### 47. कुलपमशल योग

पाप एवं शुभ ग्रह केन्द्र में तथा लग्नेश पर चन्द्रमा की दृष्टि न हो तो कुलपमशल योग बनता है।

#### 48. सूर्य बुध योग

सूर्य एवं बुध की युति एक ही भाव में हो तो सूर्य बुध योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक मधुर भाषी, चतुर, विद्वान, सच्चे, धनी, हर कार्य में निपुण तथा प्रतिष्ठित होते हैं।

#### 49. मंगल गुरु योग

मंगल एवं गुरु की युति एक ही भाव में हो तो मंगल गुरु योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक विद्वान, विख्यात, चतुर, शस्त्र में निपुण, शिल्पकार तथा अच्छी स्मरण शक्ति से युक्त होते हैं।

#### 50. मंगल शनि योग

मंगल एवं शनि की युति एक ही भाव में हो तो मंगल शनि योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक पराधीन, झगड़ालू, दोषी, पाखंडी, वार्ता में चतुर, शस्त्रों में निपुण तथा धर्म की ओर लीन रहते हैं।

#### 51. गुरु शनि योग

गुरु एवं शनि की युति एक ही भाव में हो तो गुरु शनि योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक विख्यात, प्रभाववान्, धनाढ्य, कलात्मक तथा मिट्टी की वस्तु का व्यापार करने, एक जगह से दूसरी जगह भटकने तथा अपने जीवनसाथी पर सदैव शक करने वाले होते हैं।

#### 52. मंगल गुरु शनि योग

मंगल, गुरु एवं शनि एक ही भाव में हो।

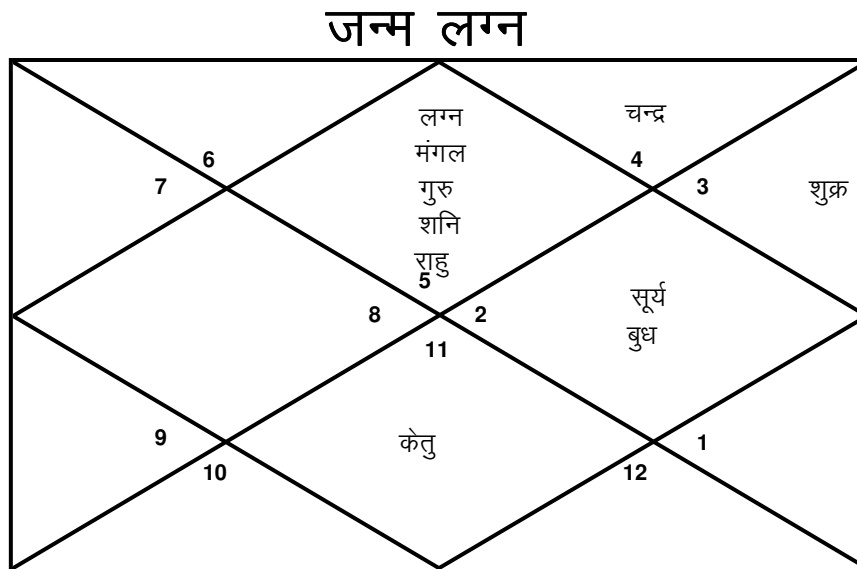
इस योग में जन्म लेने वाले जातक शारीरिक गठन में कुछ पतले, घमंडी, दुष्ट स्वभाव के, मित्रों से वांछित, क्रूर तथा विख्यात होते हैं।



जन्म पत्रियों में कई प्रकार के योग देखने का मिलते हैं जिनके विभिन्न प्रकार के फल होते हैं। कुछ अच्छे योग हैं तो कुछ बुरे। अच्छे योग शुभ फलदायक होते हैं तो बुरे योग अशुभ फलदायक होते हैं। ऐसा ही एक अशुभ फलदायक योग है कालसर्प योग। जब किसी भी जन्मपत्री में सारे ग्रह राहु और केतू के मध्य आ जाते हैं तो उसे कालसर्प योग कहते हैं। प्राचीन ग्रन्थों में प्रत्यक्ष से तो इस योग का वर्णन नहीं मिलता लेकिन इसे नकारा भी नहीं जा सकता।

महर्षि गर्ग, महर्षि पाराशर, महर्षि भृगु, वराह मिहिर आदि ज्योतिषाचार्यों ने कालसर्प योग को स्वीकार किया है। प्राचीन कालदर्शियों ने कालसर्प योग को विशेष महत्व दिया है। उन्होंने राहु-केतू को कार्मिक माना है, राहु पृथ्वी पर काल है और केतू सर्प। प्रायः किसी ने भी इस योग की प्रशंसा नहीं की है। राहु-केतू यद्यपि छाया ग्रह है, इनका अपना कोई शरीर नहीं है, फिर भी ये इतने क्रूर ग्रह हैं कि इनसे निर्मित कालसर्प योग अशुभ फलदायक ही कहलाता है।

आप की कुण्डली कालसर्प योग से ग्रस्त है।



जन्मपत्री में प्रथम भाव से सप्तम भाव के मध्य बने कालसर्प योग में राहू लग्न में तथा केतू सप्तम भाव में होता है तथा शेष सभी ग्रह प्रथम से सप्तम भाव में होते हैं। यह शारीरिक सुख में बाधक, मान, यश, प्रतिष्ठा के लिए काफी कुछ कष्ट देता है। वैवाहिक जीवन में स्त्री सुख का अभाव रहता है। जीवन संघर्षमय रहता है। राहू के प्रथम भाव में होने से ऐसे जातक को सिर दर्द का रोग रहता है, यह धोखा देने वाला होता है, कामुक होता है तथा केतु सप्तम में होने से वैवाहिक जीवन में अशान्ति, जल का भय, साझेदारी में हानि, शारीरिक कष्ट, अति शीघ्र यात्राएं होती हैं। संक्षेप में, ऐसे जातक को प्रथम भाव तथा सप्तम भाव सम्बन्धी बातों में कभी सुख नहीं मिलता।

कालसर्प योग मनुष्य के जीवन में 42 वर्ष तक अनेक बाधाएं पैदा करता है। यहां तक कि कभी कभी उसके बाद भी यह अपना प्रभाव दिखाता रहता है।

संक्षेप में कालसर्प से पीड़ित जातक को सदैव शारीरिक कष्ट उठाने पड़ते हैं। उसके रोग का कभी निदान नहीं हो पाता। विद्यार्जन में बाधाएं उपस्थित होती हैं। उसे प्राप्त शिक्षा का उपयोग उसके जीवन में नहीं होता। संकटों का तांता लगा रहता है। रिश्तेदारों द्वारा विरोध होता है। पति, पुत्र या पत्नी का सुख नहीं मिलता। कोर्ट-कचहरी, झगड़े-मुकदमों में शक्ति व्यय होती है। जेल जाना पड़ता है। मित्र विश्वासघात करते हैं। पिशाच बाधा के कारण कभी कभी कष्ट उठाना पड़ता है। कर्ज बढ़ता जाता है। अतृप्त आत्माओं के कारण अनेक बार कष्ट पहुंचता है। पत्नी, पुत्र या पुत्री का व्यवहार ठीक नहीं होता। पुत्र-पुत्री का विवाह ठीक समय पर नहीं होता। संतान का अभाव रहता है। परिवार के व्यक्ति का वियोग होता है। घर का कोई व्यक्ति किसी कारण घर छोड़कर चला जाता है तो अनेक वर्षों तक उसका पता ही नहीं चलता। परिवार में से कोई डूबकर या दुर्घटना में अकाल मृत्यु को प्राप्त करता है। काम धंधे में कंगाल हो जाता है।

## उपाय

1. कालसर्प अंगूठी जो कि सर्पाकार होती है तथा चान्दी में बनी होती है को धारण करें। इस अंगूठी को प्राण-प्रतिष्ठा के बाद ही पहनें। यह अंगूठी किसी भी योग्य ज्योतिषी से प्राप्त हो जाती है। इस को बुधवार के दिन कनिष्ठिका अंगुली में पहनें। उस दिन सूखा नारियल, सरसों, जौ आदि का दान करें। राहू तथा केतू के मंत्र का भी जाप करें।

2. गणेशजी की पूजा करके सूर्योदय से पहले चान्दी में निर्मित सर्प-सर्पिणी को जोड़ा शिवलिंग पर चढ़ाएं। यह काम भी किसी योग्य कर्मकान्डी पंडित से करवाएं।
3. शिवलिंग पर प्रतिदिन ॐ नमः शिवाय मंत्र की एक माला जप कर जल चढ़ाएं।
4. कन्या को कन्यादान में शुद्ध चांदी की ईंट 20 ग्राम की दें जो कन्या सदा अपने पास रखें। यह उपाय सुखद गृहस्थ जीवन के लिए है।
5. ताजी मूली दान करें।
6. अपने वजन के बराबर कच्चे कोयले बुधवार को साफ बहते पानी में बहाएं।
7. मसूर की दाल और कुछ पैसे प्रातः काल भंगी को दान करें।
8. जौ अपने सिरहाने रखकर प्रातःकाल पक्षियों को दें।
9. घर के प्रवेश द्वार की चौखट पर चांदी का स्वास्तिक लगाएं।
10. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
11. नारियल को समुद्र में बहाएं।
12. सोना, सीसा, स्मंकद्धए काले तिल, नीला वस्त्र दान करें।
13. गोमेद पहनें।
14. एक नारियल तथा एक सिक्का 43 दिन लगातार बहते पानी में बहाएं।
15. नागपंचमी वाले दिन व्रत रखें तथा कालसर्प योग की पूजा करवाएं।

16. कालसर्प यंत्र पास में रखें तथा प्रतिदिन पूजन करें।
17. अपने घर में मोरपंख रखें।
18. जितने वर्ष आपकी आयु है उतने नाग—नागिन के जोड़े प्रत्येक वर्ष अपने जन्म दिन पर बहते पानी में बहाएं, 42 वर्ष तक।
19. हररोज अपने माता—पिता के चरण स्पर्श करके उनका आशीर्वाद लें।
20. किसी भी शुक्लपक्ष की पंचमी या नाग पंचमी को एक जोड़ा नाग—नागिन का किसी सपेरे से खरीदें तथा उन्हें दूध पिला कर उनकी पूजा कर श्रद्धा भाव से उस जोड़े को आजाद कर दें।
21. किसी भी शुक्लपक्ष की पंचमी या नाग पंचमी को एक नाग—नागिन का जोड़ा चांदी में बनवा कर उसे एक दूध से भरे कांसे के बर्तन में छोड़ें। फिर उस कांसे के बर्तन को, उस जोड़े समेत, बहते पानी में प्रवाहित करें।

## सिंह आपका लग्न चिन्ह है

आपका जन्म आग्नेय त्रैगुण्य के पाँचवें चिह्न, उदीयमान सिंह राशि में हुआ है। आपका व्यक्तित्व प्रभावशाली है। आपके बाल हल्के, चेहरा बड़ा व गोल और वर्ण लाल होगा। आप खेलों में एक विश्वसनीय और फुर्तीले प्रतियोगी, नम्रशील महत्वाकांक्षी सम्भवतः क्रोधी प्रकृति के व्यक्ति हैं और माता से दूर रहेंगे। आप जैसे अधिकतर व्यक्तियों का ललाट उन्नत होता है। आपका व्यक्तित्व प्रभावशाली, सौम्य और राजसी होगा। मित्रों और सम्बन्धियों के साथ बहुत आनंद उठाएंगे। आप परियोजना के मुखिया हैं और आपके अधीन कई व्यक्ति हैं। आप खुले और स्पष्ट भाषी व्यक्ति हैं। अपने विचारों में दृढ़, क्रोधी प्रवृत्ति, कला विषयों तथा संगति में रुचि और अपनी योग्यता में विश्वास रखने वाले व्यक्ति हैं। आपकी कम संतान है। आप अपने माता पिता से स्नेह रखते हैं। आपको विभिन्न विचारधाराएँ पसंद हैं। सत्ता व समाज में आपकी अच्छी प्रतिष्ठा है। आपकी शोध में रुचि है। आप अपने विचारों में स्थिर हैं और आपको चापलूसी का शिकार नहीं बनना चाहिए। आप रोमान्टिक हैं और बड़ी कुशलता से अपने साथी को खुश रखते हैं। आप एक आदर्श प्रेमी हैं और आप प्रेम के आवेश में बह सकते हैं। आप बहुत संवेगशील हैं और आपको जीवन में कई सुख आराम प्राप्त हैं। आपका घर बहुत सुन्दर होगा और आप राजसी जीवन बिताएंगे। आपके शाही मित्र होंगे। परिवार व समाज में आपका मान व सम्मान होगा। सत्तापक्ष से उच्च अनुकूलता रहेगी।

चूंकि आप आश्लेषा नक्षत्र में पैदा हुए थे, परिवार के लिए आप मंगलकारी होंगे क्योंकि आप धनी होंगे लेकिन धन का अपव्यय करेंगे। आप अपने माता-पिता तथा अपनी आयु के दूसरे व्यक्तियों के लिए हानिकारक सिद्ध हो सकते हैं। आप निरुद्देश्य इधर-उधर भटकेंगे, पापकर्म करेंगे, कृतघ्न व आत्म-केन्द्रित होंगे और आपके सम्बन्ध अपने मित्रों व सम्बन्धियों से अच्छे नहीं होंगे। आप अपनी दक्षता का प्रयोग संदिग्ध और अनुत्पादक कार्यों में करेंगे और दूसरों को धोखा देने की प्रवृत्ति रहेगी। आपको खाने व पीने का शौक होगा और आपका परिवार बड़ा होगा। आपका यकृत दुर्बल होगा। 33 वर्ष की आयु के बाद आपको लाभ होगा।

## सूर्य ग्रह का प्रभाव

लग्न का स्वामी, दसवें घर में सूर्य बुद्धिमत्ता, सत्ता और समाज से सम्मान, वरिष्ठों की सेवा, प्रसिद्धि और प्रतिष्ठा का द्योतक है। आप प्रसन्नता की ओर अत्यधिक ध्यान देते हैं और इसे पाने के लिए प्रयास करते हैं। आपके पितृ गृह में कतिपय नीरस सम्बन्ध हैं। आपके जीवन में

## लग्नफल एवं ग्रह फल

दुश्चिंताएँ हैं। माँ के लिए विशेष स्नेह है। अपने कठिन परिश्रम से आपका सत्ता और समाज में प्रभाव है। आप सम्पत्ति वृद्धि में ध्यान देते हैं और एक प्रसिद्ध व्यक्ति हैं। आपका व्यवसाय सम्मानित हैं।

आप जनता का प्रतिनिधित्व करते हैं और चुनावों में सफलता प्राप्त करेंगे। सत्ता व समाज का प्रोत्साहन प्राप्त होगा। अपने बुद्धिमत्तापूर्ण कार्यों से आप अपार धन व सम्मान अर्जित करेंगे। अपने व्यवसाय में सफलता प्राप्त करेंगे। आपके पास अपार धन होगा। आप वाहन व सुख – सुविधाएँ प्राप्त करेंगे। आप सम्मानजनक कार्य करेंगे। आपके पुत्र प्रभावशाली होंगे। आप व्यवसाय में सफलता प्राप्त करेंगे। आप परियोजनाओं के प्रमुख होंगे। आप एक कुशल न्यायाधिकारी हैं।

वृष में सूर्य दर्शाता है कि आप बहुत जिद्दी हैं और एक बार विचार बना लेने के बाद उस पर अड़िग रहेंगे। दूसरे आपकी आलोचना करें, यह आपको पसंद नहीं और आप अपनी गलतियों को स्वीकार नहीं करते लेकिन कभी-कभी यदि होशियारी से आपको अपनी गलतियों के बारे में बताया जाए तो आप उन्हें ठीक करने की कोशिश अवश्य करते हैं। आप अधिकारात्मक और धैर्यवान् हैं। आपकी कला तथा विज्ञान में रुचि है। आप ऐशों आराम के शौकीन हैं। आपको वसीयत मिल सकती है। आप भाग्यशाली हैं। आप भौतिकवादी हैं। आपकी अपव्ययी आदतें हैं। चूंकि आप हृदय और यकृत के रोगों से आसानी से ग्रस्त हो जाते हैं अतः आपको सावधान रहना चाहिए।

### चन्द्र ग्रह का प्रभाव

चंद्र के द्वादशेश होकर द्वादश भाव में “अपने भाव में” स्थित होने के फलस्वरूप आप कई सुकृत्य करेंगे। खर्चा आप बहुत करेंगे और बड़ी शान से करते हैं। व्यय पर नियंत्रण करने की आप में शक्ति नहीं है। नाना परिवार से हानि मिलेगी। शत्रुओं से भी विनम्रता से काम निकाल लेंगे। आप थोड़े बैचेन रहते हैं और मन चंचल रहता है।

गूढ़ विज्ञान एवं शरीर के भोगों के आप प्रेमी होंगे। काफी भ्रमण करेंगे। आपको कई पराजय एवं सम्मान हानि सहनी पड़ेगी जिससे आप बहुत दयनीय महसूस करेंगे। आप काफी धन खोयेंगे, ऐसा सम्भावित है। आप, आपकी माता एवं पत्नी भी रुग्ण रहेंगी।

चंद्र कर्क में : आप दीर्घकाय, बड़ी हड्डियों एवं बड़ी बड़ी आँखों वाले व्यक्ति होंगे। चाल आपकी तेज है लेकिन झुक कर चलते हैं। स्त्री वर्ग का आप पर काफी प्रभाव रहेगा। ज्योतिष शास्त्र में आपकी रुचि होगी। खौसी से आप परेशान हो सकते हैं। आपके मित्र श्रेष्ठ

## लग्नफल एवं ग्रह फल

होंगे। कई घरों के आप स्वामी होंगे। पानी एवं बाग बगीचों के आप प्रेमी होंगे। आप धनी एवं प्रभावशाली होंगे। खुशामद से आप शीघ्र प्रभावित होते हैं। द्वितीया, सप्तमी एवं द्वादशी तिथियाँ आपके लिए अशुभ रहेंगी। सिंह मिथुन एवं कन्या जन्म राशि वाले व्यक्ति आपके मित्र होंगे। आग से सावधान रहे। ऊँचे स्थान से गिर कर या पानी में डूब कर दुर्घटना ग्रस्त होने की सम्भावना है। नीच जाति के व्यक्तियों से आपको वैमनस्य रहता है। अपने प्रयत्नों से ही आप अपनी पदवी ऊँची करेंगे। संगीत, चित्रकारिता एवं काव्य के आप प्रेमी होंगे। नदी या समुद्र के निकट आपका वास होगा।

### मंगल ग्रह का प्रभाव

चौथे और नवें गृह के स्वामी, लगन में मंगल, पिता की आज्ञाकारिता, यश, सम्मान और आपके द्वारा परिवार की वृद्धि को प्रदर्शित करता है। आप धार्मिक कार्यशील, कोमल हृदय, बुद्धिमान और राजनीति में वास्तविक रुचि रखने वाले व्यक्ति हैं। आप सर्वाधिक सम्मानित व्यक्तियों में से एक हैं। भाग्य के बल से जमीन और जायदाद की शक्ति प्राप्त करते हैं। जमीन और जायदाद के लिए आप भाग्यशाली समझे जाते हैं और आपकी अपार शक्ति और एक आदर्श माता है। सुख अर्जित करने के साधन आपके पास है। धर्म की ओर ध्यान देते हैं और धर्म की प्रस्तुत शक्ति की सुविधाओं और आमोद-प्रमोद का आनंद लेते हैं। आपका शारीरिक गठन अच्छा है। आप अपना दैनिक कार्य सम्मानित ढंग से करते हैं, जीवन साथी और परिवार के गृह में एक साथ नीरसता अनुभव करते हैं और आपकी आजीविका अत्यंत सफल हैं। स्त्री वर्ग का सानिध्य आपको पसंद है। आप पराक्रमी, अपार सम्पत्ति और जायदाद के स्वामी हैं। आप भूरे वर्ण के हैं। आपकी बनावट मजबूत है। आपकी आँखें भूरी और स्वभाव चिड़चिड़ा है। आपकी उतावली प्रवृत्तियाँ हैं। आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता और आप निष्ठुर कार्यों में लगे रहते हैं। यात्राएँ होंगी, व्यर्थ इधर उधर में भटकना होगा और शरीर चोट-ग्रस्त होगा। सिंह राशि में मंगल : आप अत्यंत साहसी, नियमों के पक्के, अनुग्रहशील और जरूरतमंदों की सहायता करने वाले व्यक्ति हैं। आप एक दक्ष व्यक्ति हैं।

### बुध ग्रह का प्रभाव

बुध के द्वितीयेश एवं एकादशेश होकर दशम भाव में होने से आप मातृ भक्त हैं और कर्मठ अध्यवसायी, सरकार और समाज द्वारा प्रतिष्ठित, जन प्रतिनिधित्व करने वाले, भाग्यवान् पिता

## लग्नफल एवं ग्रह फल

के उच्च पद के कारण सुख भोगने वाले, भूमि व भवन के स्वामी एवं अपने परिवार के प्रसन्न व्यक्ति हैं। आप दीर्घ जीवी होंगे।

या तो आप एक अच्छे व्यापारी हैं या साहित्य में निपुण हैं। आप धर्मपरायण एवं हाजिरजवाब व्यक्ति हैं। सफलता आपको मिलेगी चाहे आप व्यापार करें, या कोई अन्य व्यवसाय। आप मान एवं प्रतिष्ठा पाते हैं। अच्छे वाहन और गृह प्राप्त करने की सम्भावना है। आप सुखी एवं खुशहाल हैं, सत्कर्म करते हैं तथा विद्वान हैं। आप काम अधिक और बातें कम करेंगे। जीवन में सफल होंगे।

बुध वृष में : शास्त्र और साहित्य में आपकी रुचि है। शारीरिक अभ्यास के शौकीन आप धनी हैं और गंभीर स्वभाव के हैं। आप मृदु-भाषी, वासना-प्रिय और शारीरिक सुखों के ज्ञाता हैं।

### गुरु ग्रह का प्रभाव

गुरु का पंचमेश और अष्टमेश हो कर लगन में होना यह बताता है कि आप शास्त्रज्ञ हैं, संगीत के शौकीन हैं, श्रेष्ठ संतान वाले हैं बुद्धिमान हैं और श्रेष्ठ व्यक्तियों से धन संपदा प्राप्त करते हैं। कभी-कभी आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। आप एक अच्छे तार्किक हैं। आपकी आयु लंबी होगी। आप उच्च-शिक्षा प्राप्त व्यक्ति हैं और समाज तथा सरकार की आप पर कृपा रहती है। आप एक शानदार व्यक्तित्व के स्वामी हैं। विदेशों से आपको लाभ मिलेगा तथा शैक्षणिक क्षेत्र में आप खूब सफल हैं।

आप दीर्घकाय, सदव्यवहारी कृतज्ञ, विद्वान, प्रसिद्ध और ईमानदार हैं। अपने उच्च कृत्यों के कारण प्रशंसा मिलेगी। आप गहरे विचारक और ऊँचे गणितज्ञ होंगे। आप खूब भोजनी हैं और मिष्ठान अति प्रिय हैं। आपका प्रमुख गुण आपका सदैव तरोताजा रहना है। आपकी मीठी लेकिन धीमी आवाज है। आप सौम्य और मिलनसार हैं। आप स्वस्थ रहेंगे और संतान अच्छी होगी। आपको ख्याति मिलेगी। आप निडर हैं और तीर्थाटन करेंगे। सुदर्शन शरीर के स्वामी आप अपने सद्गुणों के कारण जाने जाएंगे।

आप एक कर्तव्य परायण एवं कुशल कार्यकर्ता हैं। आप सभा – सोसाइटियों में हिस्सा लेते हैं और एक अच्छे वक्ता हैं। विरोधियों को आप बस में कर लेंगे। आप बहुत धार्मिक स्वभाव के हैं और सरकार व समाज में अच्छी प्रतिष्ठा है।

### शुक्र ग्रह का प्रभाव



## लग्नफल एवं ग्रह फल

शुक्र के तृतीयेश व दशमेश होकर एकादश भाव में होने के कारण आप लाभ, सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। आप विजयी व्यक्ति हैं, आपके मित्र और भाई श्रेष्ठ व्यक्ति होंगे। मालिकों की कृपा रहेगी। आप कई सुख – सुविधाएँ भोगेंगे। आपके मित्र सम्मानित होंगे जो आपका सम्मान करेंगे। बौद्धिक वर्ग के आप प्रिय होंगे। कई व्यक्तियों की सेवा करेंगे। अपने व्यवसाय में अच्छी कमाई करेंगे। आप उच्च सदाचारी व्यक्ति होंगे। आप बहुत कर्मठ हैं और सरकार व समाज द्वारा प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। मातृ-पक्ष के आप प्रिय रहते हैं। माता से भी प्रचुर सुख पाते हैं। आप अति चतुर, विद्वान व बुद्धिशाली व्यक्ति हैं। माता-पिता से आपको बहुत लगाव है। आप किसी विषय पर माहिर समझे जाएंगे और उस विषय – विभाग के प्रमुख होंगे। कला व साहित्य के प्रेमी हैं। कलात्मक क्षेत्रों में मशहूर होंगे। संतान सुन्दर व सदाचारी होगी। आपका मन बड़ा सक्रिय रहता है और आप कई कलाओं का विशद ज्ञान पाएंगे। आप दीर्घायु होंगे। पत्नी सुन्दर होगी व संतान सुख देगी। माता आपकी बहुत सहायता करती हैं। शुक्र के एकादश भाव में होने के कारण आप प्रचुर आर्थिक लाभ प्राप्त करेंगे। ऊँचे तबके के लोगों के कृपा भाजन रहेंगे। आप अति वासना प्रिय हैं और स्थाई सम्पत्ति भोगेंगे। आप मिष्ठान प्रेमी व्यक्ति हैं। संतान श्रेष्ठ होगी। सदगुणों से सम्पन्न आप अपनी कलात्मक अभिरुचि के लिए प्रसिद्ध होंगे। कई सुन्दर और कीमती वस्तुएँ आपके पास होंगी। शुक्र महती सुविधाएँ सुख विलासपूर्ण जीवन, प्रभावशीलता एवं विपुल सम्पत्ति का दाता है। भवन निर्माण एवं कलात्मक उद्यमों से आप लाभान्वित हो सकते हैं। आपका जानदार व्यक्तित्व है। संतान सुन्दर और बुद्धिमान होगी। आप सत्य प्रिय हैं और विपुल सुख सुविधाएँ भोगेंगे। साहित्य व चित्रकारिता में आपकी रुचि रहेगी। कलाक्षेत्र में आप प्रसिद्ध होंगे। आपका विनम्र स्वभाव है और दूसरों की मदद करते हैं।

### शनि ग्रह का प्रभाव

शनि के षष्ठमेश व सप्तमेश होकर लग्न में होने के फलस्वरूप आपकी बड़ी प्रभावशाली आवाज है तथा आँखें खूब चमकदार है। आप हमेशा दूसरों की मदद करते हैं। स्वास्थ्य आपका अच्छा है। अपनी चतुराई से आप प्रतिद्वंद्वियों का पराभव कर देते हैं। आप धनी एवं कर्मठ हैं किन्तु उमर के साथ थोड़े आलसी होते जाएंगे। आपका स्वभाव गर्वीला है और आप अपनी आत्म प्रतिष्ठा को बहुत महत्व देते हैं। आपकी पत्नी का बर्ताव आपके साथ अति स्नेहशील रहेगा और उनका व्यक्तित्व शानदार होगा। आपके बच्चें कम लेकिन अच्छे होंगे। आपकी प्रवृत्ति धार्मिक हैं और अपने धार्मिक सुकृत्यों के कारण आप प्रसिद्ध हैं। आप स्वभाव

## लग्नफल एवं ग्रह फल

से जल्दबाजी है और अपनी भाषा के प्रति लापरवाह। आप सुविधाएँ दिल से भोगते हैं और भोगों के लिए व्यय भी करते हैं। स्त्री वर्ग का साथ आपको अच्छा लगता है। आप कई विदेश यात्राएँ कर सकते हैं। आप प्रकृति से झगड़ालू हैं। विरोधियों की आप को परवाह नहीं रहती। आप बलशाली हैं, शत्रु अधिक होते हुए भी आप उनकी परवाह नहीं करते। अपनी रहस्यात्मक नीतियों के कारण अपने प्रतिद्वंद्वियों को आप विनष्ट कर देते हैं। सरकार एवं समाज द्वारा आपको प्रचुर सम्मान एवं सफलता प्राप्त होगी।

लग्न में शनि आपको सुस्त बनाता है। आप असाधारण रूप से लंबे हो सकते हैं। आप कर्कश हैं और सुदर्शन नहीं है। आप कड़े हाकिम हैं। आपका एक असाधारण गुण आपकी निराशावादिता है। मध्य आयु से आप अध्यक्ष या उच्च पदाधिकारी हो सकते हैं। आपके पास सम्पत्ति रहेगी लेकिन अन्य सुख सुविधाएँ अधिक नहीं होगी। प्रारंभिक जीवन में कभी कदा सम्मान व प्रतिष्ठा—प्राप्ति के प्रयत्नों में धक्के और आघात झेलें होंगे। आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता। सर्दी के प्रकोप ऊँचे स्थान से पतन और सर में चोट लगने की सम्भावना है। आप जिद्दी हैं और गहरे सुविचारक हैं। आप लालची हैं और अक्लमंदी से अपना स्वार्थ सिद्ध करने में माहिर हैं। आप चतुर हैं, साहसी हैं और विरोधियों की परवाह नहीं करते। आप तर्कप्रेमी और मेहनती हैं। संतान सुख में कुछ कमी महसूस करते हैं। आप ईश्वर—निष्ठ हैं और अतीन्द्रिय एवं पारलौकिक शक्तियों के कायल हैं। अपने विवेक के लिए आप प्रसिद्ध हैं।

शनि सिंह में : आप एक सुयोग्य लेखक हैं और कुशल कार्यकर्ता हैं। आप एक अच्छे शिक्षक हैं। सरकार के कृपा भाजन रहेंगे। आप साहसी और दिलेर हैं।

### राहु ग्रह का प्रभाव

लग्न में राहु दर्शाता है कि आप निष्ठुर होंगे। अपने हित में सफलता प्राप्त करने के लिए आप जटिल और गुप्त नीतियाँ अपनाएँगे। आप अत्यंत संवेगशील और मानसिक रूप से चिन्तित हैं। कभी—कभी आप अकर्मण्यता का शिकार हो जाते हैं। आप चिड़चिड़े चालाक और असंवेदनशील हैं। आपको दंत चिकित्सक के पास बार बार जाना पड़ सकता है। आपको आंतों की शिकायत या विषाक्त भोजन खाने से अस्वस्थता हो सकती है। आप दूसरों के मन की बात जानने में विशेषज्ञ है। आप नए से नए फैशन के कपड़े पहनते हैं। राहु के कारण सम्बन्धियों से गलतफहमियाँ और मित्रों से कलह होता है। आपके जीवन साथी का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। सम्पत्ति में वृद्धि और साहसिक कार्यों में सफलता मिलेगी। आप अत्यंत

गर्वीले व्यक्ति हैं। शिक्षा प्राप्ति में कुछ बाधाएँ आ सकती हैं।

### केतु ग्रह का प्रभाव

सातवें गृह में केतु दर्शाता है कि जीवन साथी की प्रसन्नता में कुछ आभाव व दुर्बलता अनुभव करेंगे। अलगाव की सम्भावना है। प्रतिद्वंद्वियों से कई कष्टों का सामना करना होगा। अवांछनीय व्यक्तियों से संपर्क होगा। आप प्रणयोन्मादक और भौतिक सुखों के शौकीन हैं। आप कई स्थानों की यात्रा करेंगे और व्यवसाय में परिवर्तन होगा। समाज व सत्ता से कभी कभी आदर व सम्मान को आघात पहुँचेंगे। विदेशों से आपका सम्पर्क है। आपके जीवन साथी की अस्वस्थता रहेगी। नीरस यात्राओं की सम्भावनाएँ हैं। संस्थाओं से सम्पत्ति में हानि और निम्न वर्ग के लोगों से संगति होगी। शक्ति स्फूर्ति में कुछ कमी होगी और आप मूत्र रोगों से ग्रस्त हो सकते हैं। आपका समाज में अपयश होगा। आपको उदर रोग होंगे। अपने प्रतिद्वंद्वियों से आपको कई कष्ट होंगे।

## शारीरिक गठन, व्यक्तित्व

आपके जन्म के समय प्रथम भाव में सिंह राशि उदित हो रही है, जिसका स्वामी सूर्य है। सूर्य लग्नेश होकर दसवें स्थान में स्थित है, जिससे अपना उत्तम प्रभाव प्रकट कर रहा है। आपका व्यक्तित्व तथा शारीरिक आकृति-प्रकृति प्रभावशाली एवं आकर्षक रहेगी। आपके शारीरिक गठन में कद लंबा, चेहरा चौड़ा, नेत्र सुन्दर, साधारण नाक तथा पुष्ट शारीरिक आकृति होगी। आप अपने आकर्षक तथा प्रभाववान व्यक्तित्व के द्वारा दूसरों को प्रभावित करेंगे तथा आपके व्यक्तित्व में आत्म-विश्वास की झलक दिखाई देती है। आप गंभीर तथा महत्वाकांक्षी प्रकृति के हैं। आप धैर्यवान् हैं और किसी भी कार्य को शीघ्रता से करने में अधिक रुचि नहीं लेंगे तथा विचार पूर्वक ही किसी भी कार्य को आगे बढ़ाते हैं। आप पराक्रमी तथा परिश्रमी व्यक्ति हैं। आप स्वच्छ हृदय, स्पष्ट विचार तथा उदार व्यक्ति हैं। आप परिस्थिति के अनुसार अपने स्वभाव में परिवर्तन करने में ध्यान देते हैं। आपके व्यवहार तथा विचारों में श्रम की प्रधानता है। आप कठिन परिस्थितियों के आने पर अपने धैर्य तथा मेहनत से उन परिस्थितियों को पार करने में सफल होंगे। आप में सहनशीलता है जिससे दूसरें लोग आपके व्यवहार से संतुष्ट रहेंगे। आप अपने सहयोगियों को अपनी ओर से यथासंभव सहयोग प्रदान करेंगे। आप अधिकतया सुखमय जीवन व्यतीत करेंगे। जीवन में आप अपने ऊपर नकारात्मक भावना को नहीं आने देंगे तथा सकारात्मक शैली से जीवन यापन करने में आस्था रखेंगे।

## धन, परिवार

आपके जन्म के समय द्वितीय भाव में कन्या राशि उदित हो रही है, जिसका स्वामी बुध है। बुध द्वितीये श होकर दसवें स्थान में स्थित है, जिससे अपना उत्तम प्रभाव प्रकट कर रहा है। जीवन में आपकी आर्थिक स्थिति संतोषजनक रहेगी। आर्थिक रूप से आपको विशेष परेशानी नहीं रहेगी। आपको जमापूंजी का उत्तम लाभ प्राप्त होगा, जिससे आगे चलकर आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। पारिवारिक आर्थिक स्थिति भी सुदृढ़ रहेगी। पारिवारिक जनों का अच्छा स्वभाव तथा सहयोगात्मक व्यवहार होगा, जिससे परस्पर प्रेम में बढ़ोत्तरी होगी। आपको कौटुम्बिक सम्पत्ति एवं धन लाभ हो सकता है। अपनी पारिवारिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने में आपका किसी भी तरह का योगदान अवश्य होगा। मिष्ठान भोजन में आपकी विशेष रुचि हो सकती है तथा आप मधुर स्वभाव तथा मधुरभाषी व्यक्तित्व के धनी होंगे। आपका चेहरा

आकर्षक एवं सुन्दर होगा। वाणी, मुख, तथा दायीं आँख में रोग तथा किसी तरह से परेशानी होने की सम्भावना बहुत कम रहेगी।

### पराक्रम, सहोदर

आपके जन्म के समय तीसरे भाव में तुला राशि उदित हो रही है, जिसका स्वामी शुक्र है। शुक्र तृतीयेश होकर ग्यारहवें स्थान में स्थित है, जिससे अपना उत्तम प्रभाव प्रकट कर रहा है। आप जीवन पर्यन्त अपने पराक्रम, साहस और धैर्य को कायम रखेंगे। आप परिश्रमी हैं तथा परिश्रम के द्वारा अपने जीवन में एक नयी जागृति पैदा कर सकते हैं फलस्वरूप भविष्य में आपको अधिक संघर्ष नहीं करना पड़ेगा। आपके हृदय में धैर्य एवं साहस पूर्वक कार्य करने की अभिलाषा रहेगी। आपके छोटे भाई-बहनो का आपके प्रति सहयोगात्मक व्यवहार रहेगा तथा वे आपसे स्नेह रखेंगे। अपनी ओर से आप छोटे भाई-बहनो की उन्नति के प्रति यथासंभव सहयोग प्रदान करते रहेंगे। आप अपने जीवन काल में दूर-समीप की यात्राओं को सार्थक करेंगे तथा इस तरह की यात्राओं के माध्यम से अपने लिए एक नया जन सम्पर्क स्थापित करने में भी सफल होंगे। जीवन में आप यश तथा धन प्राप्त करेंगे। आप अच्छे संगीतकारों तथा कलाकारों से प्रभावित रहेंगे। आपकी आवाज मधुर होगी और आपको गाने-बजाने के कार्यों में रुचि हो सकती है। आपको हृदय तथा दाँ कान में रोग आदि होने की सम्भावना कम ही रहेगी।

### जायदाद, माता, शिक्षा

आपके जन्म के समय चौथे भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही है, जिसका स्वामी मंगल है। मंगल चतुर्थेश होकर पहले स्थान में स्थित है, जिससे अपना उत्तम प्रभाव प्रकट कर रहा है। आप जीवन में समृद्धिशाली तथा वैभवयुक्त जीवन यापन करेंगे तथा भरपूर सुख प्राप्त करेंगे। आपके मन में सांसारिक तथा भौतिक सुख – सुविधाओं की वस्तुओं के प्रति लालसा रहेगी एवं इनकी प्राप्ति के लिए आपको जीवन में अधिक संघर्ष नहीं करना पड़ेगा। आपकी माताजी सुन्दर, तेजस्वी, परिश्रमी, पराक्रमी बुद्धिमति तथा स्पष्ट प्रकृति की महिला हैं तथा अपने पराक्रमी, परिश्रमी तथा सजग व्यक्तित्व से अपने पारिवारिक जनों को प्रभावित करेंगी। परिवार

में सभी सदस्य उनकी आज्ञा का पालन करेंगे। आपके प्रति भी उनका जीवन में विशेष स्नेह तथा मार्ग निर्देशन होने रहेगा, जिससे आप जीवन में उन्नति कर सकेंगे। जीवन में आप चल तथा अचल सम्पत्ति के माध्यम से उत्तम लाभ प्राप्त करेंगे। आप चल सम्पत्ति की अपेक्षा अचल सम्पत्ति से अधिक लाभ प्राप्त कर सकेंगे। अचल सम्पत्ति के क्रय-विक्रय के माध्यम से भी लाभ हो सकता है। चौपाए वाहन का उत्तम सुख तथा लाभ होगा। आपके पास एक से अधिक वाहन भी हो सकते हैं। आपका आवास किसी खुले तथा अच्छे स्थान पर रहेगा तथा सभी प्रकार की भौतिक आधुनिक सुख – सुविधाओं से सुसज्जित होगा। आपके पड़ोसिजन बुद्धिमान तथा पराक्रमी होंगे। अध्ययन के क्षेत्र में प्रारम्भ से आपकी रुचि रहेगी तथा परिश्रम पूर्वक अच्छे अंको से परीक्षा उत्तीर्ण करेंगे एवं उच्च शिक्षा प्राप्त करेंगे। आप व्यवसायिक शिक्षा इंजीनियरिंग आदि में डिप्लोमा प्राप्त कर सकते हैं। आपको अच्छे तथा मददगार मित्र प्राप्त होंगे। मित्रों का व्यवहार, प्रकृति तथा व्यक्तित्व भी प्रभावशाली रहेगा। आप मित्रों के साथ अनेक स्थानों की यात्रा भी कर सकते हैं, जिससे आप लिए जीवन में धन तथा यश की प्राप्ति कर सकेंगे।

## बुद्धि, सन्तान

आपके जन्म के समय पंचम भाव में धनु राशि उदित हो रही है, जिसका स्वामी बृहस्पति है। बृहस्पति पंचमेश होकर पहले स्थान में स्थित है, जिससे अपना उत्तम प्रभाव प्रकट कर रहा है। आप एक मेधावी व्यक्ति हैं। जीवन में आप अपनी बुद्धिमत्ता से समस्त भौतिक तथा सांसारिक समस्याओं का समाधान शीघ्र ही सम्पन्न करने में सक्षम रहेंगे। आप बुद्धि के द्वारा दूसरों लोगों को भी आसानी से प्रभावित कर सकते हैं। आप शीघ्रता से उत्तम निर्णय लेने में सफल होंगे तथा आपकी स्मरण शक्ति भी तीव्र रहेगी। आधुनिक तथा वैज्ञानिक विषयों में आपकी रुचि रहेगी तथा प्राचीन एवं आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के समन्वय के प्रति आपके मन में जिज्ञासा हो सकती है, जिससे आपकी प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। जीवन में आप संतति सुख से युक्त रहेंगे तथा आपके पुत्रों की संख्या अधिक हो सकती है। आपकी संतान बुद्धिमान तथा अच्छे गुणों से सुशोभित रहेगी। माता-पिता के प्रति उनका सम्मानजनक तथा आत्मिय व्यवहार रहेगा। माता की अपेक्षा पिता से उनका अधिक खुला व्यवहार हो सकता है। आप उनकी शिक्षा तथा उन्नति के लिए अच्छा प्रबन्ध तथा प्रयास करेंगे। जीवन में प्रेम-प्रसंगों में भी आपकी रुचि हो सकती है तथा आपका प्रेम विशुद्ध एवं मर्यादित रहेगा। आप हमेशा

प्रेम-प्रसंगों में मर्यादा पर अवश्य ध्यान देंगे तथा आपकी प्रेम की परिणति विवाह के रूप में भी हो सकती है। आपको पूर्वजन्म में किए गए पुण्यों का इस जन्म में सांसारिक भौतिक तथा आध्यात्मिक उन्नति आदि के रूप में प्राप्त होने की सम्भावना है। इस जन्म में भी आपके मन में पुण्य कर्म करने के प्रति जिज्ञासा रहेगी। अतः आप कोई परोपकार का कार्य भी कर सकते हैं।

### रोग, शत्रु,

आपके जन्म के समय छठे भाव में मकर राशि उदित हो रही है, जिसका स्वामी शनि है। शनि षष्ठेश होकर पहले स्थान में स्थित है, जिससे अपना उत्तम प्रभाव प्रकट कर रहा है। आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आप किसी प्रकार की लंबी बीमारी से पीड़ित नहीं रहेंगे। यदा-कदा अस्वस्थ होने पर उपचार करने से शीघ्र ही स्वस्थ हो सकते हैं। आप संयमित जीवन जीने से आप अच्छी आयु तथा आरोग्य को प्राप्त कर सकते हैं। जीवन में शत्रु पक्ष से कोई विशेष हानि या विवाद नहीं रहेगा। आपके निजि परिजन ही आपसे शत्रुता जैसा व्यवहार कर सकते हैं तथा सम्पत्ति लेन-देन आदि के विषय में उनके साथ आपकी मधुरता नहीं रहेगी। अंत में निर्णय आपके पक्ष में ही होने की सम्भावना रहेगी। आप धैर्य पूर्वक ही कोई कार्य तथा निर्णय लें जो कि आपके लिए हितकर रहेगा। जीवन में आपको मामा मामियों की तरफ से यथासंभव स्नेह तथा सहयोग आदि मिलेगा तथा उनके साथ आपके अच्छे सम्बन्ध रहेंगे। जीवन में आप सेवक वर्ग से लाभ प्राप्त करेंगे। वे आपके प्रति मान-सम्मान तथा आज्ञाकारी रहेंगे। आप अपने कार्य क्षेत्र के अधिकार के विषय में चिन्तित रह सकते हैं।

### विवाह, दम्पति, साझेदारी

आपके जन्म के समय सातवें भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही है, जिसका स्वामी शनि है। शनि सप्तमेश होकर पहले स्थान में स्थित है, जिससे अपना उत्तम प्रभाव प्रकट कर रहा है। शनि ग्रह के उत्तम प्रभाव से आपके जीवन-साथी का अच्छा व्यक्तित्व तथा उत्तम आकृति प्रकृति होने की सम्भावना है। आपके जीवन-साथी की शारीरिक संरचना सुन्दर, पुष्ट व

दर्शनीय रहेगी। मध्यम कद तथा कुछ चंचल प्रकृति भी रहेगी। प्रत्येक कार्य को दूसरों की सलाह लेकर करने में उनकी रुचि रहेगी। किसी भी कार्य को शीघ्रता से पूर्ण करने में उनकी कम ही रुचि होगी। आधुनिक जीवन जीने तथा आधुनिक विचारों के प्रति उनकी विशेष प्रवृत्ति रहेगी। उनकी प्रवृत्ति से दूसरे लोग भी प्रभावित रहेंगे। आपका विवाह सामान्यतया कुछ बड़ी उम्र में तथा किसी सम्पन्न कुल में होने की सम्भावना है। उनका सामाजिक स्तर भी प्रभावशाली होगा। अपने जीवन-साथी के माता-पिता के प्रति भी आपका व्यवहार सम्मानित तथा आदर युक्त रहेगा तथा आपके जीवन-साथी का आपके माता-पिता के प्रति भी आदर युक्त व्यवहार रहेगा। विवाह के पश्चात् आपकी उन्नति होने की सम्भावना है तथा दामपत्य जीवन भी सुख पूर्वक व्यतीत होगा। व्यापार या किसी महत्वपूर्ण कार्य में साझेदारी के लिए स्थिति अनुकूल रहेगी जिससे लाभ तथा यश की भी प्राप्ति होगी।

## आयु, दुर्घटना

आपके जन्म के समय आठवें भाव में मीन राशि उदित हो रही है, जिसका स्वामी बृहस्पति है। बृहस्पति आठवें स्थान का स्वामी होकर पहले स्थान में स्थित है, जिससे अपना उत्तम प्रभाव प्रकट कर रहा है। जीवन में आप आयु-अरोग्यता के सम्बन्ध में कम ही चिन्तित रहेंगे। आप दीर्घजीवि होंगे। आपके शरीर में रोग वृद्धि होने की सम्भावना कम रहेगी। जीवन में आप को किसी प्रकार की आकस्मिक दुर्घटना आदि से चिन्तित होने की आवश्यकता नहीं है। चोरी-डकैती की आकस्मिक घटनाएँ आपके जीवन में कम होंगी। आप संकटकालीन स्थिति में अपने धैर्य को बनाए रखेंगे। बीमा आदि करवाने में आपकी रुचि हो सकती है। आप अपनी सुविधा अनुसार बीमा करवा सकते हैं। जीवन में आपको आकस्मिक लाभ हो सकता है। पारिवारिक सम्पत्ति या अपने जीवन-साथी के माध्यम से उत्तम लाभ हो सकता है।

## सौभाग्य, आध्यात्मिकता, प्रसिद्धि, यात्राएँ

आपके जन्म के समय नवम् भाव में मेष राशि उदित हो रही है, जिसका स्वामी मंगल है। मंगल नवमेश होकर पहले स्थान में स्थित है, जिससे अपना उत्तम प्रभाव प्रकट कर रहा है। आप सौभाग्यशाली हैं। आपको जीवन में अच्छी स्थिति प्राप्त करने के लिए अधिक संघर्ष नहीं



करना पड़ेगा। आयु के 28 वर्ष से 32 वर्ष तक की अवधि का समय आपके लिए विशेष भाग्यशाली होगा। इस अवधि में आपका भाग्य विशेष सहायक बन सकता है। भाग्य स्थान का मंगल ग्रह से सम्बन्ध होने से आप साहसी तथा पराक्रमी रहेंगे। आप अपने पराक्रम के बल पर जीवन में अच्छी उन्नति प्राप्त करेंगे। आप अपने धर्म तथा सम्प्रदाय के प्रति श्रद्धालु रहेंगे। आपकी श्रद्धा तथा विश्वास धार्मिक क्रिया-कलापों के प्रति भी बना रहेगा। आप धार्मिक कार्यों के लिए सहायता प्रदान करते रहेंगे। जीवन में आप पूजा, जप, ध्यान इत्यादि को करने में रुचि लेंगे। आपको अपने कार्य क्षेत्र व सामाजिक तथा धार्मिक आदि कार्यों से प्रसिद्धि प्राप्त हो सकती है। आपको पुरस्कार, सम्मान तथा पदोन्नति इत्यादि का लाभ मिलता रहेगा। जीवन में आप लंबी दूरी की यात्राएँ अवश्य करेंगे तथा ऐसी यात्राओं के माध्यम से आपको धन ऐश्वर्य मान-सम्मान आदि प्राप्त होने की सम्भावना रहेगी।

### व्यवसाय, सामाजिक स्तर, आजीविका

आपके जन्म के समय दशम भाव में वृष राशि उदित हो रही है, जिसका स्वामी शुक्र है। शुक्र दशमेश होकर ग्यारहवें स्थान में स्थित है, जिससे अपना उत्तम प्रभाव प्रकट कर रहा है। आपका कार्य क्षेत्र आपकी जन्म कुण्डली में दशमेश शुक्र पर निर्भर हैं। जीवन में आपके कार्य क्षेत्र में परिवर्तन होते रहेंगे। इस तरह के परिवर्तनों से आपको उन्नति तथा लाभ प्राप्त होने की सम्भावना रहेगी। आजीविका के क्षेत्र में आपको कला, संगीत, सिनेमा, दूरदर्शन, नाटक, इलैक्ट्रॉनिक्स विभाग, न्याय विभाग, वकील, सचिव, सलाहकार, फिल्म निर्देशक, कलाकार, वैद्य, डाक्टर, स्टैनोग्राफर, प्रवक्ता, विदेशी कम्पनियों में कार्य करने से शुभ लाभ, सफलता तथा उन्नति मिलेगी। अतः आपको विशेषतया इन कार्य-क्षेत्रों में ही अपनी जीविका का चयन करना चाहिए। व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए चाँदी, सोना, हीरा, मोती आदि रत्न एवं धातु का कार्य, चतुष्पद वाहन सम्बन्धी क्रय-विक्रय, अलंकारिक तथा साज सज्जा, युक्त मूल्यवान वस्त्रों का व्यापार एवं आयात-निर्यात आदि से लाभ रहेगा। उत्तम किस्म की शराब, इलैक्ट्रॉनिक्स उपकरण एवं फिल्म धारावाहिक आदि निर्माण कार्य भी आपके लिए लाभकारी रहेंगे। आपको व्यवसाय के क्षेत्र में इन वस्तुओं या क्षेत्रों में व्यापार प्रारम्भ करना चाहिए। जीवन में आपको मान-सम्मान, प्रतिष्ठा आदि मिलेंगी तथा किसी उच्चपद को भी प्राप्त करने की सम्भावना रहेगी। आप जीवन में सामाजिक तथा सांस्कृतिक संस्थाओं आदि में कोई सम्मानित पदाधिकारी बनेंगे जिससे आपके सामाजिक स्तर में वृद्धि तथा यश लाभ होगा।

आपके पिता सुन्दर, आकर्षक व्यक्तित्व एवं अच्छी प्रकृति के व्यक्ति रहेंगे तथा साथ में बुद्धिमान, शिक्षित तथा मनोरंजक प्रवृत्ति के भी रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा ममता का भाव रहेगा। वे आपकी शिक्षा दीक्षा के लिए भी उचित प्रबन्ध करेंगे तथा आपकी उन्नति में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रहेगी। आपके पिता के साथ अच्छे सम्बन्ध रहेंगे।

### लाभ, आकांक्षाएँ, आय

आपके जन्म के समय ग्यारहवें भाव में मिथुन राशि उदित हो रही है, जिसका स्वामी बुध है। बुध ग्यारहवें स्थान का स्वामी होकर दसवें स्थान में स्थित है, जिससे अपना उत्तम प्रभाव प्रकट कर रहा है। आप अपने जीवन काल में अच्छे धन ऐश्वर्य को प्राप्त करेंगे। आप जीवन में एक से अधिक आय स्रोतों से लाभ प्राप्त कर सकते हैं। आप एक चतुर व्यक्ति हैं तथा अपने परिश्रम से आय स्रोतों को सदृढ़ बना सकते हैं, जिससे लंबे समय तक स्थाई रूप से लाभ प्राप्त किया जा सकता है। लेखन, कमीशन, संवाददाता, ज्योतिष, व्यापार आदि से उत्तम लाभ होने तथा जीवन में नौकरी की अपेक्षा स्वयं के व्यापार से लाभ होने की सम्भावना अधिक रहेगी। आप एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति हैं। आपकी मुख्य आकांक्षाएँ अपने व्यवसाय के विस्तार, धन तथा यश के सम्बन्ध में हो सकती हैं। आपकी आकांक्षाएँ सामान्यतया पूर्ण होगी। आपके बड़े भाई बहनों का आपके प्रति स्नेह तथा सहयोगात्मक व्यवहार रहेगा। तथा बड़े भाईयों की अपेक्षा बड़ी बहनों का आपके प्रति तथा आपका उनके प्रति अधिक लगाव, स्नेह तथा सहयोग रहेगा।

### व्यय, आवास परिवर्तन

आपके जन्म के समय बारहवें भाव में कर्क राशि उदित हो रही है, जिसका स्वामी चंद्र है। चंद्र बारहवें स्थान का स्वामी होकर बारहवें स्थान में स्थित है, जिससे अपना उत्तम प्रभाव प्रकट कर रहा है। आपकी जीवन में अच्छे कार्यों के करने की प्रवृत्ति रहेगी, जिससे आप अच्छे कार्यों में धन खर्च करते रहेंगे। आप इन कार्यों में धन के अलावा तन-मन से भी अपना सहयोग दे सकते हैं। धार्मिक तथा सामाजिक कार्यों में आप रुचि लेंगे एवं इनके लिए भी आप यथासंभव सहयोग देंगे। आप खर्च करने में कभी भी पीछे नहीं रहेंगे। यदा-कदा

भावावेश में आकर आप दूसरों की सहायता के लिए तत्पर हो जाएंगे और बिना सोचे समझे ही अधिक व्यय कर सकते हैं। आपको अपनी स्थिति के अनुसार ही व्यय करना चाहिए, जिससे आपके धन में सामंजस्य बना रह सके और सुखमय जीवन व्यतीत कर सकें। आप जीवन काल में किसी तरह की कोई विशेष हानि या बन्धन आदि में नहीं पड़ेंगे तथा किसी प्रकार के ऋण आदि के भार से दबे रहने की सम्भावना भी कम रहेगी। यदि आप जीवन में ऋण ले लें तो भी ऋण के भार शीघ्र ही आपके सिर से उतर जाएगा। आपके जीवन में आवास परिवर्तन करने के अवसर हो सकते हैं और आप आवास परिवर्तन अवश्य करें, जिससे लाभ होने की सम्भावना भी रहेगी। जीवन में आपकी मोक्ष (मुक्ति) के सम्बन्ध में जिज्ञासा रहेगी तथा इसके लिए योग ध्यान जप, मुक्ति आदि साधना करने की सम्भावना है। फल स्वरूप आप इस ओर उन्मुख हो सकते हैं।

### 04/10/2008 – 04/10/2011 में आप शुक्र की महादशा और राहु की अन्तरदशा के प्रभाव में रहेंगे।

यह समय आपके लिए अत्यंत शुभ रहेगा। अपने व्यवसाय / व्यापार में आप कुछ शानदार योजनाएँ तैयार कर सकते हैं जो आपके व्यवसायिक क्षेत्र में आपको यशस्वी बना सकते हैं। आप अपनी पैनी बुद्धि से काफी पैसा पैदा कर सकते हैं इसलिए रातों रात अपने लिए सौभाग्य खड़ा करने की इच्छा और उतावले निर्णयों से बचें रहे। आप अपना मौजूदा व्यवसाय बढ़ाने अथवा किसी नए व्यवसाय में प्रवेश करने की भी इच्छा कर सकते हैं और पूरी संभावना है कि आप इसमें कामयाब रहेंगे। काफी यात्राओं का भी योग है। यदि आप नौकरी पेशा हैं तो आपकी सेवा स्थितियाँ काफी अच्छी रहेंगी। आपको कुछ कठिन काम सौंपे जा सकते हैं लेकिन उन्हें पूरा करने की आपकी सफलता आपके अधिकारियों को प्रभावित करेगी और काफी अच्छे पद पर आपकी तरक्की हो सकती है। अपने काम के सिलसिले में आपको यात्राएँ करनी पड़ सकती हैं और इसमें नयी दिशाओं का रास्ता खुलेगा। यदि आप छात्र हैं तो यह समय आपके लिए काफी अच्छा है, इसलिए हाथ में आए अवसर का लाभ उठाएं। इस बात की पूरी सम्भावना है कि आप अपनी परीक्षाओं में सफलता के झंडे गाड़ेंगे। आपका पारिवारिक जीवन काफी अच्छा रहेगा। आपकी माता की अस्वस्थता का योग है।

### 04/10/2011 – 04/06/2014 में आप शुक्र की महादशा और गुरु की अन्तरदशा के प्रभाव में रहेंगे।

यह समय आपके लिए काफी अच्छा है। अपने व्यवसाय / व्यापार में आप तरक्की करेंगे। आपमें नए विचार पैदा होंगे तथा अपनी सहज बुद्धि से आपको देखना यह है कि क्या आप इनसे कोई लाभ उठा सकते हैं। उतावलेपन से फैसले न करें। इस अवधि में लगातार बढ़ेगी और इसे किसी नयी कम्पनी पर लगाने का विचार आप कर सकते हैं। अपने सहयोगियों और कर्मचारियों से आपके सम्बन्ध काफी अच्छे रहेंगे और वे आपको सहारा देंगे। यदि आप नौकरी पेशा हैं तो आपका समय काफी शुभ बीतेगा। प्रबंधक आपके काम की सराहना करेंगे तथा अच्छी तरक्की पाने की काफी प्रबल सम्भावना है। यदि आप यात्रा अथवा जहाजरानी से जुड़े हैं तो अपनी कम्पनी की बिक्री में जबरदस्त इजाफा लाकर में आपकी आय भी बढ़ेगी। यदि आप वैज्ञानिक हैं तो आपका कोई आविष्कार आपको यश दिला सकता है। यदि आप छात्र हैं अथवा किसी प्रतियोगी परीक्षा में बैठने की योजना बना रहे हैं तो थोड़ा और परिश्रम

करें, तो उल्लेखनीय नतीजे पा सकेंगे। आपको पारिवारिक जीवन अच्छा रहेगा। परिवार में जन्म अथवा विवाह होने का योग है।

#### **04/06/2014 – 04/08/2017 में आप शुक्र की महादशा और शनि की अन्तरदशा के प्रभाव में रहेंगे।**

कुल मिलाकर यह समय आपके लिए शुभ रहेगा। आपका व्यवसाय / व्यापार बढ़ेगा और आप बेहतर सम्भावनाओं की लगातार तलाश में उत्साहपूर्वक अपने काम में लगे रहेंगे। इस सम्बन्ध में अपने व्यवसाय के लाभ की दृष्टि से काफी व्यवहारिक और तर्कपूर्ण दृष्टिकोण अपना सकते हैं। यदि सफलता मिलने में विलम्ब होता है, तो निराश न हों क्योंकि अपने लिए नींव आप मजबूत डाल चुके हैं। इस अवधि में आप काफी पैसा पैदा करेंगे और अपना व्यवसाय बढ़ाने की सोचेंगे लेकिन अधिक सम्भावना यही है कि यह योजना फिलहाल के लिए मुलतवी रहेगी। यदि आप नौकरी पेशा हैं तो इस अवधि में आपकी सेवा स्थिति अच्छी रहेगी। अपना काम पूरा करने का दृढ़ संकल्प आपमें रहेगा और समस्याओं से निबटने का आपका कौशल तथा कठोर परिश्रम आपके मालिकों को खुश कर सकता है जो आपकी तरक्की की सिफारिश कर सकते हैं। फिर भी बेहतर होगा कि इस अवधि में रुपए-पैसे के सभी मामलों में आप सावधान रहे। यदि आप छात्र हैं या अध्ययन से जुड़े हैं तो इस अवधि में आपमें बेहतर सम्भावनाओं की तलाश तथा सफलता के लिए कठिन परिश्रम से जुटने के प्रति कुछ अरुचि रहेगी। आपके पारिवारिक जीवन में परिवार के सभी सदस्यों के बीच सम्बन्ध अच्छे रहेंगे।

#### **04/08/2017 – 04/06/2020 में आप शुक्र की महादशा और बुध की अन्तरदशा के प्रभाव में रहेंगे।**

यह समय आपके लिए अच्छा है। अपने व्यवसाय / व्यापार में तर्कसंगत नजरिया अपनाएं क्योंकि उतावलापन आपकी सफलता का अवसर बिगाड़ देगा। यदि अपने कुछ शैरों पर पैसा लगाया है तो काफी कमाई की गुंजाइश पाई जाती है। इसका आप सदुपयोग करेंगे, अधिक सम्भावना इस बात की है कि आप अपने मौजूदा व्यवसाय का विस्तार करेंगे और किसी नए शहर में शाखा खोलेंगे। इसमें काफी दौड़-धूप करनी पड़ेगी। लेकिन इस कदम की योजना यदि सावधानी से बनायी और क्रियान्वित की गई है तो आपके सफल रहने का योग है।

अपने साझीदारों के साथ आपके सम्बन्ध मधुर रहेंगे और वे आपको बहुमूल्य परामर्श देंगे। यदि आप नौकरी पेशा हैं तो यह समय आपके लिए काफी शुभ है। आप अतिरिक्त जिम्मेदारियाँ उठा सकेंगे तथा कठिन परिश्रम की आपकी क्षमता आपके अधिकारियों को काफी प्रभावित कर सकते हैं। लेकिन सारी स्थिति के बारे में अधिक आदर्शवादिता भी न अपनाएं। अपने लाभ की दृष्टि से बेहतर होगा कि आप अधिक व्यवहारिक बने। आपको तरक्की मिल सकती है और अच्छी आय का भी योग है। यदि आप प्रचार माध्यम से जुड़े हैं तो इस अवधि में भारी सफलता का योग है। यदि आप छात्र हैं तो ख्याली पुलाव न पकाते रहे। वांछित नतीजे पाने के लिए अपनी पढ़ाई में जुटें। आपका पारिवारिक जीवन अच्छा रहेगा। शांति और सामंजस्य रहेगा। परिवार में विवाह संस्कार होने का योग है।

#### **04/06/2020 – 04/08/2021 में आप शुक्र की महादशा और केतु की अन्तरदशा के प्रभाव में रहेंगे।**

यह समय आपके लिए अच्छा नहीं है। आपके व्यवसाय / व्यापार में गड़बड़ी चल सकती है और इससे आपको निराशा भी हो सकती है। आपमें चिड़चिड़ाहट रह सकती है और आपसे बाहर होकर आप स्थिति को बत्तर बना सकती है। इससे आप अपने कर्मचारियों में लोकप्रियता गँवाएंगे और वे महत्वपूर्ण मसलों पर भी आपके पास आने से कतरायेंगे। आपकी भरपूर कोशिशों के बावजूद आपको भारी घाटा लगेगा। गंभीर आंकलन और स्पष्ट चिंतन का आपमें आभाव रहेगा। आप काफी निराश हो सकते हैं और इस निराशा के कारण आप अपना व्यवसाय बंद करने और कोई दूसरी लाइन पकड़ने की भी सोच सकते हैं। बहैसियत नौकरी पेशा की जिंदगी यह समय आप के लिए शुभ नहीं रहेगा। आपके अधिकारी आपको परेशान कर सकते हैं और आपका काम उचित स्तर का नहीं रह सकता है। वे आपके स्थानांतरण की सोच सकते हैं और आप अपनी दयनीय दशा में नौकरी छोड़ने का विचार बना सकते हैं। यदि आप छात्र हैं तो अपनी पढ़ाई से पार पाने में आपको कठिनाई महसूस हो सकती है और पढ़ाई में व्यवधान पड़ने का भी योग है। आपको पारिवारिक जीवन तनावपूर्ण रहेगा तथा परिवार में अस्वस्थता रहेगी।

#### **04/08/2021 – 22/11/2021 में आप सूर्य की महादशा और सूर्य की अन्तरदशा के प्रभाव में रहेंगे।**

वांछित परिणाम प्राप्त करने के लिए आपको शायद कुछ अधिक मेहनत करनी पड़ेगी। तथापि कड़ी मेहनत और परिश्रम से आप सफलता की ऊँचाई चढ़ते जाएंगे। सरकार से लाभ मिलने की अपार सम्भावनाएं हैं। यदि आप सरकारी नौकरी में हैं तो पदोन्नति की पूरी आशा है। पद और प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। पारिवारिक वातावरण सद्भावपूर्ण रहेगा। विरोधी नुकसान नहीं पहुँचा पाएँगे। आप साहस और दृढ़ता से उनका मुकाबला कर लेंगे। स्वास्थ्य कुल मिलाकर ठीक रहेगा लेकिन एक-आध बार बीमार पड़ सकते हैं। तथापि सफलता आपके साथ रहेगी। इस समय का भरपूर उपयोग करने की कोशिश कीजिए।

आपके जन्म के समय चंद्रमा आश्लेषा नक्षत्र के प्रथम चरण में विचरण कर रहा था। इस कारण आपको जन्म के समय आश्लेषा नक्षत्र का प्रथम चरण प्राप्त हुआ। इस नक्षत्र में जन्म लेने के कारण आपकी जन्म राशि का स्वामी चंद्रमा है। शास्त्रों के अनुसार आश्लेषा नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म लेने वाले जातक के नाम का प्रारंभिक अक्षर “डी” होना चाहिए।

शास्त्रों में आश्लेषा नक्षत्र की गणना गंड मूल नक्षत्रों के समूह में होती है। आश्लेषा के प्रथम चरण में जातक को गंड मूल दोष अत्यधिक कम मात्रा में होता है फिर भी जन्म के समय में इसकी शांति करवाना हितकारी व आवश्यक है। आश्लेषा नक्षत्र की शांति हेतु जन्म के समय से 27 दिन के अंदर इसी नक्षत्र के मंत्र का 28 हजार जाप तक करना ही चाहिए। 27 दिन के पश्चात् जब तक चंद्रमा पुनः इस नक्षत्र में प्रवेश करें, उस समय किन्ही ज्ञानी पुरोहित द्वारा नक्षत्र शांति करवाने वे अशुभ फलों में कमी हो जाती है। आश्लेषा नक्षत्र शांति हेतु मंत्र इस प्रकार है।

ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु।

ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः॥

ज्योतिष शास्त्र के प्रसिद्ध ग्रंथ जातक पारिजात में आश्लेषा नक्षत्र की व्याख्या निम्नलिखित श्लोक द्वारा की गई है :

सार्पे मूढमतिः कृतघ्नवचनः कोपी दुराचारवान्।

अर्थात् आश्लेषा नक्षत्र में जन्म लेनेवाला जातक मूढमति वाला, कृतघ्न, गुस्से वाला तथा दुराचारी होता है।

ज्योतिष शास्त्र के एक अन्य प्रसिद्ध ग्रंथ बृहतजातका में आश्लेषा नक्षत्र की व्याख्या निम्नलिखित श्लोक द्वारा की गई है।

शठ सर्वभक्षपापः कृतघ्न धूर्तश्च भौजन्डे।

अर्थात् आश्लेषा नक्षत्र में जन्म लेने वाला जातक कष्टकारी, स्वार्थी, दुष्ट, धन्यवाद न देने वाला तथा धोखा करने वाला होता है।



ज्योतिष शास्त्र के एक अन्य प्रसिद्ध ग्रंथ जातक दीपिका में आश्लेषा नक्षत्र की व्याख्या निम्नलिखित श्लोक द्वारा की गई है।

लुब्धः खणजः कुशाङ्गश्च पुनः पुनः।

आश्लेषायां समुदभूतः कृतकर्मा भविष्यति॥

अर्थात् आश्लेषा नक्षत्र में जन्म लेने वाला जातक लालच करने वाला, दुर्बल शरीर वाला, कृतघ्न एवं किए हुए कार्यों को ही फिर करने वाला होता है।

ज्योतिष शास्त्र के एक अन्य प्रसिद्ध ग्रंथ जातकाभरणम् में आश्लेषा नक्षत्र की व्याख्या निम्नलिखित श्लोक द्वारा की गई है।

वृथाटनः स्यादिति दुष्टचेष्टः कष्टप्रदश्चापि वृथा जनानाम्।

सार्धे सदर्थो हि वृथापितार्थः कन्दर्पसंन्तप्तमना मनुष्यः॥

अर्थात् आश्लेषा नक्षत्र में जन्म लेने वाला जातक व्यर्थ में घूमने वाला, दुष्ट कर्मों से कष्ट देने वाला, उत्तम धन को भी व्यर्थ व्यय करने वाला विलासी तथा कामुक प्रवृत्ति का होता है।

संक्षेप में आश्लेषा नक्षत्र में जन्म लेने वाला जातक पापी, कृतघ्न, धूर्त प्रवृत्ति वाला, गुस्सैल एवं दुराचारी होता है। शत्रु पर वह विजयी होता है। परंतु सत्य नहीं बोलता न निर्भीक होकर कार्य करने वाला होता है। वह भक्षय करने वाले तथा भक्षपान करने वाले खाद्य पदार्थों का भेद कम करता है। उसकी कार्य शैली कठोर होती है। उसके पास धन का आभाव नहीं रहता है। परंतु वह अपव्यय अधिक करता है। उसका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहता है। वह किसी का उपकार जल्द स्वीकार नहीं करता है।

आपकी जन्म राशि कर्क है। विभिन्न ज्योतिष ग्रंथों में आपकी जन्म राशि की व्याख्या विभिन्न प्रकार से की गई है। जो इस प्रकार है :

ज्योतिष शास्त्र के प्रसिद्ध ग्रंथ जातक पारिजात के मतानुसार:

कामासवतमनोऽटनः सुवचनश्चन्द्रे कुलीरस्थिते:

अर्थात् कर्क राशि में जन्म लेने वाला जातका मन से कामासक्त, घूमने फिरने तथा यात्रा इत्यादि का शौक रखने वाला तथा अच्छे वचन बोलने वाला होता है।

मानसागरी नामक ग्रंथ के मतानुसार:

कार्यकारी धनी शूरो धार्मिष्ठो गुरुवत्सलः।  
 शिरोरोगी महाबुद्धिः कृशाङ्गः कृत्यवित्तमः॥  
 प्रवासशीलः कोपान्धोऽबलो दुखी सुमित्रकः।  
 अनासक्तो गृहे वक्रः कर्कराशौ भवेन्नरः॥

अर्थात् कर्क जन्म राशि में जातक कार्यकर्ता, धनी, शूर, धर्मवान गुरु का सेवक, सिर में रोग रखने वाला, परम चतुर, पतली देह वाला, कृत्यों को जानने वालों में सर्वप्रथम, विदेशवासी, अत्यधिक क्रोधी, बलहीन, दुखी, अच्छे मित्रों वाला, असमर्थ तथा अपने घर में और लोगों की अपेक्षा विलक्षण बुद्धि वाला होता है।

सारावली नामक ग्रंथ के मतानुसार:

युवतः सौभाग्य योगैर्गहसुहृदटन ज्योतिषज्ञानशीलैः  
 कामासक्तः कृतज्ञः क्षितिपतिसविवः सत्यप्रमाणः प्रवासी।  
 सोन्माद् केशकल्पो जलकुसुमरुचिर्हानिवृद्ध्यानुयातः  
 प्रासादोद्यानवापीप्रियकरणरतः पीनकण्ठः कुलीरि॥

अर्थात् जिस की जन्म राशि कर्क हो वह जातक सौभाग्य, धैर्य घर, मित्र, ज्योतिष ज्ञान व नम्रता से युक्त विषय इत्यादि में आस्कृत, कृतज्ञ, राजमंत्री, सत्यवादी, प्रवासी, उन्मादी, घने बालों वाला, जल तथा फलों की इच्छा रखने वाला, घर तथा बगीचा इत्यादि बनाने में लीन रहने वाला मोटे गले वाला होता है।

ज्योतिष के एक अन्य ग्रंथ ज्योतिषतत्त्वम के मतानुसार:

कामासक्तो ज्योतिष ज्ञानशीलैः सयुवत सौभाग्ययोगैर्वयस्यैः।  
 गेहोन्मादैश्चटनैः केशकल्पो भ्रूभृन्मन्त्री हानिवृद्ध्यानुयातः॥  
 पीनः कण्ठः सत्प्रमाणः प्रवासी वाप्युद्यानस्वर्गनाथालयानाम्।

कर्त्ता लोके वा प्रसूने रुचिः स्यातारानाथे कर्कराशि प्रयाते।।

अर्थात् जिस जातक का जन्म कर्क राशि में हो तो वह काम में आस्क्त तथा भ्रमण इत्यादि से युक्त कम बालों वाला, राजमंत्री, हानि वृद्धि को प्राप्ति होने वाला, मोटे गले वाला, उत्तम प्रमाण वाला, प्रवास में रहने वाला, बावडी, उद्यान तथा देव मंदिर बनाने वाला तथा लोगों व फलों में प्रीति रखने वाला होता है।

ज्योतिष शास्त्र के एक अन्य प्रसिद्ध ग्रंथ फलदीपिका के मतानुसारः

स्त्रीनिर्जितः पीनगलः समित्री बहालयस्तुङ्गकटिधर्माढ्यः।

ह्रस्वश्च वक्रो द्रुतगः कुलीरे मेघान्वितस्तोयार तोऽल्पपुत्रः।।

अर्थात् कर्क राशि में जन्म लेने वाला जातक स्त्रियों के वशीभूत होने वाला, स्थूल गले वाला तथा मित्रवान होता है। ऐसे जातक के कई मकान इत्यादि होते हैं। तथा वह धनी भी होता है। वह कद में अधिक ऊँचा नहीं होता है। परंतु उसकी कमर मोटी होती है। ऐसा जातक बुद्धिमान होता है। तथा जल क्रीड़ाओं का शौक रखने वाला होता है। वह शीघ्र गति से चलने वाला होता है। तथा उसके पुत्र कम होते हैं।

ज्योतिष के एक अन्य प्रसिद्ध ग्रंथ जातका-भरणम के मतानुसारः

श्रुतकलाबलनिर्मलवृत्तयः कुसुमगंध जलाशयकेलयः।

क्विल नरास्तु कुलीरगते विधौ वसुमतीसुमती स्मितलब्धयः।

अर्थात् जिस जातक का जन्म कर्क राशि में हो वह जातक वेदों व शास्त्रों का ज्ञान रखने वाला, बली, सदाचार का पालन करने वाला, फूलों की सुगंध तथा जल क्रीड़ाओं का शौक रखने वाला, संचार में प्रसिद्धि तथा कीर्ति प्राप्त करने वाला होता है।

ज्योतिष शास्त्र के एक अन्य प्रसिद्ध ग्रंथ जातक-दीपिका के मतानुसारः

पवनकफशरीरो देव संकाशरूपः।

स्वयमुपचितवित्तो देवताविप्रभवतः।।

कुलजन परिसेवी मण्डलाकार मध्यो।

भवति विपुलवित्तः कर्कटो यस्य राशिः।।

अर्थात् कर्क राशि में जन्म लेने वाला जातक वात व कफ प्रकृति युक्त देवताओं के समान रूप वाला, अपने स्वयं के प्रयत्नों से धन अर्जित करने वाला, देवताओं तथा ब्राह्मणों में भक्ति भाव रखने वाला, ऊँचे परिवार के लोगों की सेवा करने वाला, कमर का भाग ऊँचा तथा मोटा व अत्यधिक धनी होता है।

संक्षेप में कर्क राशि में जन्म लेने वाला जातक परोपकारी, वस्तुओं के संग्रह में कुशल, गुणवान, माता-पिता तथा ब्राह्मणों की भक्ती करने वाला, वेद व शास्त्रों का ज्ञान रखने वाला, सुगंधित वस्तुओं तथा जल क्रीड़ाओं अर्थात् तैरने आदि का शौक रखने वाला होता है। वह तेज चाल से चलता है। तथा अच्छे मित्रों वाला, उद्यान इत्यादि का प्रेमी, दयावान, मिलनसार तथा प्रीति युक्त प्रवृत्ति वाला होता है। ऐसे जातक का किसी ऊँचे स्थान से गिरने का भी भय रहता है। वह ऊँचे कद का तो नहीं होता परंतु मोटा व पुष्ट गालों वाला होता है। वह दिखने में सुन्दर तथा सर पर कम बालों वाला होता है। उसकी स्त्री स्वभाव से पतिवृता तथा पति को प्रेम करने वाली होती है। उसकी संतान अधिक होती है। ऐसा जातक अपने पुरुषार्थ द्वारा अपने वंश के मान की उन्नति करवाने में समर्थ होता है। व्यवसाय द्वारा उसे लाभ होता है। परंतु ऐसे जातक का धन चंद्रमा के स्वभावानुसार घटता है। तथा चित्रकारी, कविता एवं गायन विद्या का शौकीन होता है। वह तरल पदार्थों का व्यापार करने वाला तथा गणित एवं ज्योतिष में रुचि रखने वाला होता है।

कर्क राशि में जन्म लेने वाले जातक के लिए बारहवां इक्कीसवां, इक्तीसवां, इकतालिस तथा साठवां वर्ष, मास तथा दिन लाभदायक नहीं होता है।

द्वितीय सप्तमी एवं द्वादशी तिथि जातक के लिए अशुभ होती है। सिंह, मिथुन एवं कन्या राशि का मनुष्य उत्तम तथा मेष, वृषभ, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुंभ एवं मीन राशि के मनुष्य साधारण मित्र होते हैं। माघ मास, शुक्ल पक्ष, नौमी तिथि, रोहिणी नक्षत्र एवं शुक्रवार लाभदायक नहीं होते हैं।

पुष्य नक्षत्र में जन्म लेने वाले जातक को अपने इष्ट देन शंकर भगवान को प्रतिदिन विल्वपत्र चढ़ाने चाहिए तथा सोमवार को उपवास रखना भी लाभकारी सिद्ध होगा। ऐसा करने से मानसिक अथवा शारीरिक समस्याओं में कमी आती है। इसके अतिरिक्त ऐसे नियम का पालन

करने से व्यापार अथवा नौकरी में भी आने वाली बाधाओं में कमी आने लगती है। दान स्वरूप आप सफेद मोती, सफेद वस्त्र, चावल या मिशरी इत्यादि दे सकते हैं। मानसिक तनाव तथा अशुभ फलों में कमी लाने के लिए आप चंद्रमा के तंत्रीय मंत्र का जाप करना अथवा किन्ही योग्य पुरोहित जन से करवाना हितकारी सिद्ध होता है।

चंद्रमा का तंत्रीय मंत्र इस प्रकार है :

## शनि की साढ़ेसती

जन्म कुण्डली में जन्म राशि से बारहवीं राशि में गोचरस्थ शनि का प्रवेश साढ़े साती का आरंभ कहलाता है। साढ़े साती के तीन चरण हैं। गोचरस्थ शनि का जन्म राशि से बारहवीं राशि में प्रवेश पहला चरण, जन्म राशि में प्रवेश दूसरा चरण तथा जन्म राशि से द्वितीय राशि में प्रवेश तीसरा चरण होता है। चूंकि गोचरस्थ शनि प्रत्येक राशि में ढाई वर्ष तक रहता है। इसलिए इसे साढ़े साती कहते हैं। साढ़े सात वर्ष कभी भी केवल अशुभ ही नहीं होते शनि जिस राशि में हो उसके अधिपति की शनि से मित्रता, शत्रुता अथवा समता पर शनि की शुभता अथवा अशुभता निर्भर करती है। जन्म कुण्डली में शनि जिस भाव का अधिपति होगा शनि की शुभता अथवा अशुभता उसी के अनुरूप होगी।

### शनि-साढ़ेसती की तिथि तालिका

#### पहला चक्र

पहला चरण 24/07/2002 — 06/09/2004

दूसरा चरण 06/09/2004 — 02/11/2006

तीसरा चरण 02/11/2006 — 10/09/2009

#### दूसरा चक्र

पहला चरण 31/05/2032 — 13/07/2034

दूसरा चरण 13/07/2034 — 28/08/2036

तीसरा चरण 31/08/2036 — 23/10/2038

#### तीसरा चक्र

पहला चरण 11/07/2061 — 25/08/2063

दूसरा चरण 25/08/2063 — 13/10/2065

तीसरा चरण 13/10/2065 — 31/08/2068

गोचरस्थ शनि का मिथुन राशि में प्रवेश करते ही कर्क राशि वालों के लिए साढ़े साती का प्रथम चरण आरंभ हो जाता है। प्रथम चरण में शनि अपने मित्र ग्रह बुध की राशि में है। इसमें शनि सप्तम तथा अष्टम भाव का अधिपति बन कर द्वादश भाव में स्थित है। शनि का मिथुन राशि में रहने से जातक का स्नायविक स्थान कमजोर पड़ जाता है। जातक को अपच,

## शनि की साढ़ेसती

गैस, अपस्मार या उन्माद जैसे रोग कष्ट देते हैं। जातक व्यर्थ में भटकता रहता है। ऐसा जातक घर से बाहर रहना पसंद करता है। धन का अपव्यय होता है तथा जातक धन उधार भी ले सकता है। इस कारण जातक को व्यर्थ की चिंताएँ व मानसिक क्लेश रहता है। ऐसे में जातक कई व्यसनों का आदी भी हो जाता है जिससे वह आलसी तथा अविश्वसनीय हो जाता है। जातक के मन में कटुता, क्रोध, वैर, विरोध इत्यादि बढ़ने लगते हैं। सीधी दिशा में किए गए कार्य भी उलटने लगते हैं। माता व मातृ-पक्ष को भी कष्ट हो सकता है। जातक को घर छोड़कर विदेश अथवा परदेश जाना पड़ सकता है। परंतु वहाँ जातक प्रायः सफल होता है। जातक की रुचि निम्न कार्यों में बढ़ने लगती है। ऐसे समय में यात्रा में कष्ट रहता है। वाहन चलाते समय विशेष सावधानी बरतनी चाहिए। बिजली व शस्त्र से भी सावधान रहना चाहिए। यदि जातक सरकारी कर्मचारी है या नौकरी में है तो प्रायः ऐसे समय जातक के उच्चाधिकारियों से सम्बन्ध बिगड़ जाते हैं। स्थानांतरण की भी सम्भावना बनी रहती है। कई बार व्यापार भी बदलना पड़ सकता है। व्यापार में साझेदारों से अनबन अथवा उनसे धोखे की आशा रहती है। स्त्री व पुत्र को कष्ट रह सकता है। जातक कई बार अपनी बातों के कारण हँसी का पात्र भी बन जाता है। भाइयों व परिवार जनों का साथ छूट जाता है अथवा परिवार में अनबन रह सकती है। ऐसे समय में कार्य स्थान पर चोरी की सम्भावना भी रहती है।

गोचरस्थ शनि का कर्क राशि में प्रवेश करते ही कर्क राशि वालों के लिए साढ़े साती का द्वितीय चरण आरंभ हो जाता है। द्वितीय चरण में शनि अपने शत्रु ग्रह चंद्रमा की राशि कर्क में है। इसमें शनि सप्तम तथा अष्टम भाव का अधिपति बन कर लगन में स्थित है। ऐसे समय जातक को विशेष कष्ट रहता है। जातक कुछ हठी हो जाता है। इसी कारण उसके बने बनाए काम बिगड़ने लगते हैं। उच्च वर्ग से सम्बन्ध कुछ सुधर जाते हैं। जातक कुछ उन्नति भी पा सकता है। शत्रु पक्ष को इस समय पराजित होना ही पड़ता है। परंतु सब कुछ होते हुए भी जातक मानसिक व शारीरिक रूप से परेशान ही रहता है। मातृ-सुख में भी कमी आने लगती है परंतु जातक की हिम्मत बनी रहती है। व्यवहार कुशल होने से वह अन्ततः विजयी होता है। इस समय शत्रु पक्ष प्रबल हो जाता है। जातक को कोई भी कार्य करने से पहले अच्छी तरह से विचार-विमर्श कर लेना चाहिए। किसी को दिया हुआ धन पुनः प्राप्त करना सरल नहीं होता। घर का वातावरण कलह पूर्ण हो जाता है। जातक को ऐसे समय में कहीं से अचानक सहायता मिलती है।

## शनि की साढ़ेसाती

गोचरस्थ शनि का सिंह राशि में प्रवेश करते ही कर्क राशि वालों के लिए साढ़े साती का तृतीय व अंतिम चरण आरंभ हो जाता है। तृतीय चरण में शनि अपने शत्रु ग्रह सूर्य की राशि सिंह में है। इसमें शनि सप्तम व अष्टम भाव का स्वामी बन कर द्वितीय भाव में स्थित है। इस स्थिति में शनि धन का नाश करता है। संचित धन में कमी आने लगती है। धनाभाव से जातक गलत कार्यों में संलिप्त हो सकता है। जिसमें मान हानि का खतरा बना रहता है। इस समय जातक को बहुत दुख उठाने पड़ सकते हैं तथा नयी-नयी समस्याओं से जूझना पड़ सकता है। भाई तथा परिवार जनों का साथ छूटने लगता है। घर की शांति भंग हो सकती है। ऐसी स्थिति में जातक को किसी प्रियजन से दूर जाना पड़ सकता है। साझेदारी में विश्वास घात हो सकता है। लोहा, लकड़ी इत्यादि के कार्यों में हानि की सम्भावना रहती है। स्थानांतरण या किसी कारण वश घर से दूर जाना पड़ सकता है या घर बदलना भी पड़ सकता है। अधिकारी वर्ग नाराज रहते हैं। ऐसे समय वाहन की प्राप्ति हो सकती है परंतु चोट लगने की सम्भावना रहती है। वाहन चलाने में सावधानी बरतनी चाहिए। विद्या ग्रहण कर रहे जातक व्यवसाय में आने का प्रयास करते हैं तथा असफल भी हो सकते हैं। इस कारण जातक को अपयश मिलता है। इस समय जातक लेखन कार्य में सफलता प्राप्त कर सकता है। जातक आत्म निर्भर बनने का प्रयास भी करता है। तथा सफल होता है।

साढ़े साती का सम्पूर्ण समय एक जैसा नहीं होता तथा शुभ व अशुभ परिणाम इस बात पर निर्भर करते हैं कि गोचर में शनि किन नक्षत्रों में भ्रमण कर रहा है। साढ़े साती में अनिष्ट फलों को कम करने के उपाय मंत्र जाप, पूजा, सेवा तथा दान पर आधारित है। दोष शांति का उपाय जानने के लिए जन्म कुण्डली की सम्पूर्ण विवेचना आवश्यक है। फिर भी साढ़े साती के अरिष्ट फलों को कम करने के लिए निम्नलिखित उपाय किए जा सकते हैं। ये उपाय यदि साढ़े साती के आरंभ होने से पहले ही कर लें तो विशेष लाभ की सम्भावना होती है।

- 1 प्रत्येक शनिवार को शनि देवता के मंदिर में जाकर पूजा करें, व तेल चढ़ाए।
- 2 शनि ग्रह का मंत्र जाप करें,। संध्या के समय 108 बार इस मंत्र का जाप करें, — " ऊँ सः शनैश्चराय नमः " या " ऊँ शं शनैश्चराय नमः " ।
- 3 शनिवार को वृत्त रखें। शुक्ल पक्ष में वृत्त का आरंभ करें, तथा कम से कम 40 शनिवार तक वृत्त रखें।
- 4 सरसों के तेल का दीपक प्रत्येक शनिवार पीपल के पेड़ के नीचे रखें ।



- 5 लोहा, काला सुरमा, सरसों का तेल, चमड़े के जूते, काला कपड़ा, शराब, काली उड़द की दाल आदि का शनिवार को दान करें।
- 6 काले घोड़े की नाल या नाव की कील का छल्ला धारण करें, अथवा नीलम धारण करें।
- 7 निम्न वर्ग के व्यक्तियों की सेवा करें, या उन्हें दान दें।
- 8 शराब व मांस का सेवन न करें।
- 9 शनिवार को काला सुरमा जमीन में दबा दें।
- 10 नारियल अथवा बादाम शनिवार के दिन नदी में बहाएं।
- 11 रात्रि में दूध न पीएं।

यद्यपि ये उपाय बता दिए गए हैं किन्तु इन्हें अपने आप आरंभ नहीं करना चाहिए। किसी विद्वान ज्योतिषी से परामर्श लेकर ही उपाय करने की विधि तथा उचित समय की जानकारी प्राप्त करनी चाहिए। यदि साढ़े साती के अरिष्ट फलों की शांति के लिए उचित रीति से उपाय किए जाए तो साढ़े साती के परिणाम उतने भयाकारी नहीं होंगे जितना कि उनसे भयभीत किया जाता है।

आपकी जन्मपत्रिका के प्रथम भाव लगन में मंगल स्थित है जिससे आप एक मांगलिक पुरुष हैं । लगन में मंगल की स्थिति होने से आपके व्यवहार में सामान्य तेजी रहेगी । आपका स्वास्थ्य अधिकतया उत्तम रहेगा । बाल्यकाल में सामान्य रूप से पेट एवं दाँतों से सम्बन्धित परेशानी हो सकती है । जीवन में रक्त, वात, पित्त, से सम्बन्धित रोगों के प्रति आपको सावधान रहना चाहिए वैसे आपके शारीरिक स्वास्थ्य पर विशेष प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा । आप अपने पराक्रम से प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त करेंगे । प्रथम भाव में मंगल की स्थिति यह दर्शाती है कि आपके विवाह संस्कार होने में किंचित विलम्ब हो सकता है तथा विलम्ब होने का यह भी कारण हो सकता है कि आपको अपनी मन पसंद तथा वैचारिक साम्यता वाली लड़की मिलने में कुछ समय लग सकता है । विवाह के पश्चात आपकी पत्नी का शारीरिक स्वास्थ्य अधिकतया अच्छा रहेगा तथा आप सुखी वैवाहिक जीवन यापन करेंगे ।

आपकी जन्म कुण्डली के लगन में स्थित मंगल चार, सात, और आठवें भाव को अपनी पूर्ण दृष्टि से दृष्टिगोचर कर रहा है । चतुर्थ भाव पर मंगल की पूर्ण दृष्टि होने से सांसारिक सुख संसाधनों की उत्तम सुख प्राप्ति के लिए आपको सामान्य रूप से कुछ अधिक परिश्रम करना पड़ेगा । जीवन में आपको मकान, भूमि, वाहन की प्राप्ति होने की सम्भावना रहेगी । सप्तम भाव पर मंगल की पूर्ण दृष्टि होने से आपकी पत्नी का स्वास्थ्य यदा—कदा सामान्य अस्वस्थ होने की सम्भावना हो सकती है लेकिन उसका आपके दामपत्य जीवन पर कोई विशेष प्रतिकूल प्रभाव होने की सम्भावना नहीं रहेगी । अष्टम भाव पर मंगल की पूर्ण दृष्टि होने से आपको यदा—कदा सामान्य संघर्ष करना पड़ेगा । आप अपनी मेहनत से जीवन में आनेवाली कठिनाईयों का समाधान करने में सफल रहेंगे । पित्त तथा रक्त से सम्बन्धित सामान्य परेशानी हो सकती है लेकिन इसका आपके स्वास्थ्य पर कोई विशेष प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा ।

आपको अपने वैवाहिक जीवन पर पड़ने वाले मंगल के दुष्प्रवाह को शुभ प्रभाव में परिवर्तित करने के लिए किसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिससे एक दूसरे का मांगलिक दोष मिट सके तथा इस दोष के भंग होने के लिए लड़की की कुण्डली में एक, चार, सात, आठ तथा बारहवें घर में से किसी एक घर में शनि, अथवा राहु, जैसे, पाप ग्रह को स्थित होना चाहिए यदि इस रीति से दोनों का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो आप विवाह कर सकते हैं जिससे आपका वैवाहिक जीवन तथा शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं आप धनैश्वर्य से युक्त होकर सुखी वैवाहिक जीवन निर्वाह करेंगे ।

रत्न	धातु	अंगुली	दिन	समय	नक्षत्र
माणिक	सोना	अनामिका	रवि	प्रातः	कृतिका, उ फाल्गुनी, उत्तराषाढा
मोती	चांदी	कनिष्ठिका	सोम	प्रातः	रोहिणी, हस्त, श्रवण
मूंगा	सोना	अनामिका	मंगल	प्रातः	मृगशिरा, चित्रा ,धनिष्ठा
पन्ना	सोना	कनिष्ठिका	बुध	प्रातः	अश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती
पुखराज	सोना	तर्जनी	गुरु	प्रातः	पुनर्वसु, विशाखा, पूर्वाभाद्रपद
हीरा	प्लेटीनम	कनिष्ठिका	शुक्र	प्रातः	भरणी, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढा,
नीलम	चांदी	मध्यमा	शनि	सांयः	पुष्य, अनुराधा, उत्तराभाद्रपद
गोमेद	चांदी	मध्यमा	शनि	रात्रि	आद्रा, स्वाती, शतभिषा
लहसुनियां	चांदी	अनामिका	गुरु	रात्रि	अश्विनी, मघा, मूला

### रत्न विचार

रत्नों का उपयोग यदि उचित रूप से किया जाए तो रत्न वास्तव में उचित फल प्रदान करने में सहायक सिद्ध होते हैं। इस कार्य में रत्न का चुनाव अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इसके अतिरिक्त रत्न की उत्तमता भी अपना विशेष महत्व रखती है। किसी भी जातक के लिए निर्धारित किए गए शुभ रत्न, शुभ ग्रहों की किरणों को ग्रहण कर के मानव शरीर में उन किरणों का प्रसार कर शुभ फल प्रदान करने में उपयुक्त सिद्ध होते हैं। यहाँ तीन प्रकार के रत्नों का विवरण दिया गया है।

आजीवन रत्न : माणिक

भाग्यवर्धक रत्न : पुखराज

शुभ रत्न : मूंगा

रत्न	मंत्र
माणिक	ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः।
मोती	ऊँ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्राय नमः।
मूंगा	ऊँ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः।
पन्ना	ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः।
पुखराज	ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरुवे नमः।
हीरा	ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।
नीलम	ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।
गोमेद	ऊँ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः।
लहसुनियां	ऊँ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः।

जैसा कि ऊपर बताया गया है कि किसी भी जातक की जन्म कुंडली में उत्तम ग्रहों की निर्बलता को दूर करने के लिए रत्नों का उपयोग किया जाता है तथा उसमें उपयुक्त रत्न का चुनाव तथा रत्न की उत्तमता अपना महत्त्व रखती है। ठीक इसी प्रकार किसी भी रत्न के धारण करने का समय भी अपना विशेष स्थान रखता है। उचित समय में किया गया कोई भी कार्य सिद्ध होता है। इसी उचित समय को हम मुहूर्त भी कहते हैं— ऐसा शास्त्रों में लिखा गया है। इस लिए रत्न धारण करते समय हमें निर्धारित दिवस, निर्धारित नक्षत्र तथा शुक्ल पक्ष का चुनाव करना चाहिए। किसी भी प्रकार का शुभ कार्य करते समय हमारे शास्त्रों में पूजा पाठ इत्यादि तथा अपने इष्ट देव का ध्यान करना बताया गया है। इस बात को ध्यान में रखकर हमें निर्धारित पूजा भी करनी चाहिए जिस से कि हमारे देवता हमें आशीर्वाद दें तथा हमारे कार्य को सफल बनाएं। रत्न जड़ित अंगूठी धारण करने से पहले इसे गंगा जल में धो लेना चाहिए। इस कार्य में आप दूध का प्रयोग भी कर सकते हैं। इसके पश्चात् स्वच्छ मन से, आँखें बंद कर, प्रभु की उपासना करते हुए तथा निर्धारित मंत्रों का जाप संभव हो तो 108 बार करते हुए रत्न जड़ित अंगूठी को निर्धारित अंगुली में धारण करें तथा अपने शुभ चिंतकों में प्रसाद इत्यादि का वितरण करें। परिवार के बुजुर्ग सदस्यों से भी आशीर्वाद लें ताकि वे भी आपके मंगल भविष्य तथा आपकी इच्छाओं की पूर्ति हेतु कामना करें।

## रत्नों द्वारा समस्याओं का निवारण

- 1 यदि आप अपने स्वास्थ्य को लेकर चिंतित हों अथवा अपना व्यक्तित्व आकर्षक बनाना चाहते हों तो आप माणिक रत्न धारण कर सकते हैं।
- 2 यदि आप को धन अर्जित करने अथवा एकत्रित करने में समस्या आती हो अथवा आप जीवन में अपने पद ओहदे को लेकर चिंतित हों तो आप पन्ना रत्न धारण कर सकते हैं।
- 3 यदि आपको प्रतीत होता हो कि आप के द्वारा किए गए प्रयास उत्तम नतीजे लाने में असमर्थ होते हैं अथवा आपके द्वारा किए गए परिश्रम का फल आपकी क्षमता से कम प्राप्त होता है। इस के अतिरिक्त यदि आपको सहोदरों से या आपके सहोदरों को कुछ समस्याएं हैं तो आप हीरा रत्न धारण कर सकते हैं।
- 4 यदि आपके माता-पिता को अथवा आपको माता-पिता से किसी प्रकार का कष्ट प्रतीत होता हो अथवा आपको वाहन / जमीन जायदाद खरीदने या बनवाने में परेशानी का सामना करना पड़ता हो। यदि विद्यार्थी जीवन में शिक्षा ग्रहण करने में बाधाओं का सामना करना पड़े अथवा धर के सुख में कमी का आभास होता हो तो आप मूंगा रत्न धारण कर सकते हैं।
- 5 यदि आपको बुद्धि, ज्ञान, भावुकता, संतान व पेट इत्यादि से समस्याएं हों अथवा आपको सट्टेबाजी में हानि देखनी पड़ती हो तो आप पुखराज रत्न धारण कर सकते हैं।
- 6 यदि आपके विवाह में अनचाहा विलंब हो रहा हो अथवा विवाहित जीवन में समस्याओं का सामना करना पड़ रहा हो। इसके अतिरिक्त यदि आप को किसी प्रकार की व्यापारिक साझेदारी में नुकसान होता हो तो उस स्थिति में भी आप पन्ना रत्न धारण कर सकते हैं।
- 7 यदि आप अनुभव करते हों कि आपका भाग्य आपका समुचित साथ नहीं देता अथवा जीवन में आपको अत्यधिक संघर्ष करने पड़े हों या कर रहे हों। इसके अतिरिक्त धर्म की ओर ले जाने वाले मार्ग को प्रशस्त करना चाहते हों तो आप मूंगा रत्न धारण कर सकते हैं।
- 8 यदि आप अपनी नौकरी या व्यापार में अस्थिरता का अनुभव करते हों तो आप मूंगा रत्न धारण कर सकते हैं।
- 9 यदि आपको अपनी आय में उतार-चढ़ाव अनुभव करते हों तो आप पन्ना रत्न धारण कर सकते हैं।

# वर्षफल वर्ष 2010 – 2011

## जन्म विवरण

## वर्षफल विवरण

लिंग	पुरुष	पुरुष
जन्म तिथि	20/05/1980	21/05/2010
दिन वार	मंगलवार	शुक्रवार
जन्म समय	12:28:51	04:57:51
(समय घटी में)	17: 31: 47 घटी	-----

## स्थान एवं समय विवरण

जन्म स्थान	DELHI	DELHI
अक्षांश	028.39	028.39
रेखांश	077.13	077.13
स्थानीय समय	12:07:43	-----
स्थानीय तिथि	20/05/1980	-----

## ग्रह एवं राशि विवरण

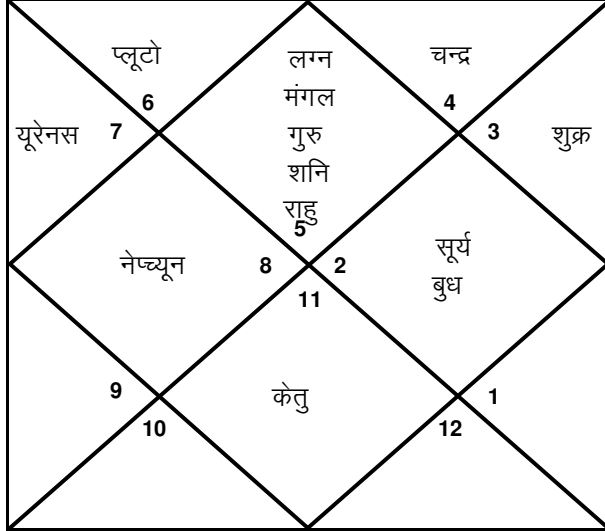
लग्न	सिंह	मेष
लग्नेश	सूर्य	मंगल
राशि	कर्क	सिंह
राशीश	चन्द्र	सूर्य
नक्षत्र	अश्लेषा	मघा
नक्षत्र स्वामी	बुध	केतु
चरण	1	2
पाया (चंद्र-नक्षत्र)	लोहा-चांदी	चांदी-चांदी
योग	वृद्धि	व्याघात
करण	गर	विष्टि
गण	राक्षस	राक्षस
योनि	बिलाव	मूषक
नाड़ी	अन्त्य	अन्त्य
वर्ण	ब्राह्मण	क्षत्रिय
वश्य	जलचर	वनचर
वर्ग	श्वान	मूषक
नामाक्षर	डी	मी
युंजा	मध्य	मध्य
हंसक तत्व	जल	अग्नि

वर्षफल की गणनाएं सूर्य के गोचरीय अंश पर आधारित हैं ।

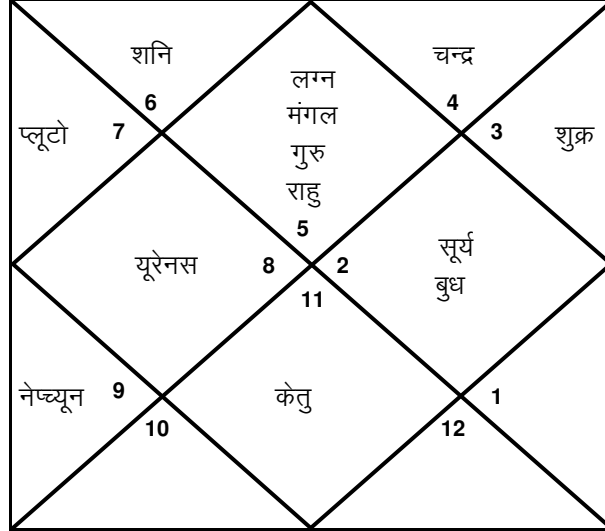
# जन्म के समय ग्रहों की स्थिति

ग्रह	राशि	अंश	स्थिति	राशीश	नक्षत्र	चरण	स्वामी	उपस्वामी
लग्न	सिंह	10 08 23		सूर्य	मघा	4	केतु	शनि
सूर्य	वृष	05 49 47	शत्रु	शुक्र	कृतिका	3	सूर्य	बुध
चन्द्र	कर्क	18 51 25	स्वग्रही	चन्द्र	अश्लेषा	1	बुध	केतु
मंगल	सिंह	11 44 21	मित्र	सूर्य	मघा	4	केतु	बुध
बुध	वृष	14 08 07	अस्त मित्र	शुक्र	रोहिणी	2	चन्द्र	गुरु
गुरु	सिंह	07 31 01	मित्र	सूर्य	मघा	3	केतु	राहु
शुक्र	मिथुन	08 36 31	मित्र	बुध	आरद्रा	1	राहु	राहु
शनि (व)	सिंह	26 37 03	शत्रु	सूर्य	पू फाल्गुनी	4	शुक्र	केतु
राहु (व)	सिंह	00 33 03	शत्रु	सूर्य	मघा	1	केतु	केतु
केतु (व)	कुम्भ	00 33 03	शत्रु	शनि	धनिष्ठा	3	मंगल	बुध

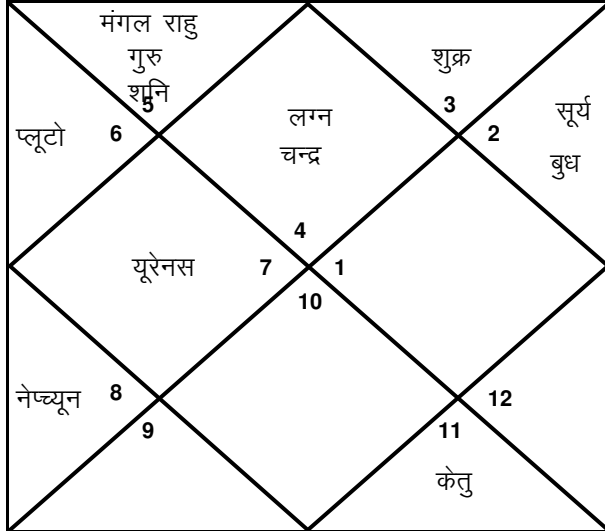
जन्म लग्न



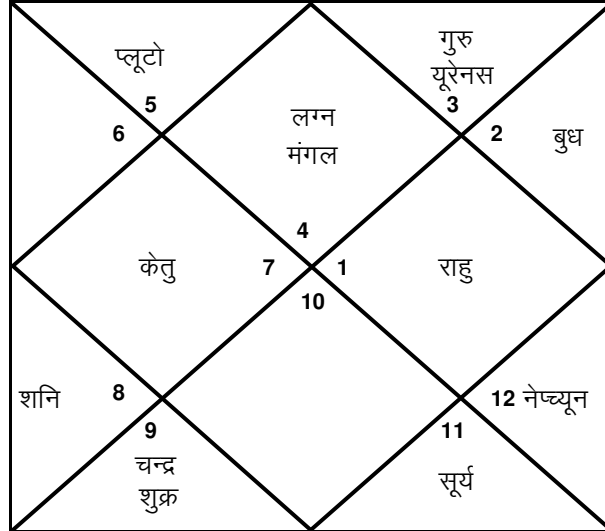
चलित



चन्द्र लग्न



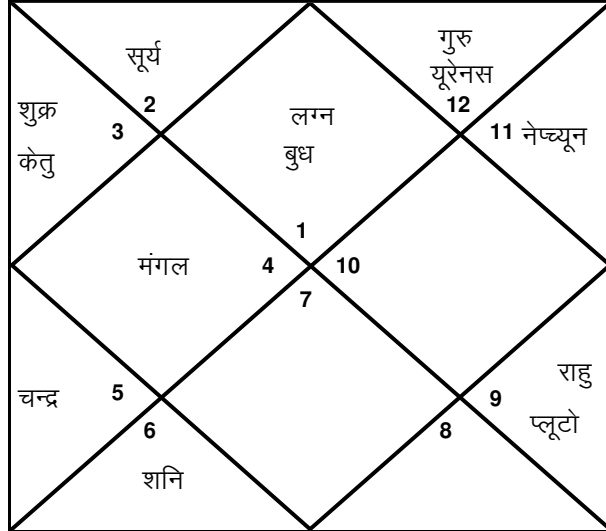
नवमांश



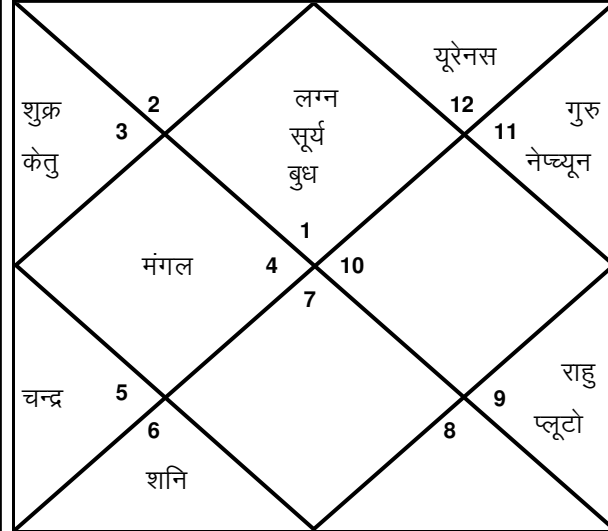
# वर्षफल वर्ष 2010 – 2011

ग्रह	राशि	अंश	स्थिति	राशीश	नक्षत्र	चरण	स्वामी	उपस्वामी
लग्न	मेष	26 13 48		मंगल	भरणी	4	शुक्र	केतु
सूर्य	वृष	05 49 44	शत्रु	शुक्र	कृत्तिका	3	सूर्य	बुध
चन्द्र	सिंह	05 41 37	मित्र	सूर्य	मघा	2	केतु	राहु
मंगल	कर्क	27 21 14	नीच	चन्द्र	अश्लेषा	4	बुध	गुरु
बुध	मेष	11 42 25	सम	मंगल	अश्विनी	4	केतु	बुध
गुरु	मीन	03 29 48	मु.त्रि.	गुरु	उ भाद्रपद	1	शनि	शनि
शुक्र	मिथुन	07 06 37	मित्र	बुध	आरद्रा	1	राहु	राहु
शनि (व)	कन्या	03 54 26	मित्र	बुध	उ फाल्गुनी	3	सूर्य	शनि
राहु (व)	धनु	18 46 21	सम	गुरु	पूर्वाषाढा	2	शुक्र	राहु
केतु (व)	मिथुन	18 46 21	सम	बुध	आरद्रा	4	राहु	चन्द्र

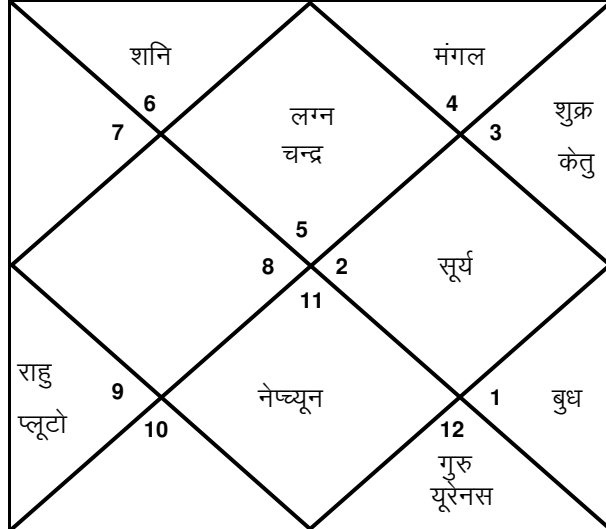
## वर्ष लग्न



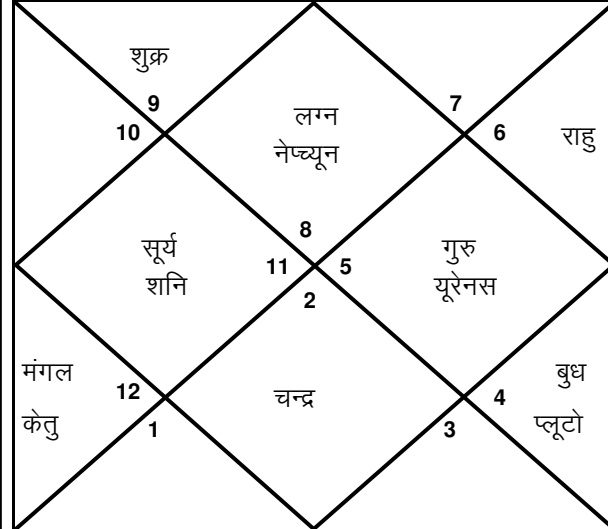
## चलित



## चन्द्र लग्न



## नवमांश





## हर्ष बल

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
प्रथम बल	0	0	0	5	0	0	0
द्वितीय बल	0	0	0	0	5	0	0
तृतीय बल	0	0	5	5	5	5	0
चतुर्थ बल	0	5	0	5	0	5	5
कुल	0	5	5	15	10	10	5

## पंचवर्गीय बल

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
ग्रह बल	15.00	07.50	15.00	07.50	30.00	22.50	15.00
उच्च बल	17.13	09.70	00.07	02.97	06.50	12.21	14.88
हद्या बल	07.50	07.50	11.25	11.25	03.75	15.00	07.50
द्रेष्काण बल	05.00	05.00	05.00	05.00	02.50	02.50	07.50
नवांश बल	03.75	03.75	03.75	03.75	03.75	01.25	05.00
कुल	12.10	08.36	08.77	07.62	11.63	13.37	12.47

## पंचाधिकारी

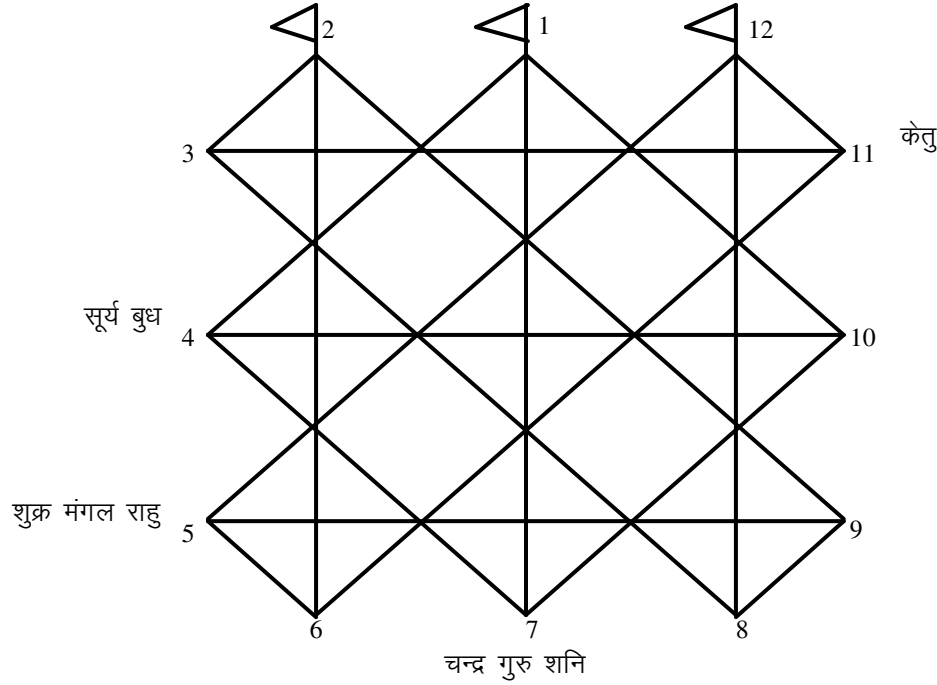
स्वामित्व	ग्रह	बलाबल
मुन्थेश	शनि	12.47
जन्म लग्नेश	सूर्य	12.10
वर्ष लग्नेश	मंगल	08.77
त्रिराशिपति	गुरु	11.63
दिनरात्रिपति	सूर्य	12.10

## वर्षेश व मुन्था

वर्षेश	:	मंगल
मुन्था—राशि	:	कुम्भ
मुन्था—भाव	:	11
मुन्थेश	:	शनि
मुन्थेश— भाव	:	6

वर्षफल वर्ष 2010 – 2011

सहम	राशि	अंश	सहम स्वामी
पुण्य	मकर	26:21:55	शनि
गुरु	सिंह	26:05:41	सूर्य
प्रसूति	कर्क	04:26:25	चन्द्र
यश	मीन	19:05:55	गुरु
मित्र	धनु	07:22:51	गुरु
माहात्म्य	तुला	27:13:07	शुक्र
आशा	मकर	29:25:59	शनि
पिता	धनु	28:09:06	गुरु
माता	कुम्भ	27:38:48	शनि
जीवित	वृश्चिक	25:49:10	मंगल
कर्म	कुम्भ	10:34:59	शनि
कलि	कन्या	20:05:14	बुध
शास्त्र	तुला	12:07:03	शुक्र
बंधक	कुम्भ	02:14:36	शनि
जाडय	मिथुन	18:15:37	बुध
शत्रु	कर्क	02:47:00	चन्द्र
बंधन	धनु	03:46:19	गुरु
समर्थता	मेष	26:13:48	मंगल
कामदेव	मेष	17:53:25	मंगल
गौरव	तुला	12:49:30	शुक्र
कार्यसिद्धि	सिंह	05:19:26	सूर्य
अश्व	वृष	25:45:21	शुक्र
भ्राता	वृश्चिक	25:49:10	मंगल
पुत्र	धनु	24:01:59	गुरु
रोग	मकर	16:45:59	शनि
बन्धु	कुम्भ	02:14:36	शनि
मृत्यु	धनु	19:28:29	गुरु
अर्थ	मेष	10:22:51	मंगल
परस्त्री	मिथुन	27:30:41	बुध
वणिक	सिंह	20:13:00	सूर्य
विवाह	मकर	29:25:59	शनि
संताप	वृश्चिक	19:28:29	मंगल
श्रद्धा	मीन	05:59:11	गुरु
प्रीति	वृश्चिक	25:57:34	मंगल
व्यापार	सिंह	11:52:37	सूर्य
कन्या	कुम्भ	27:38:48	शनि
परदेश	कुम्भ	09:01:32	शनि
अपमृत्यु	कन्या	20:08:14	बुध
लाभ	कुम्भ	05:24:43	शनि
जलपथ	धनु	10:39:47	गुरु



## त्रिपताकि चक्र में वेध

लग्न	सूर्य चन्द्र बुध गुरु शनि	बुध	सूर्य चन्द्र गुरु शनि
सूर्य	चन्द्र बुध गुरु शनि	गुरु	सूर्य चन्द्र बुध शनि
चन्द्र	सूर्य बुध गुरु शनि	शुक्र	मंगल राहु
मंगल	शुक्र राहु	शनि	सूर्य चन्द्र बुध गुरु

## विभिन्न ग्रहो द्वारा चन्द्र वेध का फल

**सूर्य :** धन के अपव्यय से कष्ट, बुखार, मन में अस्थिरता, चिंता से परेशानी, रक्त सम्बन्धी रोग और असफलता प्राप्त होती हैं ।

**चन्द्र :** चित्त में बेचैनी, शत्रु भय, व्याकुलता, मन उदास, रक्त विकार, चोट-चपेट और झगड़े होते रहते हैं ।

**मंगल :** व्यापार में वृद्धि, भाईयों से वाद-विवाद, कुटुम्ब में कलह, शत्रु से भय या हानि के बावजूद धन प्राप्ति हाती है ।

**बुध :** अकस्मात धन लाभ, तीर्थ यात्रा, विवाद में विजय, शुभ कार्य में धन का खर्च और मांगलिक कार्य होते हैं ।

**गुरु :** वासना बढ़ना, शत्रु पर विजय, आमदनी में वृद्धि, विद्या प्राप्ति, जल से अरिष्ट और परीक्षा में सफलता हासिल होती हैं ।

**शुक्र :** वायु विकार आदि से रोग, मानहानी, नीच लोगों का संग, अपनों से विश्वासघात और धन हानि हाती हैं ।

**शनि :** असफलता, कठनाईयाँ, अनेक रोग एवं शरीर-पीडा, कीर्ति-क्षय, बुरे विचार और कष्ट प्राप्त होते हैं ।

**राहु :** अस्वस्थता, उदासी, दुःख एवं चिन्ता, उदर व्याधि, मलिन चित्त और अपयश हासिल होता हैं ।

वर्ष लग्न में आपका मुन्था भाव नम्बर 11 में है।

प्रतिष्ठा, ख्याति, सम्मान तथा आर्थिक दृष्टि से यह बहुत अच्छा समय है। सारी शारीरिक सुख सुविधाएँ भोगेंगे, सुखी रहेंगे व नए मित्र बनाएँगे। राजनैतिक सफलताएँ प्राप्त करेंगे और इच्छाओं की पूर्ति होगी।

21/05/2010—08/06/2010 में आप सूर्य वर्ष दशा के प्रभाव में रहेंगे।

सूर्य वर्ष लग्न में भाव नम्बर 2 में है।

घरेलु जीवन सुखद नहीं रहेगा तथा उस पर बहुत ध्यान देना पड़ेगा। यद्यपि आपकी शारीरिक तनाव और बोझ सहने की अच्छी क्षमता है लेकिन परिवार के झंझटों के कारण क्षमता से अधिक कष्ट भोगना पड़ सकता है। भारी आर्थिक हानियाँ होंगी और सम्पत्ति का क्षय होगा। धन सम्बन्धी मामलों में काफी सचेत रहने की आवश्यकता है। आँखों और मुँह की बीमारी से ग्रसित हो सकते हैं।

08/06/2010—08/07/2010 में आप चन्द्र वर्ष दशा के प्रभाव में रहेंगे।

चन्द्र वर्ष लग्न में भाव नम्बर 5 में है।

यह वह समय है जब आपकी योजनाएँ सफलीभूत होंगी। अपनी सृजनात्मक बुद्धि के कारण आप सफल होंगे। प्रणय एवं प्रेम सम्बन्धों के लिहाज से भी यह अच्छा समय है। आपकी सारी जरूरतें पूर्ण करने के लिए मित्र तत्पर रहेंगे। अगर आपकी पत्नी गर्भवती है तो प्रसव निर्विघ्न संपन्न होगा। आपके लेखन की लोग सराहना करेंगे।

08/07/2010—30/07/2010 में आप मंगल वर्ष दशा के प्रभाव में रहेंगे।

मंगल वर्ष लग्न में भाव नम्बर 4 में है।

इस अवधि में आप मानसिक तनावों और खिंचावों से ग्रसित रहेंगे। सुख अचल सम्पत्ति, वाहन सुख एवं स्त्रियों तथा मित्रों के साथ से वंचित रहेंगे। आर्थिक रूप से यह समय अच्छा नहीं है। इसलिए व्यय भी अधिक होगा। कुछ गुप्त गतिविधियों के लिए भी खर्च करना पड़ेगा। अचानक हानि होने की भी सम्भावना है।

30/07/2010–22/09/2010 में आप राहु वर्ष दशा के प्रभाव में रहेंगे।

राहु वर्ष लग्न में भाव नम्बर 9 में है।

इस अवधि में आपको मिले जुले फल मिलेंगे। वैसे आप अपने व्यवसाय / व्यापार में अच्छा काम करेंगे। आप अपने लक्ष्य से भ्रमित नहीं होंगे और एक बार हाथ में लेने के बाद काम छोड़ेंगे नहीं। आपका निश्चय दृढ़ रहेगा लेकिन गुरुजनो और माता-पिता से सम्बन्ध बहुत अच्छे नहीं रहेंगे। कभी कभी आप तर्क बुद्धि से इतना काम लेंगे कि मामलों की तह तक ही न पहुँच पाएँगे। आपके व्यक्तित्व में अहंकार का प्रवेश हो जाएगा। आपके इस बर्ताव से आप जन-प्रिय नहीं रह पाएँगे। अपनी अन्तरदृष्टि से अपने आप को जाँचने परखने का प्रयत्न करें।

22/09/2010–10/11/2010 में आप गुरु वर्ष दशा के प्रभाव में रहेंगे।

गुरु वर्ष लग्न में भाव नम्बर 12 में है।

आपमें किसी के प्रति लगाव नहीं होगा और लोग आपके प्रति वैमनस्य का भाव रखेंगे। असुरक्षा की भावना से ग्रसित रहेंगे। फालतु के कामों में आप अपना समय और पैसा बर्बाद करेंगे। आपको दूसरों के लिए काम करना पड़ सकता है। खर्च बहुत होंगे। विरोधी आपको तनाव-ग्रस्त रखेंगे। जहाँ तक सम्भव हो यात्राओं से आप बचें। स्वास्थ्य का ध्यान रखें नहीं तो समस्याएँ उठ खड़ी होंगी। परिवारजनों के बर्ताव में भी काफी फर्क रहेगा। यह अच्छा रहेगा कि विपरीत परिस्थितियों को झेलते समय आप अपने अंदर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करें।

10/11/2010–07/01/2011 में आप शनि वर्ष दशा के प्रभाव में रहेंगे।

शनि वर्ष लग्न में भाव नम्बर 6 में है।

आप अपने कार्य-क्षेत्र में बहुत अच्छा काम करेंगे। नौकरी या व्यवसाय की परिस्थितियों में काफी सुधार आएगा। प्रभावशाली व्यक्तियों से आपके सम्पर्क बढ़ेंगे। रोज-मर्रा के जीवन में आप अत्यधिक स्फूर्तिवान् महसूस करेंगे। विरोधियों की आपके सामने पड़ने की हिम्मत ही नहीं पड़ेगी। आर्थिक रूप से यह बहुत अच्छा समय सिद्ध होगा। छोटी यात्राएँ उपयोगी रहेंगी। परिवार का माहौल पूर्ण संतोषप्रद रहेगा। इस अवधि के मध्य में छोटी मोटी बीमारी

होने की सम्भावना है जिस पर आपको थोड़ा बहुत ध्यान रखने की आवश्यकता है।

07/01/2011–28/02/2011 में आप बुध वर्ष दशा के प्रभाव में रहेंगे।

बुध वर्ष लग्न में भाव नम्बर 1 में है।

इस अवधि में आप अति सुखी रहेंगे। अपनी प्रतिभा योग्यता और निपुणता के बल पर अच्छे परिणाम प्राप्त करेंगे। महत्वपूर्ण विद्वानों के सम्पर्क में आएँगे। आपका सम्मान होगा तथा ख्याति बढ़ेगी। पारिवारिक जीवन संतोषप्रद रहेगा। अपनी महत्वाकांक्षाएँ प्राप्त करने के लिए आप कड़ा प्रयत्न करेंगे। साधारण तौर पर आप सफल व्यक्ति समझे जाएँगे। यद्यपि काम का बोझ बहुत रहेगा और थकान होगी। आपकी पैनी समग्र दृष्टि आपको काफी फायदा पहुँचाएगी। स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा।

28/02/2011–21/03/2011 में आप केतु वर्ष दशा के प्रभाव में रहेंगे।

केतु वर्ष लग्न में भाव नम्बर 3 में है।

आप अपने काम बुद्धिमानी से नहीं निबटाएँगे। वैसे इस पूरी अवधि में आप आशावादी रहेंगे। संचार द्वारा प्राप्त समाचार से लाभान्वित होंगे। अचानक यात्रा करने से भी अच्छे फल निकलेंगे। आमदनी में इजाफा होगा। पारिवारिक जीवन पर राहतकारी प्रभाव पड़ेगा। अगर पदोन्नति होने वाली है तो जैसी आप चाहेंगे वैसी ही होगी। मित्र मंडली बढ़ेगी। दिमाग का अध्यात्म के प्रति झुकाव बढ़ेगा। वास्तव में यह आपके लिए एक सौभाग्यशाली समय है।

21/03/2011–21/05/2011 में आप शुक्र वर्ष दशा के प्रभाव में रहेंगे।

शुक्र वर्ष लग्न में भाव नम्बर 3 में है।

इस अवधि के दौरान आप अत्यधिक उत्साही और स्फूर्तिवान् रहेंगे। छोटी यात्राएँ सुखद एवं सफलदायक रहेंगी। पारिवारिक सुख कायम रहेगा और भाई-बहन भी खुशहाल और सुखी रहेंगे। आप तुरन्त निर्णय ले सकने की स्थिति में होंगे और वह निर्णय सही होंगे। इस दौरान आपके पास अपना वाहन होगा। लोगों से आपके सम्पर्क बढ़ेंगे। नौकरी के हालात में भी इजाफा होगा। सौभाग्यशाली समय होने के कारण मनचाहा काम होता रहेगा।

मूलांक	: 2
शुभ अंक	: 7
शुभ समय	: जून 20—जुलाई 27
शुभ दिन	: रविवार ,सोमवार और शुक्रवार
शुभ तारीख	: 2, 4, 7, 11, 20, 29 .
शुभ वर्ष	: 11, 13, 16, 20, 25, 29, 34, 38, 43, 47, 52, 56, 61, 65.
शुभ रंग	: हरा (हल्का या गहरा) सफेद, काले, गहरा लाल, जामनी, रंग से परहेज करें ।
शुभ रत्न	: मोती, गोदन्ता या चन्द्रकान्त मणि, हल्के हरे रत्न ।
स्वास्थ्य	: आप पेट से सम्बन्धित रोगों, रक्त विकारों तथा पांचन तंत्र के रोगों से कष्ट पा सकते हैं ।
व्यवसाय	: आप के लिए विद्युत, कम्प्यूटर, कपड़ा, कुटनीति, लेखपाल, फिल्मों से संबधित, रसायन, मृदु पेय, समुद्री जहाज इत्यादि कार्यो अधिक अनुकूल हो सकते हैं ।
त्रुटियाँ	: कुसंगति, दिवास्वप्न, सनकी पन, पलायन वादी ।

आप स्वभाव से प्रायः नम्र हैं और एक कल्पनाशील, कलाप्रेमी व्यक्ति हैं । हालांकि आप अपनी गलती को जल्दी मान लेते हैं फिर भी उन्हीं गलतियों को बार-बार दोराहते हैं । आपको अपने भीतर आत्म-विश्वास एवं आत्म-निर्णय की भावना में वृद्धि करना चाहिए । हालांकि आप आशावादी हैं फिर भी कभी-कभी आत्म-विश्वास हीनता की तरंगों में बह जाते हैं । आप बहुत जल्दी निराश और उदास हो जाते हैं । आप काव्य और संगीत के प्रेमी हैं । आपको अच्छे वस्त्र और सुगंधित पदार्थ आदि के प्रति लगाव है । आप शांतिपूर्ण सह अस्तित्व के सिद्धांत में विश्वास रखते हैं । जब कोई आपकी भावनाओं को ठेस पहुँचाता है तो आप ज्यादा मजबूती से उभर कर सामने आते हैं । आपका व्यक्तित्व आकर्षक है । आप विदेश यात्रा में रुचि रखते हैं । आप ज्यादातर कामों को दो बार करते हैं क्योंकि बहुत कम मौके ऐसे आए हैं जबकि आपका प्रथम प्रयास सफल हुआ हो । अतः आपको अपनी मेहनत का उचित प्रतिलाभ नहीं मिल पाता और अमुक कार्य पर ज्यादा धन और समय खर्च कर बैठते हैं । सेहत के लिहाज से आप पेट और पाचन सम्बन्धी समस्याओं से अक्सर परेशान रहते हैं । अतः आप खीरा, ककड़ी, खरबूजा, बंद गोबी और सलाद ज्यादा से ज्यादा खाएं । यह आप की सेहत के लिए लाभकारी सिद्ध होगा । जनवरी, फरवरी और जुलाई के महीनों के दौरान आप हृदय से ज्यादा मेहनत करके बीमार पड़ सकते हैं । आपकी मित्र-मंडली बहुत बड़ी है । आप लेखन-कार्य में रुचि रखते हैं और कल को आप एक महान लेखक भी बन सकते हैं । आप अपना ज्यादातर समय समाज-सेवा में बिताना चाहते हैं । आप के भीतर अपार धैर्य और प्रेम मौजूद है । आप अपने विपरीत लिंग के किसी धनी व्यक्ति के माध्यम से फलफूल सकते हैं । यदि आप कहीं पानी अथवा नदी के निकट रहे तो अत्यधिक सम्पन्नता से युक्त हो सकते हैं ।